

Government of Karnataka

मल्हार

कक्षा 7 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

Part - I

0771

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

Karnataka Textbook Society (R.)
6th Cross, Malleshwaram, Bangalore 560 003

0771 – मल्हार
कक्षा 7 के लिए हिंदी की पाठ्यपस्तक

ISBN 978-93-5729-957-2

प्रथम सस्करण
अप्रैल 2025 चैत्र 1947

PD 1000T M

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2025

80 जी.एस.एम. पेपर पर मद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 से प्रकाशित तथा रेयांशी इंटरप्राईजेज, खसरा न. 24/20, नंगली सकरावती, नज़फगढ़ इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110043 द्वारा मद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनमुति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पष्ठ पर मद्रित है। रबड़ की महर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108 ए 100 फीट रोड
हली एक्सटेंशन, होस्डेकरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कपस
निकट धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *एम. वी. श्रीनिवासन*

मुख्य संपादक : *बिज्ञान सुतार*

मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी) : *जहान लाल*

मुख्य व्यापार प्रबंधक : *अमिताभ कुमार*

सहायक संपादन : *मीनाक्षी*

उत्पादन अधिकारी : *सुनील शर्मा*

आवरण

बैनियन ट्री

चित्रांकन एव ले-आउट

जोएल गिल

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक परिवर्तनकारी पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संरचना की अनुशंसा करती है जिसके मूल में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और भारतीय ज्ञान परंपरा सन्निहित है। यह नीति विद्यार्थियों को इक्कीसवीं सदी की संभावनाओं और चुनौतियों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ने के लिए तैयार करती है। यह दूरदर्शी परिप्रेक्ष्य विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में सभी स्तरों और पाठ्यचर्या क्षेत्रों में समाहित है। बुनियादी और आरंभिक स्तर मानवीय अस्तित्व के पाँचों आयामों को स्पर्श करते हुए विद्यार्थियों की अंतर्निहित योग्यताओं के संपोषण के साथ पंचकोश उनके अधिगम प्रतिफलों की मध्य अवस्था में प्रगति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस प्रकार, मध्य स्तर कक्षा 6 से कक्षा 8 तक तीन वर्षों को समाहित करते हुए आरंभिक और माध्यमिक स्तरों के बीच एक सेतु का कार्य करता है।

मध्य स्तर पर इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्देश्य है— विद्यार्थियों को उन आवश्यक कौशलों में दक्ष करना जो बच्चों की विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करें और उन्हें आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार करें। मध्य स्तर पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के आधार पर विकसित बहुआयामी पाठ्यक्रम में ऐसे नौ विषय सम्मिलित किए गए हैं जो बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देते हैं। इसमें तीन भाषाओं (कम से कम दो भारतीय मूल की भाषाएँ) सहित विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा एवं कल्याण और व्यावसायिक शिक्षा सम्मिलित हैं।

ऐसी परिवर्तनकारी शिक्षण संस्कृति के लिए अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। इसे व्यावहारिक रूप देने के लिए विभिन्न विषयों की उपयुक्त पाठ्यपुस्तकें भी होनी चाहिए। पाठ्यसामग्री और पढ़ने-पढ़ाने के उपागमों के मध्य इन पाठ्यपुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी; ऐसी निर्णायक भूमिका जो बच्चों की जिज्ञासा और अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति के बीच एक विवेकपूर्ण संतुलन बनाएगी। कक्षा नियोजन और विषयों की पढ़ाई के मध्य उचित संतुलन बनाने के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण एवं तैयारी भी आवश्यक है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् निरंतर गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए एक प्रतिबद्ध संस्था है। पाठ्यपुस्तकों के निर्माण हेतु संबंधित विषय विशेषज्ञों, शिक्षाशास्त्रियों और अध्यापकों को समितियों में सम्मिलित किया जाता है। कक्षा 7 के लिए निर्मित *मल्हार* पुस्तक में साहित्य की प्रमुख विधाएँ सम्मिलित हैं। इन विधाओं के अंतर्गत चयनित रचनाएँ देशप्रेम, पर्यावरण विज्ञान, कला, इतिहास, खेल और भारतीय समाज के अनुभवों का भाषिक चित्र प्रस्तुत करती हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की संस्तुतियों और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का अनुपालन करते हुए यह पाठ्यपुस्तक बच्चों में अवधारणात्मक समझ, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, आधारभूत मानवीय मूल्यों और प्रवृत्तियों के विकास पर समान बल देती है जो राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।



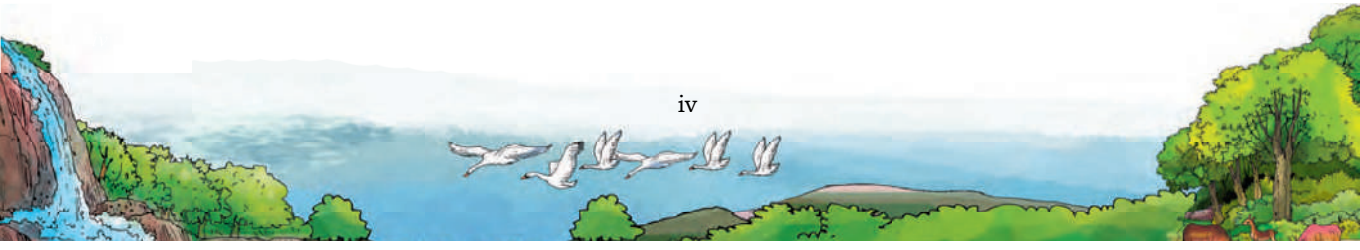
इस उद्देश्य के साथ ही समावेशन, बहुभाषिकता, जेंडर समानता और सांस्कृतिक जुड़ाव के साथ-साथ सूचना एवं प्रौद्योगिकी का उचित समन्वयन और स्कूल-आधारित समग्र मूल्यांकन आदि समस्त विषयों से संयोजित होने वाले क्षेत्रों को पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किया गया है। इसमें दी गई गतिविधियाँ और प्रश्न-अभ्यास विद्यार्थी स्वयं तथा सहपाठियों के साथ समूह में सीखेंगे। सहपाठियों के समूह में सीखना न केवल रोचक होता है, अपितु यह अत्यंत महत्वपूर्ण भी है, क्योंकि इससे बच्चों का बहुआयामी विकास होता है। इसके साथ ही सीखने की प्रक्रिया रोचक ही नहीं अपितु आनंदमय और सहज हो जाती है। इस बहुआयामी पाठ्यपुस्तक में दी गई सामग्री और गतिविधियाँ विद्यार्थी और शिक्षक दोनों को सृजनात्मक अनुभव से संपृक्त करने में सक्षम हैं।

इस पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त इस स्तर पर विद्यार्थियों को अन्य विभिन्न शिक्षण संसाधनों का पता लगाने हेतु भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ऐसे संसाधन उपलब्ध कराने में विद्यालय के पुस्तकालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके साथ ही विद्यार्थियों को ऐसा करने के लिए मार्गदर्शन और प्रोत्साहित करने में अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होगी।

मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी व्यक्तियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी हितधारकों की अपेक्षाओं को पूर्ण करेगी। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने हेतु वचनबद्ध है। हम आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करते हैं जो भावी संशोधनों में सहायक हो सकते हैं।

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
24 मार्च 2025



यह पुस्तक

संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया में भाषा का केंद्रीय स्थान है। भाषा की शिक्षा ही विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और मूल्यों का विकास करती है। किसी भी नागरिक से क्या-क्या अपेक्षाएँ होती हैं, इन्हें ध्यान में रखते हुए औपचारिक विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था के सभी चरणों में भाषा शिक्षण के मुख्य लक्ष्य इस तरह से रेखांकित किए जा सकते हैं— सृजनशीलता, ज्ञान परंपरा और प्रयोग, स्वतंत्र अध्येता एवं आलोचनात्मक चिंतन, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना, स्वास्थ्य एवं खुशहाली। भाषा की सृजनशीलता से आशय है कि विद्यार्थियों में भाषा के संवादधर्मी स्वरूप के रचनात्मक पक्ष के प्रति समझ बने और वे विभिन्न वैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक निर्मितियों के अनुरूप भाषा का सृजनशील प्रयोग कर सकें। विद्यार्थी अपनी बात को अपने ढंग से कह सकें, अपनी स्वाभाविक सृजनशीलता एवं कल्पना को पोषित कर सकें। ज्ञान-परंपरा और उसका वर्तमान संदर्भ में प्रयोग भाषा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। इसमें परंपरागत ज्ञान और उसका अभिनव प्रयोग सम्मिलित है जिससे विद्यार्थियों में अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं के प्रति विवेकपूर्ण सुरुचि पैदा हो सके। भाषा पढ़ने-पढ़ाने का लक्ष्य यह भी है कि विद्यार्थी स्वतंत्र अध्येता एवं आलोचनात्मक चिंतक बनें। साथ ही साथ, वर्तमान और अतीत की घटनाओं का तार्किक विश्लेषण कर सकें। विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना के विकास को ध्यान में रखते हुए परिवेशीय सजगता व आत्मीय संबद्धता का भाव पैदा हो, जो भारतीय सभ्यता और अस्मिता निर्माण की बहुविध रंगतों की सतत निर्मिति है। भाषा को समझने की क्षमता विकसित करना व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक, राष्ट्रीय मूल्यों का विकास करना भी है। स्वास्थ्य एवं खुशहाली से आशय है कि विद्यार्थी शारीरिक व मानसिक रूप से स्फूर्त हों, उनमें स्वस्थ दृष्टिकोण व आदतों का विकास हो और भावनात्मक एवं सामाजिक रूप से परिपक्वता आए। भाषा का सीखना-सिखाना सभी विषय क्षेत्रों के प्रति समझ बनाने के साथ-साथ शिक्षार्थी के भावात्मक, संज्ञानात्मक और सामाजिक स्वास्थ्य के लिए भी महत्वपूर्ण हो और वे भाषिक, प्राकृतिक व सामाजिक परिवेश, पर्यावरण, खेल, कला, विज्ञान, पर्यटन और नीति के प्रति सचेत हों।

कक्षा 7 की हिंदी पाठ्यपुस्तक *मल्हार* आपको सीखने-सिखाने की एक अनोखी और आनंददायक यात्रा पर ले जाने के लिए तैयार की गई है। यह पुस्तक आज के विद्यार्थियों, समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं, रुचियों और अपेक्षाओं को पूरा करने के उद्देश्य से विकसित की गई है। हमारे विद्यार्थी अपने आसपास के समाज, अपने महान राष्ट्र के गौरवशाली इतिहास और संस्कृति को समझ सकें। भारत की लोकतांत्रिकता, प्रेम, भाईचारे, पर्यावरण संरक्षण, जेंडर समानता, वसुधैव कुटुंबकम, शांति और सहिष्णुता की हजारों वर्ष पुरानी परंपराओं और विरासत को आगे बढ़ा सकें और अपने दैनिक जीवन में हिंदी का आत्मविश्वासपूर्वक उपयोग कर सकें, इसके लिए पुस्तक में पर्याप्त सामग्री दी गई है। सामग्री चयन में भारत के विभिन्न राज्यों, कलाओं, विविध परिवेशों का भी समावेशन किया गया है।



इस पुस्तक में हिंदी साहित्य की अनेक प्रसिद्ध रचनाओं को सम्मिलित किया गया है ताकि विद्यार्थी हिंदी साहित्य के गौरवशाली और समृद्ध इतिहास से परिचित हो सकें और एक जागरूक पाठक बनने की दिशा में अग्रसर हो सकें। कक्षा 7 के लिए निर्मित इस पुस्तक में साक्षात्कार विधा भी सम्मिलित की गई है। इस पुस्तक की रचना करते समय इस बात को ध्यान में रखा गया है कि यह आज के भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप सक्षम, आत्मविश्वास से पूर्ण और चिंतनशील नागरिक के निर्माण में सहायक हो सके।

इस पुस्तक का पूर्ण-क्षमताओं के साथ उपयोग करने के लिए अध्यापकों को इसके निम्नलिखित पक्षों के बारे में जान लेना उपयोगी रहेगा—

बहुभाषिकता हमारे देश की अनूठी विशेषता और ताकत है। इस पुस्तक में बहुभाषिकता के कई स्वरूप मिलेंगे— विभिन्न भाषाओं का समन्वय, भारतीय भाषाओं की एकात्मकता, विभिन्न साहित्यिक अभिव्यक्तियों या विषयों का समन्वय, हिंदी भाषा के भिन्न-भिन्न रूपों का समन्वय, अनुवाद में भाषाएँ आदि। अपेक्षा है कि पढ़ने-पढ़ाने के संदर्भ में बहुभाषिक स्रोतों या संदर्भों को एक ताकत और अवसर की तरह प्रयोग किया जा सके।

पुस्तक के चित्र रचनाओं को समृद्ध करने के दृष्टिकोण से दिए गए हैं। ये पाठ के संदर्भों को नए विस्तार और आयाम देते हैं तथा समझने-समझाने में आसान बनाते हैं। इन चित्रों पर बातचीत, लेखन और अन्य गतिविधियों के लिए सुझाव पुस्तक में यथास्थान दिए गए हैं। अपनी कल्पना का उपयोग करते हुए विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा स्वयं भी अनेक गतिविधियों की रचना की जा सकती है।

पुस्तक में संदर्भ में व्याकरण की स्तरानुकूल अवधारणाएँ सम्मिलित की गई हैं। भाषा संबंधी अवधारणाओं को और गहन स्तर पर समझने के अवसर इस पुस्तक में दिए गए हैं। यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि इस कक्षा-स्तर पर व्याकरण का उद्देश्य विद्यार्थियों को परिभाषाओं को याद करवाना न होकर उन्हें दैनिक जीवन में भाषा का प्रभावशाली उपयोग कर सकने में सक्षम बनाना है। विद्यार्थियों का भाषाई प्रयोगों पर ध्यान जाए, उनका शब्द-भंडार विकसित हो, वे विभिन्न उद्देश्यों के लिए अनुकूल और संगत भाषा का प्रयोग कर सकें, इसके लिए अनेक रोचक गतिविधियाँ पुस्तक में सम्मिलित की गई हैं।

पाठों को संवादात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है ताकि विद्यार्थी इस पुस्तक को एक साथी, मित्र और अनुभवी मार्गदर्शक के रूप में देख सकें। इसलिए यह पुस्तक अनेक स्थानों पर पाठकों से वार्तालाप करती हुई प्रतीत होती है। यह संवादात्मक शैली पुस्तक को सहज, सरल और उपयोगी बनाने में सहायक है। यही सहजता पुस्तक के अभ्यासों में भी दिखाई देती है।

मौलिक और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अवसर देते हुए पुस्तक के अनेक प्रश्नों में विद्यार्थियों को उनके अपने विचारों को बोलकर और लिखकर अभिव्यक्त करने के अवसर दिए गए हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि कक्षा में उनके विचारों को सम्मानपूर्वक सुना जाए। भले ही किसी विद्यार्थी के विचार सबसे अलग हों, फिर भी तर्कों और उदाहरणों द्वारा उसे उचित निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायता करना आवश्यक है।

पठन के तरीके को विस्तार देते हुए पुस्तक में दिए गए पाठ कई प्रकार के हैं। यह पुस्तक फिल्म, चित्रात्मक सूचना, पोस्टर, विज्ञापन आदि सभी को पढ़ने की ओर ध्यान दिलाती है। सभी के पढ़ने के अलग-अलग तरीके होते हैं। पठन विस्तार की दृष्टि से पुस्तकालय, वेबलिंक इत्यादि की ओर भी ध्यान दिलाया गया है।

पुस्तक में अनेक रोचक समावेशी गतिविधियाँ दी गई हैं। विद्यार्थियों को उनमें से कुछ गतिविधियों को अकेले करना होगा, कुछ को अपने समूह में और कुछ को पूरी कक्षा को मिलकर करना होगा। पुस्तक की अनेक गतिविधियों को करने के लिए विद्यार्थियों को अपने समूह के साथ चर्चा करनी होगी। इसके लिए आवश्यक है कि समय-समय पर कक्षा में विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएँ। एक समूह में चार से आठ विद्यार्थी सम्मिलित हो सकते हैं। यदि कक्षा में विशेष रूप से सक्षम (शारीरिक या मानसिक) विद्यार्थी हैं तो वे भी इन्हीं समूहों में होने चाहिए। अभ्यास को इस प्रकार निर्मित किया गया है कि सभी तरह के विद्यार्थी (चुनौतीपूर्ण सहित) उसे करने में सक्षम होंगे।

पुस्तक के प्रत्येक प्रश्न के साथ एक चित्रात्मक संकेत (आइकन) दिया गया है। इससे विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता मिलेगी कि उस प्रश्न में उन्हें क्या करना है— चर्चा करनी है, लिखना है, बोलकर उत्तर देना है या कोई गतिविधि करनी है। इसलिए सत्र के प्रारंभ में ही विद्यार्थियों को इन चित्र-संकेतों के अर्थ और उपयोग समझा दें।

हिंदी शब्दकोश का उपयोग करना एक महत्वपूर्ण कौशल है। इस कौशल के विकास के लिए पुस्तक के अंत में शब्दकोश दिया गया है। इसका उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी कक्षा 7 में भी हिंदी शब्दकोश का उपयोग करने के कौशल का विकास जारी रखें। इस शब्दकोश में पुस्तक के विभिन्न पाठों में आए ऐसे शब्दों को स्थान दिया गया है जो कक्षा 7 के अधिकांश बच्चों के लिए नए या अपरिचित हो सकते हैं। शब्दकोश के साथ हिंदी वर्णमाला और देवनागरी लिपि के भारतीय ब्रेल रूप 'भारती' को भी दिया गया है ताकि विद्यार्थी देवनागरी के ब्रेल रूप के प्रति जागरूक हो सकें।

पाठ की संरचना

पाठ— सबसे पहले पाठ का शीर्षक, पाठ संख्या और मूल पाठ दिया गया है। कहीं-कहीं निबंध या पाठों में आवश्यकतानुसार पाठ का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

रचनाकार से परिचय— रचना के अंत में रचनाकार का चार-पाँच पंक्तियों में स्तरानुरूप सरल और सरस सृजनात्मक परिचय दिया गया है। यह परिचय सूचनात्मक न होकर सृजनात्मक लेखन के उदाहरण हैं ताकि विद्यार्थियों को परिचय लेखन के विविध रूपों और सृजनात्मक लेखन का आनंद लेने के अवसर मिल सकें। यह परिचय लेखक की जीवनी न होकर उनके कृतित्व और व्यक्तित्व के किन्हीं विशेष पक्षों का रोचक वर्णन है। इस बात पर विशेष ध्यान दें कि यह परिचय विद्यार्थियों के औपचारिक (लिखित) आकलन की प्रक्रिया का अंग नहीं है।

गतिविधियाँ और अभ्यास— पाठ और रचनाकार के परिचय के बाद गतिविधियाँ और अभ्यास दिए गए हैं। इन्हें 'सीखने की प्रक्रिया' के अंग के रूप में दिया गया है। ये गतिविधियाँ 'सीखने का आकलन' न होकर 'सीखने के लिए आकलन' सिद्धांत पर आधारित हैं। इन गतिविधियों से विद्यार्थियों को पाठ को समझने में, उसे अपने जीवन और अनुभवों से जोड़ने में और अपनी भाषायी कुशलताओं को प्रखर करने में सहायता मिलेगी। इन अभ्यासों में अनेक स्थानों पर विद्यार्थियों के लिए संकेत भी दिए गए हैं जिनसे उन्हें चर्चा करने और अपने मौलिक उत्तरों तक पहुँचने में सहायता मिलेगी। यहाँ अनेक प्रश्न ऐसे हैं जिनके अनेक उत्तर हो सकते हैं, क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी के अनुभव और कल्पना अन्य विद्यार्थियों से भिन्न हो सकती है। अपेक्षा है कि आप मौलिक उत्तरों का कक्षा में स्वागत करें और कक्षा में उनकी सराहना की जाए।

मेरी समझ से— इस गतिविधि में विद्यार्थियों को दो-तीन बहुविकल्पी प्रश्नों को हल करने के अवसर दिए गए हैं। ये प्रश्न इस प्रकार तैयार किए गए हैं कि इनके उत्तर चुनने के लिए विद्यार्थियों को पूरे पाठ को समझने के अपने कौशलों के प्रयोग करने के अवसर मिल सकें। हो सकता है कि किसी प्रश्न के लिए विद्यार्थी अपनी समझ से अलग-अलग विकल्प चुन लें। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को अपने उत्तर को चुनने के कारण स्पष्ट करने के लिए कहा गया है ताकि उनकी मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल, तर्क करने, उदाहरण देने, सुनने और उसका विश्लेषण करने जैसे महत्वपूर्ण भाषायी कौशलों का विकास हो सके। इस चर्चा के आधार पर विद्यार्थी एक सर्वसम्मत विकल्प के चयन तक पहुँचने में सक्षम हो सकेंगे।

मिलकर करें मिलान— प्रत्येक पाठ में कुछ ऐसे संदर्भ सम्मिलित रहते हैं जो उस पाठ को और समृद्ध बना देते हैं। उदाहरण के लिए, 'माँ, कह एक कहानी' कविता में गौतम बुद्ध तथा यशोधरा के संदर्भ आए हैं। यदि विद्यार्थी पाठ में आए ऐसे संदर्भों पर ध्यान दें तो वे पाठ को भली प्रकार समझ सकेंगे। इसलिए इस अभ्यास में पाठ में से चुनकर कुछ ऐसे शब्दों या शब्द-समूहों को दिया गया है जिनका अर्थ या संदर्भ जानना-समझना पाठ को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है। इनकी व्याख्या भी दी गई है। विद्यार्थियों को इन शब्दों को उनके संदर्भों से मिलान करना है। यह कार्य वे स्वयं, शिक्षकों, अभिभावकों, पुस्तकालय और इंटरनेट की सहायता से कर सकेंगे।

पंक्तियों पर चर्चा— इस गतिविधि में पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे इन पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और इन पर विचार करें। उन्हें इनका क्या अर्थ समझ में आया, उन्हें अपने विचार अपने समूह में साझा करने हैं और अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखना है। इस प्रकार इस गतिविधि में उन्हें सुनने, बोलने और लिखने-पढ़ने के भरपूर अवसर मिलेंगे।

सोच-विचार के लिए— इस गतिविधि में विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे पाठ पर आधारित बोध-प्रश्नों पर स्वयं सोच-विचार करेंगे और स्वतंत्र रूप से उनके उत्तर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिख सकेंगे। आवश्यकता होने पर इस कार्य में भी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन और सहयोग अपेक्षित है।

साहित्य की रचना— इस प्रश्न द्वारा विद्यार्थियों को साहित्य की विधा-विशेष की विशेषताओं और संरचनात्मक पहलुओं की ओर ध्यान देने का अवसर मिलेगा। हो सकता है, इसके लिए उन्हें पाठ को एक बार पुन: ध्यान से पढ़ने की आवश्यकता का अनुभव हो। उन्हें पाठ की जो बातें विशेष लगेंगी, उन्हें वे आपस में साझा करेंगे और लिखेंगे। इस प्रकार पूरी कक्षा की एक विस्तृत सूची तैयार हो जाएगी। उदाहरण के लिए, संभव है कि कविताओं में वे अलंकारों की शब्दावली या नामों के परिचय के बिना भी पहचान कर लें कि इस पंक्ति में तीन-चार शब्द एक ही अक्षर से शुरू हो रहे हैं। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए यहाँ इस गतिविधि में भी एक-दो उदाहरण दिए गए हैं।

अनुमान या कल्पना से— इस गतिविधि में पाठ से संबंधित ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जिनके उत्तर पाठ में सीधे-सीधे नहीं मिलेंगे। इनके उत्तर खोजने के लिए विद्यार्थियों को पाठ के संदर्भों, अपनी कल्पना और अनुमान का सहारा लेना होगा। ये प्रश्न विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति को विस्तार देने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होंगे।

शब्दों की बात— विद्यार्थियों का शब्द-भंडार बढ़ाना और भाषा और शब्दों का सार्थक उपयोग करने का कौशल विकसित करना भाषा शिक्षण के सबसे महत्वपूर्ण कौशलों में से एक है। इसी दृष्टिकोण से यहाँ शब्दों से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। यहाँ संदर्भगत व्याकरण की भी कुछ स्तरानुकूल अवधारणाएँ दी गई हैं। इन्हें करने के लिए विद्यार्थी शब्दकोश, अपने शिक्षकों और साथियों की सहायता भी ले सकते हैं।

आपकी बात— जब हम किसी साहित्यिक रचना को अपने जीवन से जोड़ पाते हैं तो वह भी हमारे जीवन और अनुभव संसार का अभिन्न अंग बन जाती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को इस प्रश्न के अंतर्गत पाठ के संदर्भों को अपने जीवन और अनुभवों से जोड़ने के अवसर दिए गए हैं। इन प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपने जीवन के अनुभवों को अभिव्यक्त करने के अवसर मिलेंगे और इससे उनका भाषा की कक्षा से जुड़ाव अधिक प्रबल हो सकेगा। यह प्रश्न मौखिक रूप से चर्चा और संवाद को कक्षा में स्थान देने की दिशा में एक और प्रभावशाली कदम है।

आज की पहेली— पहेलियाँ किसी भी भाषा के मौखिक एवं लिखित साहित्य का महत्वपूर्ण अंग होती हैं। ये समाज, संस्कृति और इतिहास का अभिन्न अंग होती हैं। पहेलियाँ बच्चों को भाषा का सार्थक संदर्भों में उपयोग करने के अद्‌भुत और रोचक अवसर देती हैं। भारत की प्रत्येक भाषा के पास पहेलियों की अनूठी धरोहर और सम्पदा उपलब्ध है। इसी सम्पदा को हमारे विद्यार्थियों तक पहुँचाने के दृष्टिकोण से प्रत्येक पाठ में एक अनोखी और रोचक पहेली को हल करने का अवसर विद्यार्थियों को दिया गया है। इससे उन्हें स्वयं भी पहेलियों की रचना करने, उन्हें बूझने और उनका आनंद उठाने के अनुभव प्राप्त हो सकेंगे।

झरोखे से— भाषा की पुस्तक विद्यार्थियों को साहित्य की झलक दिखाने का अपने आप में एक माध्यम है। यह झलक जितनी समृद्ध हो सके, उतना विद्यार्थियों के भाषाई विकास के लिए अच्छा होगा। भाषा की पाठ्यपुस्तक की कुछ सीमाएँ भी हैं। इसमें असीमित सामग्री को स्थान नहीं दिया जा सकता। इसी सीमा को कुछ असीम बनाने का प्रयास है 'झरोखे से'। यहाँ पाठ के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए कुछ ऐसी रचनाएँ दी गई हैं जो पाठ के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और समझ को और अधिक विस्तार दे सकेंगी। ये रचनाएँ ऐसे झरोखे हैं जिनसे झाँककर विद्यार्थी साहित्य की विशाल दुनिया का आनंद उठा सकेंगे। दूसरी ओर इन झरोखों के माध्यम से साहित्य, कक्षा और विद्यार्थियों के जीवन में प्रवेश पा सकेगा।

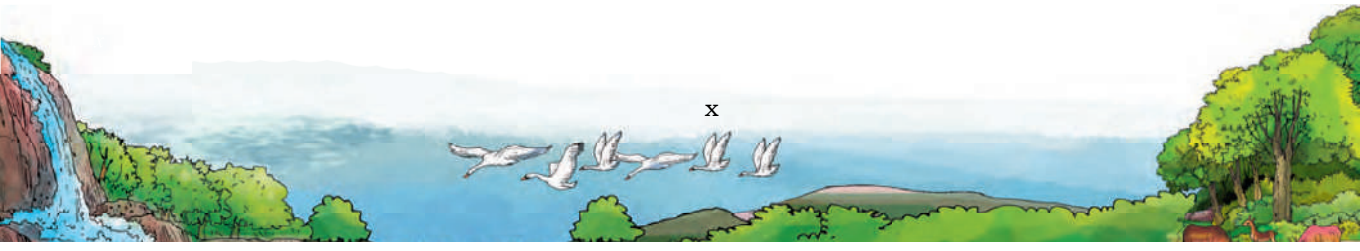
साझी समझ– झरोखे में दी गई रचनाओं को पढ़ने के बाद विद्यार्थी अवश्य ही उनके बारे में अपने विचार साझा करना चाहेंगे। गतिविधियों का भाग 'साझी समझ' यह अवसर देता है। इसके अंतर्गत 'झरोखे से' में दी गई रचनाओं के किसी विशेष पक्ष या पूरी रचना पर विद्यार्थी अपने-अपने समूह में चर्चा करेंगे और उसे कक्षा में सबके साथ साझा करेंगे।

खोजबीन के लिए— पाठों से जुड़ी कुछ सामग्री (ऑडियो, वीडियो या प्रिंट के रूप) के लिंक खोजबीन के लिए दिए गए हैं ताकि विद्यार्थियों के पठन का विस्तार हो सके और साथ ही रचनाओं के प्रति उनकी समझ समृद्ध हो।

पुस्तक को शिक्षण का आधार बनाते समय यह ध्यान देना होगा कि भाषा का परिदृश्य समय के साथ-साथ तीव्रता से बदल रहा है। भाषा के स्वरूप, उसके अध्ययन के उद्देश्य तथा शिक्षण के तौर-तरीकों से लेकर आकलन की पद्धतियों तक में नित नवीन परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए भाषा शिक्षण की पद्धतियों में नवीनता, विविधता व विस्तार लाने की आवश्यकता है। आज भाषा की कक्षा

केवल चहारदीवारी या पाठ्यपुस्तक तक ही सीमित नहीं रह गई है, बल्कि घर-परिवार, परिवेश, इंटरनेट और मीडिया के माध्यम से उसका विस्तार दूर तक हो चला है। सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं के संदर्भ में इस विस्तार को समझने तथा इसके विविध आयामों को एक-दूसरे से जोड़ने की आवश्यकता है। भाषा शिक्षण के संदर्भ में एक और महत्वपूर्ण बात यह भी है कि भाषा ज्ञान की सतत प्रक्रिया हमारे पूरे परिवेश (जिसमें घर, पास-पड़ोस, सामाजिक समुदाय तथा विद्यालय सभी सम्मिलित हैं) में चलती रहती है। यदि हम भाषा की कक्षा को बाहरी परिवेश में उपलब्ध सीखने के अवसरों से सीधे जोड़ सकें तो भाषा शिक्षण के लक्ष्यों को बखूबी प्राप्त किया जा सकता है।

संध्या सिंह
प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग एवं
सदस्य-समन्वयक, पाठ्यपुस्तक निर्माण समूह-हिंदी
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्



राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान **(अध्यक्ष)**

मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी **(सह-अध्यक्ष)**

सुधा मूर्ति, *प्रतिष्ठित लेखिका एवं शिक्षाविद*

बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

शेखर मांडे, *पूर्व महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं *प्रतिष्ठित प्रोफेसर*, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

सुजाता रामदोरई, *प्रोफेसर*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा

शंकर महादेवन, *संगीत विशेषज्ञ*, मुंबई

यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरू

मिशेल डैनिनो, *विजिटिंग प्रोफेसर*, आई.आई.टी., गांधीनगर

सुरीना राजन, *आई. ए. एस.* (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं पूर्व महानिदेशक, एच.पी.ए.

चमू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय

संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज, चेन्नई

गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

रेबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम

प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

दिनेश कुमार, *प्रोफेसर*, योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कीर्ति कपूर, *प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली **(सदस्य-सचिव)**

पाठ्यपुस्तक निर्माण समूह

अध्यक्ष

सुरेन्द्र दुबे, *उपाध्यक्ष*, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

सदस्य

अक्षय कुमार दीक्षित, *टी.जी.टी.* हिंदी, आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय, छतरपुर, नई दिल्ली

अनुराधा, *पी.जी.टी.* हिंदी (अवकाश प्राप्त), सरदार पटेल विद्यालय, नई दिल्ली

शारदा कुमारी, *प्राचार्य* (अवकाश प्राप्त), डी.आई.ई.टी., आर.के. पुरम, सेक्टर-7, नई दिल्ली

श्याम सिंह सुशील, *लेखक*, ए-13, दैनिक जनयुग अपार्टमेंट्स, वसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली

शिव शरण कौशिक, *प्रोफेसर* हिंदी (अवकाश प्राप्त), राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़, अलवर, राजस्थान

सरिता चौधरी, *असिस्टेंट प्रोफेसर* (डी.ई.पी.एफ.ई.) रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

साकेत बहुगुणा, *असिस्टेंट प्रोफेसर* (भाषा विज्ञान), केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

सुमन कुमार सिंह, *प्रधानाध्यापक*, गवर्मेंट सेकेण्डरी स्कूल कौड़िया, वसंती भगवानपुर हाट, सिवान, बिहार

सदस्य-समन्वयक

संध्या सिंह, *प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सदस्य सह-समन्वयक

नरेश कोहली, *एसोसिएट प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

आभार

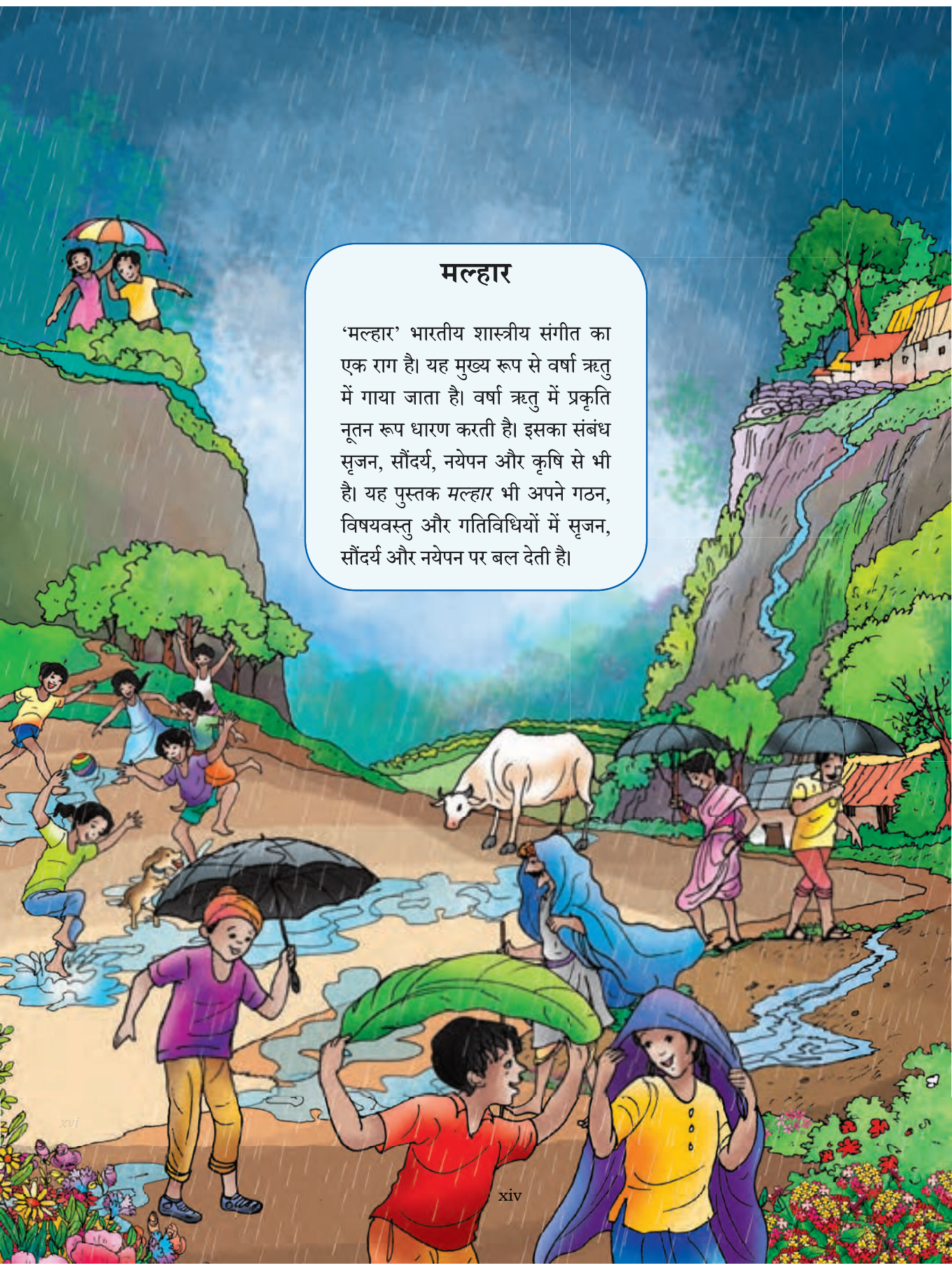
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों; पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (भाषा) के सभी सदस्यों तथा अन्य अंतःसंबंधी विषयों के लिए गठित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों के अध्यक्षों एवं सदस्यों के प्रति इस पुस्तक के निर्माण की प्रक्रिया में मार्गदर्शन एवं समीक्षा हेतु बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, *संयुक्त निदेशक*, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान; *अध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग; *अध्यक्ष*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग; *अध्यक्ष*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग; *अध्यक्ष*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग; *अध्यक्ष*, जेंडर अध्ययन विभाग; *अध्यक्ष*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग के साथ ही इन विभागों के सदस्यों का पाठ्यपुस्तक में अंतरानुशासनिक विषयों के अंत:संबंध को सुनिश्चित करने के लिए आभार व्यक्त करती है।

इस पुस्तक के निर्माण में जिन रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उनकी स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों, उनके परिजनों एवं उनसे संबद्ध प्रकाशकों के प्रति परिषद् अपना आभार व्यक्त करती है। 'बिरजू महाराज से साक्षात्कार' के लिए रत्न सागर प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली का बहुत-बहुत आभार।

परिषद्, स्वस्ति शर्मा, *परामर्शदाता,* कार्यक्रम कार्यालय, *एन.एस.टी.सी.*; सुनीत मिश्र, *वरिष्ठ शोध सहायक*; *कनिष्ठ परियोजना अध्येता* प्रिया, सत्यम सिंह, शुभम सिंह और अरुण कुमार; *प्रूफरीडर* सोनम सिंह; तकनीकी सहयोग हेतु *डी.टी.पी. ऑपरेटर* फरहीन फातिमा, सगीर अहमद और शारदा कुमारी का हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, इस पाठ्यपुस्तक के संपादन के लिए प्रकाशन प्रभाग में संविदा पर कार्यरत दिनेश वशिष्ट, *संपादक;* कहकशा, *सहायक संपादक*; अतुल कुमार गुप्ता, *सहायक संपादक* और प्रूफरीडिंग के लिए प्रियंका, *प्रूफरीडर*; अलका, *प्रूफरीडर*; राहिल अंसारी, *प्रूफरीडर*; आफरीन, *प्रूफरीडर* के प्रति आभार व्यक्त करती है और इस पुस्तक को प्रकाशन हेतु अंतिम रूप से तैयार करने के लिए पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; संविदा पर कार्यरत *डी.टी.पी. ऑपरेटर* मोहन सिंह, विवेक मंडल, पूनम डोबरियाल एवं अमजद हुसैन के प्रति भी आभार व्यक्त करती हैं।



मल्हार

'मल्हार' भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक राग है। यह मुख्य रूप से वर्षा ऋतु में गाया जाता है। वर्षा ऋतु में प्रकृति नूतन रूप धारण करती है। इसका संबंध सृजन, सौंदर्य, नयेपन और कृषि से भी है। यह पुस्तक *मल्हार* भी अपने गठन, विषयवस्तु और गतिविधियों में सृजन, सौंदर्य और नयेपन पर बल देती है।

विषय-क्रम

	आमुख		iii
	यह पुस्तक		v
	भाषा संगम *(बांग्ला कविता का हिंदी अनुवाद)*		xvi
1.	माँ, कह एक कहानी (कविता)	*मैथिलीशरण गुप्त*	1
2.	तीन बुद्धिमान (लोककथा)		14
3.	फूल और काँटा (कविता)	*अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'*	29
4.	पानी रे पानी (निबंध) विश्वेश्वरैया (पढ़ने के लिए)	*अनुपम मिश्र*	41
5.	नहीं होना बीमार (कहानी)	*स्वयं प्रकाश*	57
	शब्दकोश		73
	पहेलियों के उत्तर		80



फूलों का स्कूल

आकाश में बादल छा जाने पर
आषाढ़ में वर्षा होने पर
खेतों की मेड़ उलांघती गीली गीली पुरवाई आकर
बाँस-वन में शहनाई बजाती है,
न जाने सहसा कहाँ से
झुंड के झुंड फूल आकर नाचने लग जाते हैं
हरी घास पर
बड़ी उमंग से।

माँ, मुझे लगता है
इन फूलों का स्कूल शायद
कहीं लुकी छिपी जगह पर है, मिट्टी के नीचे
जहाँ दरवाजे बंद करके वे लोग
पढ़ाई की किताबें पढ़ते हैं और
समय होने से पहले
बारिश हुई तो उनके
स्कूल की छुट्टी हो जाती है।

जंगल में पेड़ों की टहनियाँ टकराती हैं
पागल हवा से पत्ते काँपते हैं
बारिश अपने विशाल हाथ ठोंककर
गड़गड़ाहट फैलाती है
और पीले, नारंगी, सफेद
रंगों की पोशाकें पहन
निकल आते हैं बच्चे।

मालूम है मुझे
किसके लिए नाच रहे हैं वे हाथ उठाए
क्योंकि उनकी भी माँ है
जैसी मेरी है माँ।

—रवींद्रनाथ टैगोर

1 माँ, कह एक कहानी

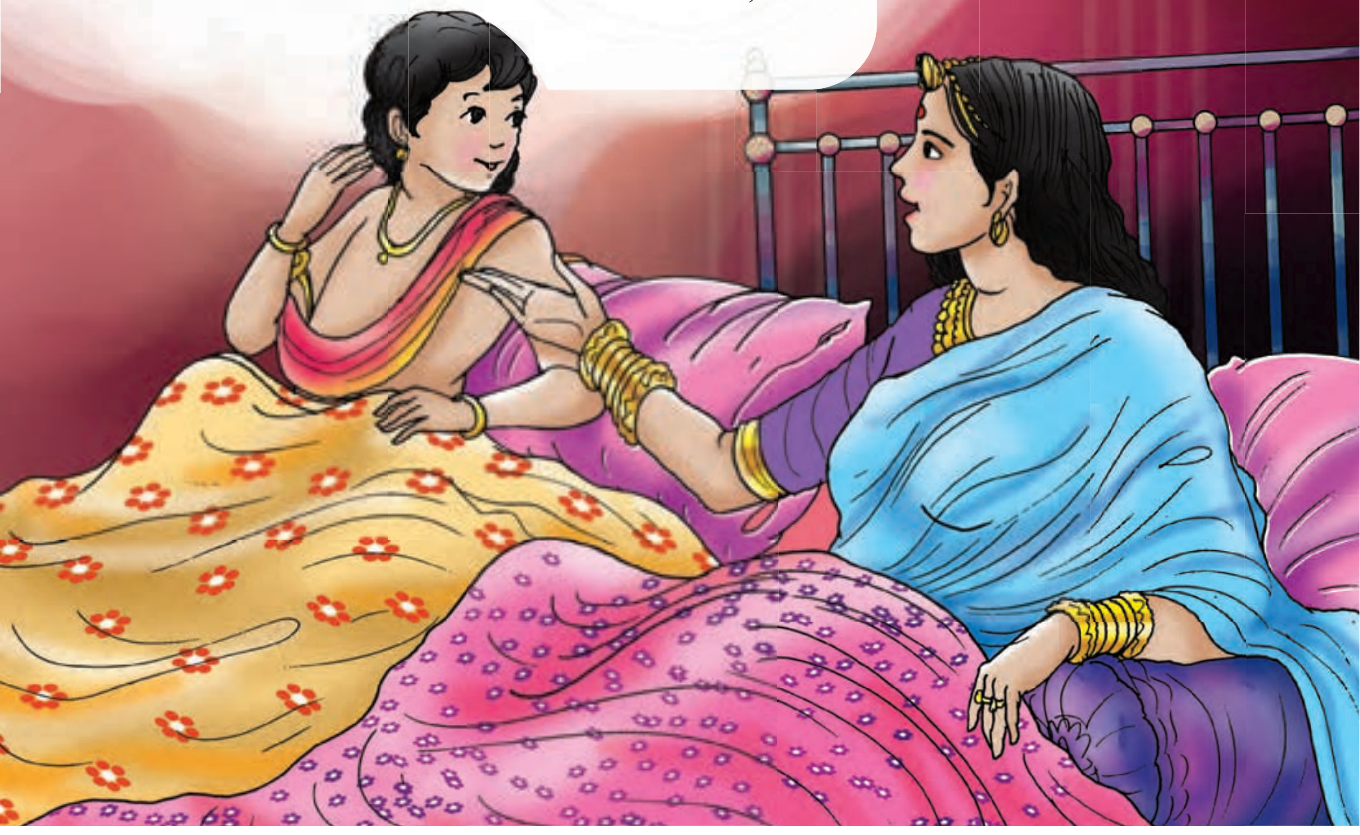


"माँ, कह एक कहानी।"
"बेटा, समझ लिया क्या तूने
मुझको अपनी नानी?"

"कहती है मुझसे यह चेटी,
तू मेरी नानी की बेटी!
कह माँ, कह, लेटी ही लेटी,

राजा था या रानी?
राजा था या रानी?
माँ, कह एक कहानी।"

"तू है हठी मानधन मेरे,
सुन, उपवन में बड़े सबेरे,
तात भ्रमण करते थे तेरे,





जहाँ, सुरभि मनमानी।"
"जहाँ सुरभि मनमानी?
हाँ, माँ, यही कहानी।"

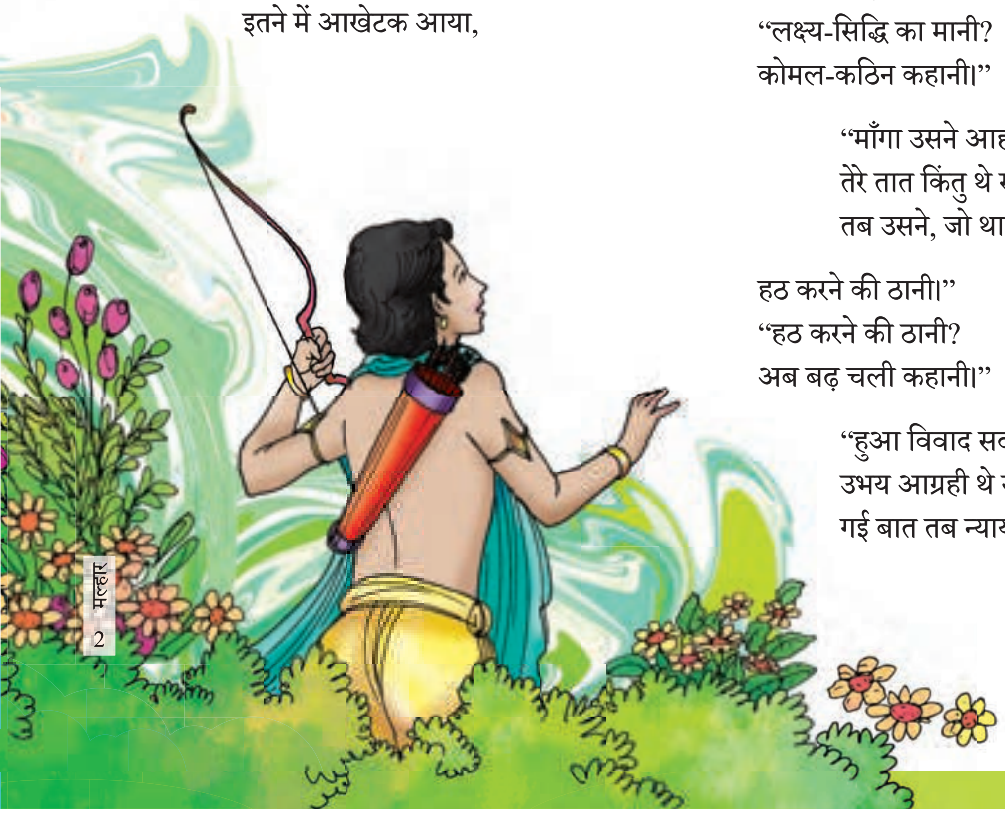
"वर्ण वर्ण के फूल खिले थे,
झलमल कर हिम-बिंदु झिले थे,
हलके झोंके हिले-मिले थे,

लहराता था पानी।"
"लहराता था पानी?
हाँ, हाँ, यही कहानी।"

"गाते थे खग कल कल स्वर से,
सहसा एक हंस ऊपर से,
गिरा, बिद्ध होकर खर-शर से,

हुई पक्ष की हानी!"
"हुई पक्ष की हानी?
करुणा-भरी कहानी!"

"चौंक उन्होंने उसे उठाया,
नया जन्म-सा उसने पाया।
इतने में आखेटक आया,



लक्ष्य-सिद्धि का मानी।"
"लक्ष्य-सिद्धि का मानी?
कोमल-कठिन कहानी।"

"माँगा उसने आहत पक्षी,
तेरे तात किंतु थे रक्षी।
तब उसने, जो था खगभक्षी–

हठ करने की ठानी।"
"हठ करने की ठानी?
अब बढ़ चली कहानी।"

"हुआ विवाद सदय-निर्दय में,
उभय आग्रही थे स्वविषय में,
गई बात तब न्यायालय में,



सुनी सभी ने जानी।"
"सुनी सभी ने जानी?
व्यापक हुई कहानी।"

"राहुल, तू निर्णय कर इसका–
न्याय पक्ष लेता है किसका?
कह दे निर्भय, जय हो जिसका।

सुन लूँ तेरी बानी।"
"माँ, मेरी क्या बानी?
मैं सुन रहा कहानी।

कोई निरपराध को मारे,
तो क्यों अन्य उसे न उबारे?
रक्षक पर भक्षक को वारे,

न्याय दया का दानी!"
"न्याय दया का दानी?
तूने गुनी कहानी।"

— *मैथिलीशरण गुप्त*

कवि से परिचय



(1886–1964)

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित कविता का यह अंश— 'माँ, कह एक कहानी' उनकी काव्य-कृति *यशोधरा* से लिया गया है। यह माँ यशोधरा और बेटे राहुल के बीच संवाद शैली में रचा गया है। मैथिलीशरण गुप्त का जन्म चिरगाँव, झाँसी (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। पंद्रह-सोलह वर्ष की आयु में ही वे कविता करने लगे थे। प्रारंभ में ब्रज भाषा में और फिर हिंदी में आजीवन लेखन कार्य करते रहे। स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी रचनाओं ने लोगों में देशप्रेम की भावना जगाने का काम किया। राष्ट्रकवि के रूप में इनकी ख्याति सर्वविदित है। इनकी अधिकांश कृतियों में भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय चेतना के स्वर हैं। *साकेत*, *भारत-भारती* और *यशोधरा* उनकी काव्य-कृतियाँ हैं।

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे सही उत्तर कौन-सा है? उनके सामने तारा (✦) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) माँ अपने बेटे को करुणा और न्याय की कहानी क्यों सुनाती है?

- राजाओं की कहानियों से उसका मनोरंजन करने के लिए।
- उसमें सही और गलत की समझ विकसित करने के लिए।
- उसे परिवार की विरासत और पूर्वजों के बारे में बताने के लिए।
- उसे प्रकृति और जानवरों के बारे में जानकारी देने के लिए।





(2) कविता में घायल पक्षी की कहानी का उपयोग किस लिए किया गया है?

- निर्दोष पक्षी के प्रति आखेटक की क्रूरता दिखाने के लिए।
- पिता की वीरता और साहस पर ध्यान दिलाने के लिए।
- करुणा और हिंसा के बीच के संघर्ष को दिखाने के लिए।
- मित्रता और निष्ठा के महत्व को उजागर करने के लिए।

(3) कविता के अंत तक पहुँचते-पहुँचते बच्चे को क्या समझ में आने लगता है?

- न्याय सदैव करुणा के साथ होना चाहिए।
- निर्णय लेते समय सदैव निडर रहना चाहिए।
- आखेटकों का सदैव विरोध करना चाहिए।
- जानवरों की हर स्थिति में रक्षा करनी चाहिए।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?





मिलकर करें मिलान

इस पाठ में आपने माँ और पुत्र के बीच की बातचीत को एक कविता के रूप में पढ़ा है। इस कविता में माँ अपने पुत्र को उसके पिता की एक कहानी सुना रही हैं। क्या आप जानते हैं कि ये माँ, पुत्र और पिता कौन हैं? अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और उन्हें पहचानकर सुमेलित कीजिए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

पात्र	ये शब्द किनके लिए आए हैं
1. बेटा	1. यशोधरा, एक राजकुमारी, सिद्धार्थ की पत्नी
2. माँ	2. सिद्धार्थ, एक राजकुमार जो बाद में गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए
3. तात (पिता)	3. सिद्धार्थ और यशोधरा के पुत्र राहुल



पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए—

(क) "कोई निरपराध को मारे,
तो क्यों अन्य उसे न उबारे?
रक्षक पर भक्षक को वारे,
न्याय दया का दानी!"

(ख) "हुआ विवाद सदय-निर्दय में,
उभय आग्रही थे स्वविषय में,
गई बात तब न्यायालय में,
सुनी सभी ने जानी।"



सोच-विचार के लिए

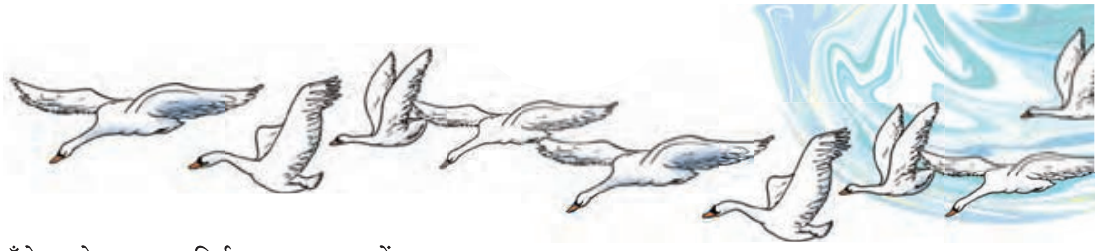
कविता को एक बार फिर से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) आपके विचार से इस कविता में कौन-सी पंक्ति सबसे महत्वपूर्ण है? आप उसे ही सबसे महत्वपूर्ण क्यों मानते हैं?

(ख) आखेटक और बच्चे के पिता के बीच तर्क-वितर्क क्यों हुआ था?







(ग) माँ ने पुत्र से "राहुल, तू निर्णय कर इसका" क्यों कहा?

(घ) यदि कहानी में आप उपवन में होते तो घायल हंस की सहायता के लिए क्या करते? आपके अनुसार न्याय कैसे किया जा सकता था?

(ङ) कविता में माँ और बेटे के बीच बातचीत से उनके बारे में क्या-क्या पता चलता है?

(संकेत — कविता पढ़कर आपके मन में माँ-बेटे के बारे में जो चित्र बनता है, जो भाव आते हैं या जो बातें पता चलती हैं, उन्हें भी लिख सकते हैं।)



अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) माँ ने अपने बेटे को कहानी सुनाते समय अंत में कहानी को स्वयं पूरा नहीं किया, बल्कि उसी से निर्णय करने के लिए कहा। यदि आप किसी को यह कहानी सुना रहे होते तो कहानी को आगे कैसे बढ़ाते?

(ख) मान लीजिए कि कहानी में हंस और तीर चलाने वाले के बीच बातचीत हो रही है। कल्पना से बताइए कि जब उसने हंस को तीर से घायल किया तो उसमें और हंस में क्या-क्या बातचीत हुई होगी? उन्होंने एक-दूसरे को क्या-क्या तर्क दिए होंगे?

(ग) मान लीजिए कि माँ ने जो कहानी सुनाई है, आप भी उसके एक पात्र हैं। आप कौन-सा पात्र बनना चाहेंगे? और क्यों?

- तीर चलाने वाला
- पक्षी
- पक्षी को बचाने वाला व्यक्ति
- न्यायाधीश
- कोई अन्य पात्र जो आप कहानी में जोड़ना चाहें



संवाद

इस कविता में एक माँ और उसके पुत्र का संवाद दिया गया है लेकिन कौन-सा कथन किसने कहा है, यह नहीं बताया गया है। आप कविता में दिए गए संवादों को पहचानिए कि कौन-सा कथन किसने कहा है और उसे दिए गए उचित स्थान पर लिखिए। उदाहरण के लिए, माँ और पुत्र का एक-एक कथन दिया गया है।

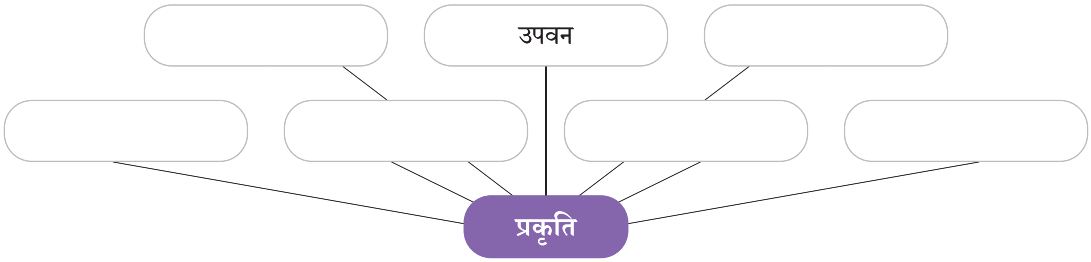




पुत्र द्वारा कहे गए कथन	माँ द्वारा कहे गए कथन
1. "माँ, कह एक कहानी।"	1. "बेटा, समझ लिया क्या तूने मुझको अपनी नानी?"

शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में प्रकृति से जुड़े शब्द कविता में से चुनकर लिखिए—









पंक्ति से पंक्ति

नीचे स्तंभ 1 और स्तंभ 2 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। मिलती-जुलती पंक्तियों को रेखा खींचकर मिलाइए—

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. कहती है मुझसे यह चेटी	1. दोनों ही अपनी-अपनी बात पर अड़े हुए थे।
2. तू है हठी मानधन मेरे	2. तू बिना डरे कह दे कि जीत किसकी होनी चाहिए।
3. झलमल कर हिम-विंदु झिले थे	3. दयालु और निर्दयी व्यक्ति में झगड़ा हुआ।
4. गिरा, बिद्ध होकर खर-शर से	4. न्याय में दया सम्मिलित होती है, न्याय मारने वाले के स्थान पर बचाने वाले का पक्ष लेता है।
5. हुआ विवाद सदय-निर्दय में	5. हिम-कण/ओस की बूँदें झिलमिला रही थीं।
6. कह दे निर्भय, जय हो जिसका।	6. तूने कहानी को समझ लिया है।
7. तूने गुनी कहानी।	7. यह सेविका मुझसे यह कहती है।
8. उभय आग्रही थे स्वविषय में	8. तेज धार वाले तीर से घायल होकर गिर गया।
9. तब उसने, जो था खगभक्षी– हठ करने की ठानी।	9. हे मेरे पुत्र, तू बहुत हठ करता है।
10. रक्षक पर भक्षक को वारे न्याय दया का दानी!	10. तब उस तीर चलाने वाले ने हठ करने का निश्चय कर लिया।



कविता की रचना

"राजा था या रानी?
राजा था या रानी?
माँ, कह एक कहानी।"

इन पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन पंक्तियों की तरह इस पूरी कविता में अनेक स्थानों पर कुछ पंक्तियाँ दो बार आई हैं। इस कारण कविता में पाठक को माँ-बेटे की बातचीत और अच्छी तरह समझ में आ जाती है। इससे कविता के सौंदर्य में भी वृद्धि हुई है।

आप ध्यान देंगे तो इस कविता में आपको ऐसी अनेक विशेषताएँ दिखाई देंगी (जैसे— कविता में माँ-बेटे का संवाद दिया गया है जिसे 'संवादात्मक शैली' कहते हैं; प्रकृति और कार्यों आदि का वर्णन किया गया है जिसे 'वर्णनात्मक शैली' कहा जाता है)।



(क) इस कविता को एक बार पुन: पढ़िए और अपने समूह में मिलकर इस कविता की विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

(ख) नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और वे पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें ये विशेषताएँ दिखाई देती हैं। विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए। आप कविता की पंक्तियों में एक से अधिक विशेषताएँ भी ढूँढ़ सकते हैं।

कविता की विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
1. संवाद दिए गए हैं।	1. हुआ विवाद सदय-निर्दय में
2. पंक्ति के अंतिम शब्द की ध्वनि आपस में मिलती-जुलती है।	2. हुई पक्ष की हानी।
3. कुछ शब्द दो बार और साथ-साथ आए हैं।	3. बेटा, समझ लिया क्या तूने मुझको अपनी नानी? कहती है मुझसे यह चेटी, तू मेरी नानी की बेटी!
4. कुछ विपरीतार्थक शब्द साथ-साथ आए हैं।	4. तू है हठी मानधन मेरे, सुन, उपवन में बड़े सबेरे
5. प्रकृति का वर्णन किया गया है।	5. कोमल-कठिन कहानी।
6. एक ही वर्ण से शुरू होने वाले एक से अधिक शब्द एक ही पंक्ति में आए हैं।	6. वर्ण वर्ण के फूल खिले थे, झलमल कर हिम-विंदु झिले थे, हलके झोंके हिले-मिले थे, लहराता था पानी।
7. प्रश्न-उत्तर दिए गए हैं।	
8. शब्द की वर्तनी बदलकर उपयोग किया गया है।	



रूप बदलकर

"सुन, उपवन में बड़े सबेरे,
तात भ्रमण करते थे तेरे,"

कविता की इन पंक्तियों को निम्न प्रकार से बदलकर लिखा जा सकता है—

"सुनो! आपके पिता एक उपवन में बहुत सवेरे भ्रमण किया करते थे... "

अब आप भी पाठ के किसी एक पद को एक अनुच्छेद के रूप में लिखिए।



कविता में विराम चिह्न



"माँ, कह एक कहानी।"

इस पंक्ति में आपको अनेक विराम चिह्न दिखाई दे रहे हैं, जैसे—

- अल्प विराम (,)
- पूर्ण विराम (।)
- उद्धरण चिह्न (" ")

इस कविता में विराम चिह्नों का बहुत अच्छा प्रयोग किया गया है। विराम चिह्न इस कविता में अनेक कार्य कर रहे हैं, जैसे यह बताना कि—

- कविता पाठ करते समय कहाँ थोड़ा रुकना है (,), कहाँ अधिक रुकना है (।)
- कौन सी पंक्ति किसने कही है? पुत्र ने या माँ ने (" ")
- कहाँ प्रश्न पूछा गया है (?)
- कौन-सी बात आश्चर्य से बोली गई है (!)

(क) नीचे कविता का एक अंश बिना विराम चिह्नों के दिया गया है। इसमें उपयुक्त स्थानों पर विराम चिह्न लगाइए—



राहुल तू निर्णय कर इसका–
न्याय पक्ष लेता है किसका
कह दे निर्भय जय हो जिसका
सुन लूँ तेरी बानी
माँ मेरी क्या बानी
मैं सुन रहा कहानी
कोई निरपराध को मारे
तो क्यों अन्य उसे न उबारे
रक्षक पर भक्षक को वारे
न्याय दया का दानी
न्याय दया का दानी
तूने गुनी कहानी



(ख) अब विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए कविता को अपने समूह में सुनाइए।



पाठ से आगे



आपकी बात

(क) "सुन, उपवन में बड़े सबेरे,
तात भ्रमण करते थे तेरे,"

आप या आपके परिजन भ्रमण के लिए कहाँ-कहाँ जाते हैं? और क्यों?

(ख) इस पाठ में एक माँ अपने पुत्र को कहानी सुना रही है। आप किस-किस से कहानी सुनते हैं या थे? आप किसको और कौन-सी कहानी सुनाते हैं?

(ग) माँ ने कहानी सुनाने के बीच में एक प्रश्न पूछ लिया था। क्या कहानी सुनाने के बीच में प्रश्न पूछना सही है? क्यों?

(घ) कविता में बालक अपनी माँ से बार-बार 'वही' कहानी सुनने की हठ करता है। क्या आपका भी कभी कोई कहानी बार-बार सुनने का मन करता है? अगर हाँ, तो वह कौन-सी कहानी है और क्यों?

निर्णय करें

"राहुल, तू निर्णय कर इसका–"

नीचे कुछ स्थितियाँ दी गई हैं। बताइए कि इन स्थितियों में आप क्या करेंगे?

1. खेलते समय आप देखते हैं कि एक मित्र ने भूल से एक नियम तोड़ा है।
2. एक सहपाठी को कक्षा में दूसरों द्वारा चिढ़ाया जा रहा है।
3. एक समूह परियोजना के बीच एक सहपाठी अपने भाग का कार्य नहीं कर रहा है।
4. आपके दो मित्रों के बीच एक छोटी-सी बात पर तर्क-वितर्क हो रहा है।
5. एक सहपाठी को कुछ ऐसा करने के लिए अनुचित रूप से दंडित किया जा रहा है जिसे उसने नहीं किया।
6. एक सहपाठी प्रतियोगिता में हार जाने पर उदास है।
7. कक्षा में चर्चा के बीच एक सहपाठी संकोच कर रहा है और बोलने का अवसर नहीं पा रहा है।
8. सहपाठी किसी विषय में संघर्ष कर रहा है और आपसे सहायता माँगता है।





सुनी कहानी

हमारे देश और विश्व में अनेक कहानियाँ लोग एक-दूसरे को सैकड़ों-हजारों सालों से सुनते-सुनाते रहे हैं। इन कहानियों को लोककथाएँ कहते हैं। अपने घर या आस-पास सुनी-सुनाई जाने वाली किसी लोककथा को लिखकर कक्षा में सुनाइए। आपने जिस भाषा में लोककथा सुनी है या जिस भाषा में आप लोककथा लिखना चाहें, लिख सकते हैं। कक्षा के सभी समूहों द्वारा एकत्रित लोककथाओं को जोड़कर एक पुस्तिका बनाइए और कक्षा के पुस्तकालय में उसे सम्मिलित कीजिए।



आज की पहेली

नीचे कुछ पहेलियाँ दी गई हैं। इनके उत्तर आपको कविता में से मिल जाएँगे। पहेलियाँ बूझिए—

पहेली 1

नानी की बेटी है कौन?
मामा की बहना है कौन?
भार्या है पिता की कौन?
भाभी है चाचा की कौन?

पहेली 2

आसमान में उड़-उड़ जाए,
तरह-तरह के गाने गाए,
पर फैलाकर करता सैर,
दो हैं जिसके पर और पैर।



पहेली 3

बागों में जो सुगंध फैलाती,
फूल-फूल में बसती गाती,
हवा-हवा में घुल-मिल जाए,
कौन है जो यह नाम बताए?









खोजबीन के लिए

- माँ, कह एक कहानी
  https://www.youtube.com/watch?v=nQUltEEDx4s&ab_channel=NCERTOFFICIAL
- हंस किसका
  https://www.youtube.com/watch?v=O6Jnj49jMGc&ab_channel=NCERTOFFICIAL
- मैथिलीशरण गुप्त द्वारा एक कविता का पाठ
  https://www.youtube.com/watch?v=sIWB9ZasRNY&t=126s&ab_channel=PrasarBharatiArchives



2 तीन बुद्धिमान



एक समय की बात है कि एक निर्धन व्यक्ति के तीन बेटे थे। वह प्राय: अपने बेटों से कहता— "मेरे बेटो! हमारे पास न तो रुपया-पैसा है और न ही सोना-चाँदी। इसलिए तुम्हें एक दूसरे प्रकार का धन संचित करना चाहिए— हर वस्तु और स्थिति को पूर्णत: समझने और जानने का प्रयास करो। कुछ भी तुम्हारी दृष्टि से न बच पाए। रुपये-पैसे के स्थान पर तुम्हारे पास पैनी दृष्टि होगी और सोने-चाँदी के स्थान पर तीव्र बुद्धि होगी। ऐसा धन संचित कर लेने पर तुम्हें कभी किसी प्रकार की कमी न रहेगी और तुम दूसरों की तुलना में उन्नीस नहीं रहोगे।"

समय बीता और कुछ समय पश्चात् पिता चल बसे। बेटे मिलकर बैठे, उन्होंने सारी स्थिति पर विचार किया और फिर बोले— "हमारे लिए यहाँ कुछ भी तो करने को नहीं। आओ, घूम फिरकर जगत देखें। आवश्यकता होने पर हम चरवाहों या खेत में श्रमिकों का काम कर लेंगे। हम कहीं भी क्यों न हों, भूखे नहीं मरेंगे।"

अंतत: वे तैयार होकर यात्रा पर चल दिए।

उन्होंने सुनसान-वीरान घाटियाँ लाँघीं और ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों को पार किया। इस तरह वे लगातार चालीस दिनों तक चलते रहे।

उनके पास जितना खाने-पीने का सामान था, अब तक समाप्त हो गया था। वे थककर चूर हो गए थे और उनके पैरों में छाले पड़ गए थे किंतु सड़क थी कि समाप्त होने को नहीं आ रही थी। वे आराम करने के लिए रुके और पुन: आगे चल दिए। अंत में उन्हें अपने सामने वृक्ष और मकान दिखाई दिए— वे एक बड़े नगर के पास पहुँच गए थे।

तीनों भाई बहुत प्रसन्न हुए और शीघ्रता से पग बढ़ाने लगे।

जब वे नगर के बिलकुल निकट पहुँच गए तो सबसे बड़ा भाई अचानक रुका, उसने धरती पर दृष्टि डाली और बोला—

"थोड़ी ही देर पहले यहाँ से एक बहुत बड़ा ऊँट गया है।"

वे थोड़ा और आगे गए तो मझला भाई रुका और सड़क के दोनों ओर देखकर बोला—

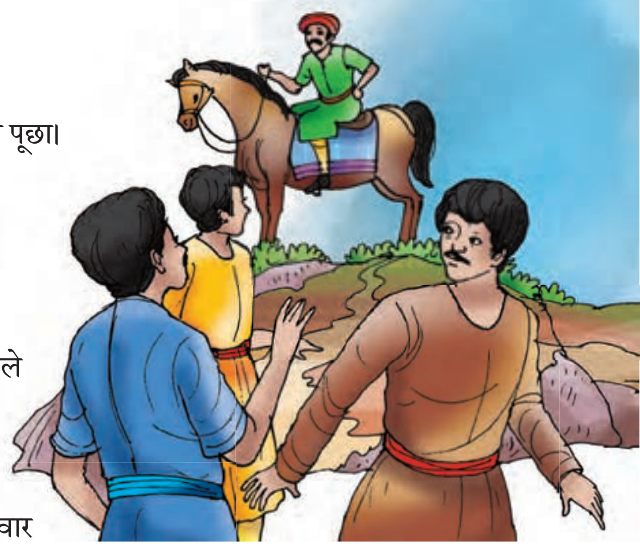
"संभवत: वह ऊँट एक आँख से नहीं देख पाता हो।"

वे कुछ और आगे गए तो सबसे छोटे भाई ने कहा—

"ऊँट पर एक महिला और एक बच्चा सवार थे।"

"बिलकुल सही!" दोनों बड़े भाइयों ने कहा और वे तीनों फिर आगे बढ़ चले। कुछ समय पश्चात् एक घुड़सवार उनके पास से निकला। सबसे बड़े भाई ने उसकी ओर देखकर पूछा—

"घुड़सवार, तुम किसी खोई हुई वस्तु को ढूँढ़ रहे हो न?" घुड़सवार ने घोड़ा रोककर उत्तर दिया—



"हाँ।"

"तुम्हारा ऊँट खो गया है न?" सबसे बड़े भाई ने पूछा।

"हाँ।"

"बहुत बड़ा-सा?"

"हाँ।"

"वह एक आँख से नहीं देख पाता है न?" मझले भाई ने पूछा।

"हाँ।"

"एक छोटे-से बच्चे के साथ उस पर महिला सवार थी न?" सबसे छोटे भाई ने सवाल किया।

घुड़सवार ने तीनों भाइयों को शंका की दृष्टि से देखा और बोला—

"आह तो तुम्हारे पास है मेरा ऊँट! तुरंत बताओ, तुमने उसका क्या किया?

"हमने तुम्हारे ऊँट का मुँह तक नहीं देखा", भाइयों ने उत्तर दिया।

"तो तुम्हें उसके बारे में सभी बातें कैसे पता चलीं?"



"क्योंकि हम अपनी आँखों और बुद्धि से काम लेना जानते हैं", भाइयों ने उत्तर दिया। "शीघ्रता से उस दिशा में अपना घोड़ा दौड़ाओ। वहाँ तुम्हें तुम्हारा ऊँट मिल जाएगा।"

"नहीं", ऊँट के स्वामी ने उत्तर दिया, "मैं उस दिशा में नहीं जाऊँगा। मेरा ऊँट तुम्हारे पास है और तुम्हें ही उसे मुझे लौटाना पड़ेगा।"

"हमने तो तुम्हारे ऊँट को देखा तक नहीं", भाइयों ने चिंतित होते हुए कहा।

लेकिन घुड़सवार उनकी एक भी सुनने को तैयार नहीं था। उसने अपनी तलवार निकाल ली और उसे ज़ोर से घुमाते हुए तीनों भाइयों को अपने आगे-आगे चलने का आदेश दिया। इस प्रकार वह उन्हें सीधे अपने देश के राजा के भवन में ले गया। इन तीनों भाइयों को सुरक्षा कर्मियों को सौंपकर वह स्वयं राजा के पास गया।

"मैं अपने रेवड़ों को पहाड़ों पर लिए जा रहा था", उसने कहा, "और मेरी पत्नी मेरे छोटे-से बेटे के साथ एक बड़े-से ऊँट पर मेरे पीछे-पीछे आ रही थी। किसी कारण उनका ऊँट पीछे रह गया और वे रास्ते से भटक गए। मैं उन्हें ढूँढने गया तो मुझे रास्ते में तीन व्यक्ति मिले जो पैदल चले जा रहे थे। मुझे पूरा विश्वास है कि उन्होंने मेरा ऊँट चुराया है और मेरी पत्नी तथा बेटे को मार डाला है।"

"तुम ऐसा क्यों समझते हो?" जब वह व्यक्ति अपनी बात कह चुका तो राजा ने पूछा।

"इसलिए कि मैंने उन लोगों से इस संबंध में एक भी शब्द नहीं कहा था फिर भी उन्होंने मुझे यह बताया कि ऊँट बहुत बड़ा था और एक आँख से नहीं देख पाता था तथा उस पर एक महिला बच्चे के साथ सवार थी।"

राजा ने थोड़ी देर सोच-विचार किया और फिर बोला—

"जैसा कि तुम कहते हो तुम्हारे बताए बिना ही तुम्हारे ऊँट के विषय में उन्होंने सभी कुछ इतनी अच्छी तरह से बताया है तो अवश्य उन्होंने उसे चुराया होगा। जाओ, उन चोरों को यहाँ लाओ।"

ऊँट का स्वामी बाहर गया और तीनों भाइयों को साथ लेकर झटपट अंदर आया।

"चोरो, तुरंत बताओ!" राजा उन्हें धमकाते हुए बोला। "तुरंत उत्तर दो, तुमने इस आदमी का ऊँट कहाँ छिपाया है?"

"हम चोर नहीं हैं, हमने इसका ऊँट कभी नहीं देखा", भाइयों ने उत्तर दिया।

तब राजा बोला— "इस व्यक्ति के कुछ भी बताए बिना तुमने ऊँट के विषय में सब कुछ बिलकुल सही बता दिया। अब तुम यह कहने का कैसे साहस करते हो कि तुमने उसे नहीं चुराया?"

"महाराज, इसमें तो आश्चर्य की कोई बात नहीं है।" भाइयों ने उत्तर दिया। "बचपन से ही हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम कुछ भी अपनी दृष्टि से नहीं चूकने देते। हमने अपने परिवेश



को पैनी दृष्टि से देखने और बुद्धि से सोचने के प्रयास में बहुत समय लगाया है। इसीलिए ऊँट को देखे बिना ही हमने बता दिया कि वह कैसा है।"

राजा हँस दिया।

"किसी को भी देखे बिना ही उसके विषय में क्या इतना कुछ जानना संभव हो सकता है?" उसने पूछा।

"हाँ, संभव है", भाइयों ने उत्तर दिया।

"तो ठीक है, हम अभी तुम्हारी सच्चाई की जाँच कर लेंगे।"

राजा ने उसी समय अपने मंत्री को बुलाया और उसके कान में कुछ फुसफुसाया। मंत्री तुरंत महल के बाहर चला गया। लेकिन शीघ्र ही वह दो सेवकों के साथ लौटा जो एक बहुत बड़ी-सी पेटी लाए थे। दोनों ने पेटी को बहुत सावधानी से द्वार के पास ऐसे रख दिया कि वह राजा को दिखाई दे सके और स्वयं एक ओर हट गए। तीनों भाई दूर से खड़े उन्हें देखते रहे। उन्होंने इस बात को ध्यान से देखा कि पेटी कहाँ से और कैसे लाई गई थी और किस ढंग से रखी गई थी।

"हाँ, तो चोरों, हमें बताओ कि उस पेटी में क्या है?" राजा ने कहा।

"महाराज, हम तो पहले ही यह विनती कर चुके हैं कि हम चोर नहीं हैं", सबसे बड़े भाई ने कहा। "पर यदि आप चाहते हैं तो मैं आपको यह बता सकता हूँ कि उस पेटी में क्या है। उसमें कोई छोटी-सी गोल वस्तु है।"

"उसमें अनार है", मझला भाई बोला।

"हाँ, और वह अभी कच्चा है", सबसे छोटे भाई ने कहा।



यह सुनकर राजा ने पेटी को पास लाने का आदेश दिया। सेवकों ने तुरंत आदेश पूरा किया। राजा ने सेवकों से पेटी खोलने के लिए कहा। पेटी खुल जाने पर उसने उसमें झाँका। जब उसे उसमें कच्चा अनार दिखाई दिया तो उसके आश्चर्य की कोई सीमा न रही।

आश्चर्यचकित राजा ने अनार निकालकर वहाँ उपस्थित सभी लोगों को दिखाया। तब उसने ऊँट के मालिक से कहा—

"इन लोगों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ये चोर नहीं हैं। वास्तव में ये बहुत ही बुद्धिमान लोग हैं। तुम इनके बताए रास्ते पर जाकर अपने ऊँट को खोजो।"

राजा के महल में उस समय उपस्थित सभी लोगों के आश्चर्य का कोई ठिकाना न था। किंतु सबसे बढ़कर तो स्वयं राजा चकित था। उसने सभी तरह के अच्छे और स्वादिष्ट भोजन मँगवाए और लगा इन भाइयों की आवभगत करने।

"तुम लोग बिलकुल निर्दोष हो और जहाँ भी जाना चाहो जा सकते हो। किंतु जाने से पहले तुम मुझे सारी बात विस्तार के साथ बताओ। तुम्हें यह कैसे पता चला कि उस व्यक्ति का ऊँट खो गया है और तुमने यह कैसे जाना कि ऊँट कैसा था?"

सबसे बड़े भाई ने कहा—

"धूल पर उसके पैरों के चिह्नों से मुझे पता चला कि कोई बहुत बड़ा ऊँट वहाँ से गया है। जब मैंने अपने पास से जानेवाले घुड़सवार को अपने चारों ओर नजर दौड़ाते देखा तो उसी समय मेरी समझ में यह बात आ गई कि वह क्या खोज रहा है।"

"बहुत अच्छा!" राजा ने कहा। "अच्छा, अब यह बताओ कि तुम में से किसने इस घुड़सवार को यह बताया था कि उसका ऊँट एक ही आँख से देख पाता है? उसका तो सड़क पर चिह्न नहीं रहा होगा।"

"मैंने इस बात का अनुमान ऐसे लगाया कि सड़क के दायीं ओर की घास तो ऊँट ने चरी थी, मगर बायीं ओर की घास ज्यों की त्यों थी", मझले भाई ने उत्तर दिया।

"बहुत उत्तम!" राजा ने कहा, "तुम में से यह अनुमान किसने लगाया था कि उस पर बच्चे के साथ एक महिला सवार थी?"

"मैंने", सबसे छोटे भाई ने उत्तर दिया, "मैंने देखा कि एक स्थान पर ऊँट के घुटने टेककर बैठने के चिह्न बने हुए थे। उनके पास ही रेत पर एक महिला के जूतों के चिह्न दिखाई दिए। साथ ही छोटे-छोटे पैरों के चिह्न थे, जिससे मुझे पता चला कि महिला के साथ एक बच्चा भी था।"

"बहुत अच्छा! तुमने बिलकुल सही कहा है", राजा बोला— "लेकिन तुम लोगों को यह कैसे पता चला कि पेटी में एक कच्चा अनार है? यह बात तो मेरी समझ में बिलकुल नहीं आ रही।"





सबसे बड़े भाई ने कहा—

"जिस तरह दोनों व्यक्ति उसे उठाकर लाए थे, उससे बिलकुल स्पष्ट था कि वह थोड़ी भी भारी नहीं है। जब वे पेटी को रख रहे थे तो मुझे उसके अंदर किसी छोटी-सी गोल वस्तु के लुढ़कने की ध्वनि सुनाई दी।"

मझला भाई बोला—

"मैंने ऐसा अनुमान लगाया कि चूँकि पेटी उद्यान की ओर से लाई गई है और उसमें कोई छोटी-सी गोल वस्तु है तो वह अवश्य अनार ही होगा। कारण कि आपके महल के आसपास अनार के बहुत-से पेड़ लगे हुए हैं।"

"बहुत अच्छा!" राजा ने कहा और उसने सबसे छोटे भाई से पूछा—

"लेकिन तुम्हें यह कैसे पता चला कि अनार कच्चा है?"

"इस समय तक उद्यान में सभी अनार कच्चे हैं। यह तो आप स्वयं ही देख सकते हैं", उसने उत्तर दिया और खुली हुई खिड़की की ओर संकेत किया।

राजा ने बाहर देखा तो पाया कि उद्यान में लगे अनार के सभी वृक्षों पर कच्चे अनार लटक रहे थे।

राजा इन भाइयों की असाधारण पैनी दृष्टि और तीक्ष्ण बुद्धि से चकित रह गया।

"धन-संपत्ति या सांसारिक वस्तुओं की दृष्टि से तो तुम धनवान नहीं हो लेकिन तुम्हारे पास बुद्धि का बहुत बड़ा कोष है", उसने प्रशंसा करते हुए कहा और उन्हें अपने दरबार में रख लिया।

पाठ से



मेरी समझ से

(क) लोककथा के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) लोककथा में पिता ने अपने बेटों से 'धन संचय करने' को कहा। उनकी इस बात का क्या अर्थ हो सकता है?



- खेती-बारी करना और धन इकट्ठा करना
- पैनी दृष्टि और तीव्र बुद्धि का विकास करना
- ऊँट का व्यापार करना
- गाँव छोड़कर किसी नगर में जाकर बसना

(2) तीनों भाइयों ने अपने ज्ञान और बुद्धि का उपयोग करके ऊँट के बारे में बहुत-कुछ बता दिया। इससे क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

- बुद्धि का प्रयोग करके ऊँट के बारे में सब-कुछ बताया जा सकता है।
- समस्या को सुलझाने के लिए ध्यान से निरीक्षण करना महत्वपूर्ण है।
- किसी व्यक्ति का ज्ञान, बुद्धि और धन ही सबसे बड़ी ताकत है।
- ऊँट के बारे में जानने के लिए दूसरों पर भरोसा करना चाहिए।

(3) राजा ने भाइयों की बुद्धिमत्ता पर विश्वास क्यों किया?

- भाइयों ने अपनी बात को तर्क के साथ समझाया।
- राजा को ऊँट के स्वामी की बातों पर संदेह था।
- राजा ने स्वयं ऊँट और पेटी की जाँच कर ली थी।
- भाइयों ने राजा को अपनी बात में उलझा लिया था।







(4) लोककथा के पात्रों और घटनाओं के आधार पर, राजा के निर्णय के पीछे कौन-सा मूल्य छिपा है?

- दोषी को कड़ा से कड़ा दंड देना हर समस्या का सबसे बड़ा समाधान है।
- अच्छी तरह जाँच किए बिना किसी को दोषी नहीं ठहराना चाहिए।
- राजा की प्रत्येक बात और निर्णय को सदा सही माना जाना चाहिए।
- ऊँट की चोरी के निर्णय के लिए सेवक की बुद्धि का उपयोग करना चाहिए।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने भिन्न-भिन्न उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें।



पंक्तियों पर चर्चा



पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए—

(क) "रुपये-पैसे के स्थान पर तुम्हारे पास पैनी दृष्टि होगी और सोने-चाँदी के स्थान पर तीव्र बुद्धि होगी। ऐसा धन संचित कर लेने पर तुम्हें कभी किसी प्रकार की कमी न रहेगी और तुम दूसरों की तुलना में उन्नीस नहीं रहोगे।"

(ख) "हर वस्तु और स्थिति को पूर्णत: समझने और जानने का प्रयास करो। कुछ भी तुम्हारी दृष्टि से न बच पाए।"

(ग) "हमने अपने परिवेश को पैनी दृष्टि से देखने और बुद्धि से सोचने के प्रयास में बहुत समय लगाया है।"







मिलकर करें मिलान

इस लोककथा में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे स्तंभ 1 में दिए गए हैं। उनके भाव या अर्थ से मिलते-जुलते वाक्य स्तंभ 2 में दिए गए हैं। स्तंभ 1 के वाक्यों को स्तंभ 2 के उपयुक्त वाक्यों से सुमेलित कीजिए—

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. कुछ समय पश्चात् पिता चल बसे।	1. घोड़े पर सवार व्यक्ति ने तीनों भाइयों को अविश्वास से देखा।
2. हम कहीं भी क्यों न हों, भूखे नहीं मरेंगे।	2. थोड़े समय के बाद पिता का देहांत हो गया।
3. घुड़सवार ने तीनों भाइयों को शंका की दृष्टि से देखा।	3. लोग इतने अचंभित थे कि उनका आश्चर्य व्यक्त करना कठिन था।
4. बचपन से ही हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम कुछ भी अपनी दृष्टि से नहीं चूकने देते।	4. बचपन से ही हमें आदत हो गई है कि हम हर छोटी-बड़ी वस्तु पर ध्यान अवश्य देते हैं।
5. लोगों के आश्चर्य का कोई ठिकाना न था।	5. हम चाहे जहाँ भी हों, हमें खाने के लिए कुछ न कुछ मिल ही जाएगा।



सोच-विचार के लिए



लोककथा को एक बार फिर ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) तीनों भाइयों ने बिना ऊँट को देखे उसके विषय में कैसे बता दिया था?

(ख) आपके अनुसार इस लोककथा में सबसे अधिक महत्व किस बात को दिया गया है— तार्किक सोच, अवलोकन या सत्यवादिता? लोककथा के आधार पर समझाइए।

(ग) लोककथा में राजा ने पहले भाइयों पर संदेह किया लेकिन बाद में उन्हें निर्दोष माना। राजा की सोच क्यों बदल गई?

(घ) ऊँट के स्वामी ने भाइयों पर तुरंत संदेह क्यों किया? आपके विचार से उसे क्या करना चाहिए था जिससे उसे अपना ऊँट मिल जाता?

(ङ) पिता ने बेटों को "दूसरे प्रकार का धन" संचित करने की सलाह क्यों दी? इससे पिता के बारे में क्या-क्या पता चलता है?

(च) राजा ने भाइयों की परीक्षा लेने के लिए पेटी का उपयोग किया। इस परीक्षा से राजा के व्यक्तित्व और निर्णय शैली के बारे में क्या-क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(छ) आप इस लोककथा के भाइयों की किस विशेषता को अपनाना चाहेंगे और क्यों?



अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) यदि राजा ने बिना जाँच के भाइयों को दोषी ठहरा दिया होता तो इस लोककथा का क्या परिणाम होता?

(ख) यदि भाइयों ने अनार के बारे में सही अनुमान न लगाया होता तो लोककथा का अंत किस प्रकार होता? अपने विचार व्यक्त करें।

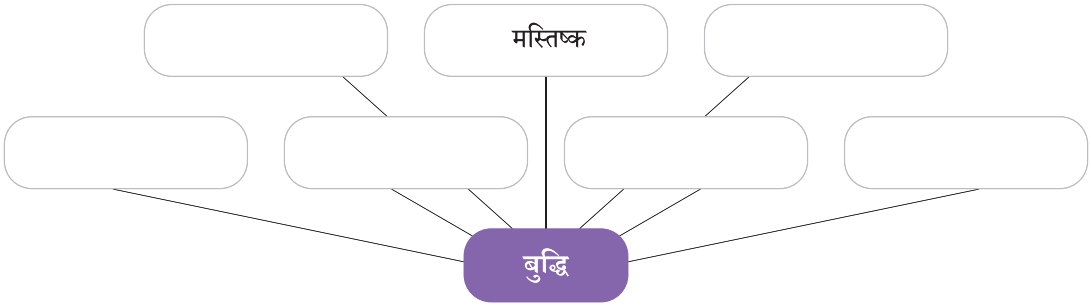
(ग) लोककथा में यदि तीनों भाई ऊँट को खोजने जाते तो उन्हें कौन-कौन सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता था?

(घ) यदि राजा के स्थान पर आप होते तो भाइयों की परीक्षा लेने के लिए किस प्रकार के सवाल या गतिविधियाँ करते? अपनी कल्पना साझा करें।



शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'बुद्धि' से जुड़े शब्द अपने समूह में चर्चा करके लिखिए—







लोककथा को सुनाना



लोककथा के लिखित रूप में आने से पहले कहानियों का प्रचलन मौखिक रूप में ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता था। इसमें कहानी सुनने-सुनाने और याद रखने की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। कहानी कहने या सुनाने वाला इस तरह से कहानी सुनाता था कि सुनने वालों को रोचक लगे। इसमें कहानी सुनने वालों को आनंद तो आता ही था, कथा उन्हें याद भी हो जाती थी।

अब आप अपने समूह के साथ मिलकर इस लोककथा को रोचक ढंग से सुनाइए। लोककथा को प्रभावशाली और रोचक रूप में सुनाने के लिए नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं जो लोककथा को और भी आकर्षक बना सकते हैं—

कथा सुनाना

- **स्वर में उतार-चढ़ाव**— लोककथा सुनाते समय स्वर में या आवाज में उतार-चढ़ाव से उत्साह और रहस्य का निर्माण करें। जब लोककथा में कोई रोमांचक या रहस्यमय पल हो तो स्वर धीमा या तीव्र कर सकते हैं।
- **भावनाओं की अभिव्यक्ति**— भावनाओं को प्रकट करने के लिए स्वर का सही चयन करें, जैसे— खुशी, दुख, आश्चर्य आदि को स्वर के माध्यम से दर्शाएँ।
- **लोककथा के पात्रों के लिए अलग-अलग स्वर**— जब लोककथा में अलग-अलग पात्र हों तो हर पात्र के लिए अलग स्वर (ऊँचा, नीचा, तेज, धीमा आदि) का उपयोग किया जा सकता है ताकि उन्हें पहचाना जा सके।
- **हाथों और शरीर का उपयोग**— जब आप लोककथा में किसी घटना का वर्णन करें तब शारीरिक मुद्राओं और चेहरे के भावों का उपयोग किया जा सकता है।
- **हास्य का प्रयोग**— जब कोई हास्यपूर्ण या आनंददायक दृश्य हो तो चेहरे की मुसकान और हँसी के साथ उसे प्रस्तुत करें।
- **विवरणात्मक भाषा का उपयोग**— लोककथा में वर्णित स्थानों और पात्रों को इस प्रकार प्रस्तुत करें कि श्रोता उनकी छवि अपने मन में बना सकें।
- **रोचक मोड़**— एक-दो बार लोककथा के रोमांचक मोड़ों पर थोड़ी देर के लिए रुकें या श्रोताओं में उत्सुकता होने दें, जैसे— "क्या आप जानना चाहते हैं कि आगे क्या हुआ?"
- **संवादों को स्पष्ट और प्रासंगिक बनाना**— पात्रों के संवाद इस तरह से प्रस्तुत करें कि वे मौलिक लगें।



कारक



नीचे दिए गए वाक्य को ध्यान से पढ़िए—

"भाइयों जवाब दिया।"



यह वाक्य कुछ अटपटा लग रहा है न? अब नीचे दिए गए वाक्य को पढ़िए—

"भाइयों ने जवाब दिया।"

इन दोनों वाक्यों में अंतर समझ में आया? बिलकुल सही पहचाना आपने! दूसरे वाक्य में 'ने' शब्द 'भाइयों' और 'जवाब दिया' के बीच संबंध को जोड़ रहा है। संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होने वाले शब्दों के ऐसे रूपों को कारक या परसर्ग कहते हैं। कारक शब्दों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं—

ने, को, पर, से, के द्वारा, का, में, के लिए, की, के, हे, हो, अरे

नीचे दिए गए वाक्यों में कारक लिखकर इन्हें पूरा कीजिए –

1. "हमने तो तुम्हारे ऊँट ____ देखा तक नहीं", भाइयों ____ परेशान होते हुए कहा।
2. "मैं अपने रेवड़ों ____ पहाड़ों ____ लिये जा रहा था", उसने कहा, "और मेरी पत्नी मेरे छोटे-से बेटे ____ साथ एक बड़े-से ऊँट ____ मेरे पीछे-पीछे आ रही थी।"
3. राजा ____ उसी समय अपने मंत्री ____ बुलाया और उसके कान ____ कुछ फुसफुसाया।
4. यह सुनकर राजा ____ पेटी ____ पास लाने ____ आदेश दिया। सेवकों ____ तुरंत आदेश पूरा किया। राजा ____ सेवकों ____ पेटी खोलने ____ लिए कहा।



सूचनापत्र

कल्पना कीजिए कि आप इस लोककथा के वह घुड़सवार हैं जिसका ऊँट खो गया है। आप अपने ऊँट को खोजने के लिए एक सूचना कागज पर लिखकर पूरे शहर में जगह-जगह चिपकाना चाहते हैं। अपनी कल्पना और लोककथा में दी गई जानकारी के आधार पर एक सूचनापत्र लिखिए।

सूचनापत्र



पाठ से आगे



आपकी बात

1. लोककथा में तीन भाइयों की पैनी दृष्टि की बात कही गई है। क्या आपने कभी अपनी पैनी दृष्टि का प्रयोग किसी समस्या को हल करने के लिए किया है? उस समस्या और आपके द्वारा दिए गए हल के विषय में लिखिए।

2. लोककथा में बताया गया है कि भाइयों ने "बचपन से हर वस्तु पर ध्यान देने की आदत डाली।" यदि आपने ऐसा किया है तो आपको अपने जीवन में इसके क्या-क्या लाभ मिलते हैं?

3. लोककथा में भाइयों को यात्रा करते समय अनेक कठिनाइयाँ आईं, जैसे— भूख, थकान और पैरों में छाले। आप अपने दैनिक जीवन में किन-किन कठिनाइयों का सामना करते हैं? लिखिए।

4. भाइयों ने बिना देखे ही ऊँट के बारे में सही-सही बातें बताईं। क्या आपको लगता है कि अनुभव और समझ से देखे बिना भी सही निर्णय लिया जा सकता है? क्या आपने भी कभी ऐसा किया है?

5. जब ऊँट के स्वामी ने भाइयों पर शंका की तो भाइयों ने बिना गुस्सा किए शांति से उत्तर दिया। क्या आपको लगता है कि कभी किसी को संदेह होने पर हमें भी शांत रहकर उत्तर देना चाहिए? क्या आपने कभी ऐसी स्थिति का सामना किया है? ऐसे में आपने क्या किया?

6. राजा ने भाइयों की बुद्धिमानी देखकर बहुत आश्चर्य व्यक्त किया। क्या आपको कभी किसी की सोच, समझ या किसी विशेष कौशल को देखकर आश्चर्य हुआ है? क्या आपने कभी किसी से कुछ ऐसा सीखा है जो आपके लिए बिलकुल नया और चौंकाने वाला हो?

7. लोककथा में पिता ने अपने बेटों को यह सलाह दी कि वे समझ और ज्ञान जमा करें। क्या आपको कभी किसी बड़े व्यक्ति से ऐसी कोई सलाह मिली है जो आपके जीवन में उपयोगी रही हो? क्या आप भी अपने अनुभव से किसी को ऐसी सलाह देंगे?

8. भाइयों ने अपने ऊपर लगे आरोपों के होते हुए भी सदा सच्चाई का साथ दिया। क्या आपको लगता है कि सदा सच बोलना महत्वपूर्ण है, भले ही स्थिति कठिन क्यों न हो? क्या आपको किसी समय ऐसा लगा है कि आपकी सच्चाई ने आपको समस्याओं से बाहर निकाला हो?

ध्यान से देखना-सुनना-अनुभव करना

"बचपन से ही हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम किसी वस्तु को अपनी दृष्टि से नहीं चूकने देते। हमने वस्तुओं को पैनी दृष्टि से देखने और बुद्धि से सोचने के प्रयास में बहुत समय लगाया है।"

इस लोककथा में तीनों भाई आसपास की प्रत्येक घटना, वस्तु आदि को ध्यान से देखते, सुनते, सूँघते और अनुभव करते हैं अर्थात् अपनी ज्ञानेंद्रियों और बुद्धि का पूरा उपयोग करते हैं। ज्ञानेंद्रियाँ पाँच होती हैं— आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा। आँख से देखकर, कान से सुनकर, नाक से सूँघकर, जीभ से चखकर और त्वचा

से स्पर्श करके हम किसी वस्तु के विषय में ज्ञान प्राप्त करते हैं। आइए, अब एक खेल खेलते हैं जिसमें आपको अपनी ज्ञानेंद्रियों और बुद्धि का उपयोग करने के अवसर मिलेंगे।

(क) 'हाँ' या 'नहीं' प्रश्न-उत्तर खेल

चरण—

1. एक विद्यार्थी कक्षा से बाहर जाकर दिखाई देने वाली किसी एक वस्तु या स्थान का नाम चुनेगा। कक्षा के भीतर से भी कोई नाम चुना जा सकता है।
2. विद्यार्थी वापस कक्षा में आएगा और उस नाम को एक कागज पर लिख लेगा। लेकिन ध्यान रहे, वह कागज पर लिखे नाम को किसी को न दिखाए।
3. अन्य विद्यार्थी बारी-बारी से उस वस्तु का नाम पता करने के लिए प्रश्न पूछेंगे।
4. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर केवल 'हाँ' या 'नहीं' में दिया जाएगा।

उदाहरण के लिए—

- क्या इस वस्तु का उपयोग कक्षा में होता है?
- क्या यह खाने-पीने की चीज है?
- क्या यह लकड़ी से बनी है?
- क्या यह बिजली से चलती है?



5. सभी विद्यार्थी अधिकतम 20 प्रश्न ही पूछ सकते हैं। इसलिए उन्हें सोच-समझकर प्रश्न पूछने होंगे ताकि वे उस वस्तु का नाम पता कर सकें।
6. यदि 20 प्रश्नों के अंदर विद्यार्थी वस्तु का सही अनुमान लगा लेते हैं तो वे जीत जाएँगे।
7. अब दूसरे विद्यार्थी को बाहर भेजकर गतिविधि दोहराएँगे।
8. गतिविधि के अंत में सभी मिलकर इस खेल से जुड़े अपने अनुभवों के बारे में चर्चा करें।

(ख) गतिविधि— 'स्पर्श, गंध और स्वाद से पहचानना'

1. एक थैले या डिब्बे में (सावधानीपूर्वक एवं सुरक्षित) विभिन्न वस्तुएँ (जैसे— फल, फूल, मसाले, खिलौने, कपड़े, किताब, गुड़ आदि) रखें।
2. विद्यार्थियों को आँखों पर पट्टी बाँधकर केवल स्पर्श, गंध या स्वाद का उपयोग करके वस्तु की पहचान करनी होगी और उसका नाम बताना होगा।
3. बारी-बारी से प्रत्येक विद्यार्थी को बुलाकर उसकी आँखों पर पट्टी बाँधें।
4. उसे डिब्बे से एक वस्तु दी जाए। विद्यार्थी उसे छूकर, सूँघकर, चखकर पहचानने का प्रयास करेंगे।
5. सही पहचान करने के बाद विद्यार्थी बताएँगे कि उन्होंने उस वस्तु को कैसे पहचाना।
6. एक-एक करके सभी विद्यार्थियों को अलग-अलग वस्तुओं को पहचानने का अवसर मिलेगा।
7. अंत में सभी वस्तुओं को कक्षा में दिखाएँ और उनके बारे में चर्चा करें कि किस वस्तु को पहचानना आसान या कठिन लगा।





आज की पहेली



आपने पढ़ा कि तीनों बुद्धिमान भाई किस प्रकार अपने अवलोकन से वे बातें भी जान जाते थे जो अन्य लोग नहीं जान पाते। अब आपके सामने कुछ पहेलियाँ प्रस्तुत हैं जहाँ आपको कुछ संकेत दिए जाएँगे। संकेतों के आधार पर आपको उत्तर खोजने हैं—

1. कौन है यह प्राणी?

1. इसकी लंबी पूँछ होती है जो पेड़ों की शाखाओं के चारों ओर लिपटी रहती है।
2. इसका मुख्य आहार कीट और छोटे जीव होते हैं जिन्हें यह चुपके से पकड़ता है।
3. यह प्राणी अपने परिवेश में घुल-मिल जाता है और अपनी रंगत को बदल सकता है।
4. इसके पास तेज आँखें होती हैं जो चारों दिशाओं में देख सकती हैं।

2. रंगीन डिब्बे

एक मेज पर चार रंगीन डिब्बे बराबर-बराबर रखे हैं— लाल, हरा, नीला और पीला। बताइए पीले डिब्बे के बराबर में कौन-सा डिब्बा है? यदि—

1. लाल डिब्बा नीले डिब्बे के पास है।
2. हरा डिब्बा पीले डिब्बे के पास नहीं है।
3. पीला डिब्बा लाल डिब्बे के पास नहीं है।
4. हरा डिब्बा लाल डिब्बे के पास है।



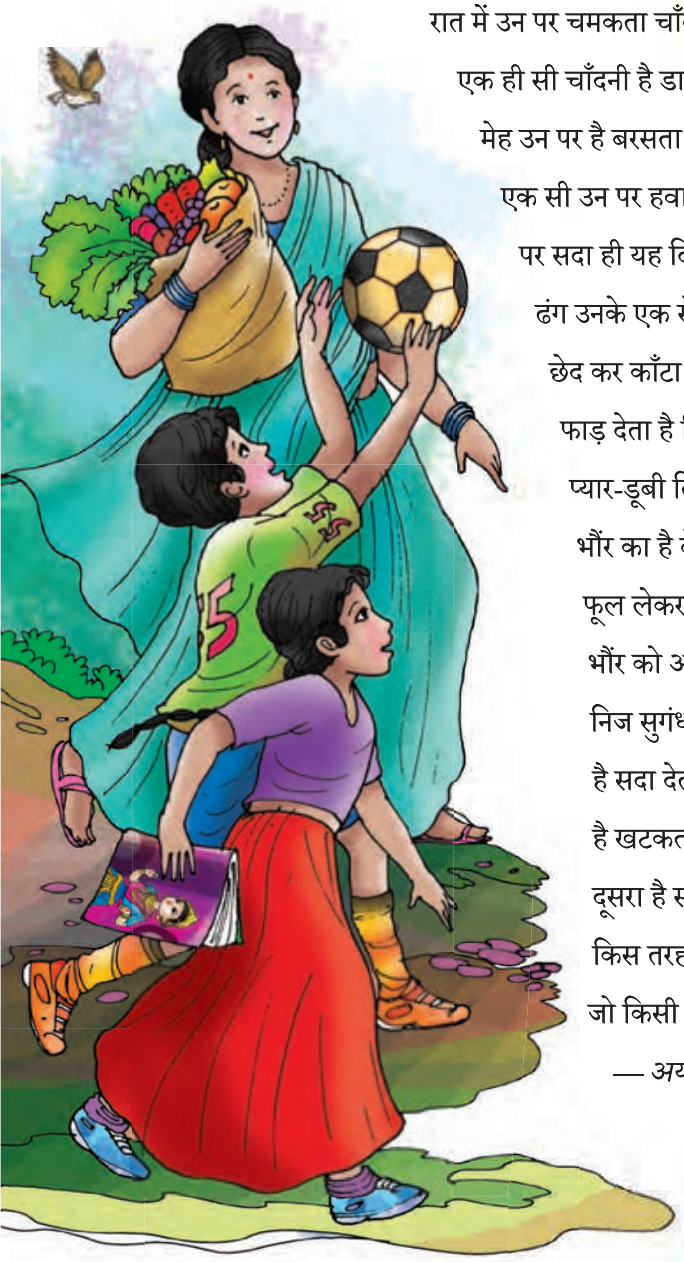
खोजबीन के लिए

नीचे दिए गए लिंक का प्रयोग करके आप बहुत-सी अन्य लोककथाएँ देख-सुन सकते हैं—

- सुनो लोककथा
  https://www.youtube.com/watch?v=JEti31XNpmA
- दुनिया की छत
  https://www.youtube.com/watch?v=PehlQ71udFg
- भूल चूक लेनी देनी
  https://www.youtube.com/watch?v=GjYW-CZIDeA



3 फूल और काँटा



हैं जनम लेते जगह में एक ही,
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उन पर चमकता चाँद भी,
एक ही सी चाँदनी है डालता।
मेह उन पर है बरसता एक सा,
एक सी उन पर हवायें हैं बही।
पर सदा ही यह दिखाता है हमें,
ढंग उनके एक से होते नहीं।
छेद कर काँटा किसी की उँगलियाँ,
फाड़ देता है किसी का वर बसन।
प्यार-डूबी तितलियों का पर कतर,
भौंर का है बेध देता श्याम तन।
फूल लेकर तितलियों को गोद में,
भौंर को अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगंधों औ निराले रंग से,
है सदा देता कली जी की खिला।
है खटकता एक सब की आँख में,
दूसरा है सोहता सुर शीश पर।
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

— *अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'*

कवि से परिचय


(1865–1947)

'उठो लाल, अब आँखें खोलो। पानी लाई हूँ, मुँह धो लो।' बचपन में यह प्यारी कविता आपने भी पढ़ी होगी। इस कविता को रचने वाले अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ही 'फूल और काँटा' के कवि हैं। बच्चों के लिए उन्होंने अनेक रोचक कविताएँ लिखी हैं। उनका जन्म आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। हरिऔध जी की चर्चित काव्य-कृति *प्रियप्रवास* को खड़ी बोली का पहला महाकाव्य माना जाता है। बच्चों के लिए उनके अनेक कविता-संकलन प्रकाशित हैं जिनमें *चंद्र-खिलौना* और *खेल-तमाशा* उल्लेखनीय हैं।

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गईं गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) कविता के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उनके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

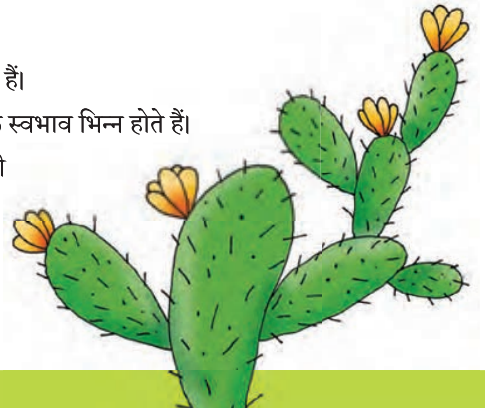


(1) कविता में काँटे के बारे में कौन-सा वाक्य सत्य है?

- काँटा अपने आस-पास की सुगंध को नष्ट करता है।
- काँटा तितलियों और भौंरों को आकर्षित करता है।
- काँटा उँगलियों को छेदता है और वस्त्र फाड़ देता है।
- काँटा पौधे को हानि पहुँचाता है।

(2) कविता में फूल और काँटे में समानताओं और विभिन्नताओं का उल्लेख किया गया है। निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य इन्हें सही रूप में व्यक्त करता है?

- फूल सुंदरता का प्रतीक है और काँटा कठोरता का।
- फूल और काँटे के बारे में लोगों के विचार समान होते हैं।
- फूल और काँटे एक ही पौधे पर उगते हैं, लेकिन उनके स्वभाव भिन्न होते हैं।
- फूल और काँटे को समान देखभाल मिलती है फिर भी उनके रंग-ढंग अलग होते हैं।





(3) कविता के आधार पर कौन-सा निष्कर्ष उपयुक्त है?

- व्यक्ति का कुल ही उसके सम्मान का आधार होता है।
- व्यक्ति के कार्यों के कारण ही लोग उसका सम्मान करते हैं।
- कुल की प्रतिष्ठा हमेशा व्यक्ति के गुणों से बड़ी होती है।
- यदि व्यक्ति अच्छे कार्य करता है तो उसके कुल को प्रसिद्धि मिलती है।

(4) कविता के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'बड़प्पन' के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है?



- धन-दौलत और ताकत से व्यक्ति के बड़प्पन का पता चलता है।
- कुल के बड़प्पन की प्रशंसा व्यक्ति की कमियों को ढक देती है।
- बड़प्पन व्यक्ति के गुणों, स्वभाव और कर्मों से पहचाना जाता है।
- कुल का नाम व्यक्ति में बड़प्पन की पहचान का मुख्य आधार है।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग या एक से अधिक उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?



पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए—

(क) "मेह उन पर है बरसता एक सा,
एक सी उन पर हवायें हैं बही।
पर सदा ही यह दिखाता है हमें,
ढंग उनके एक से होते नहीं।"

(ख) " किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।"







मिलकर करें मिलान

इस कविता में 'फूल' और 'काँटा' के उदाहरण द्वारा लोगों के स्वभावों के अंतर और समानताओं की ओर संकेत किया गया है। दूसरे शब्दों में, 'फूल' और 'काँटा' प्रतीक के रूप में प्रयोग किए गए हैं। अपने साथियों के साथ मिलकर चर्चा कीजिए कि फूल और काँटा किस-किस के प्रतीक हो सकते हैं। इन्हें उपयुक्त प्रतीकों से जोड़िए—

दया	 फूल	परोपकार
स्वार्थ		प्रेम
अच्छाई		बुराई
सुख		दुख
सुंदरता	 काँटा	कठोरता
कोमलता		प्रसन्नता
आनंद		पीड़ा



सोच-विचार के लिए

कविता को एक बार पुन: ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) कविता में ऐसी कौन-कौन सी समानताओं का उल्लेख किया गया है जो सभी पौधों पर समान रूप से लागू होती हैं?

(ख) आपको फूल और काँटे के स्वभाव में मुख्य रूप से कौन-सा अंतर दिखाई दिया?

(ग) कविता में मुख्य रूप से कौन-सी बात कही गई है? उसे पहचानिए, समझिए और अपने शब्दों में लिखिए।

(घ) "किस तरह कुल की बड़ाई काम दे, जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।" उदाहरण देकर समझाइए।

(ङ) "है खटकता एक सब की आँख में, दूसरा है सोहता सुर शीश पर।" लोग कैसे स्वभाव के व्यक्तियों की प्रशंसा करते हैं और कैसे स्वभाव वाले व्यक्तियों से दूर रहना पसंद करते हैं?



अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए —

(क) कल्पना कीजिए कि चाँदनी, हवा और मेघ केवल एक पौधे पर बरसते हैं। बाकी पौधे इन सबके बिना कैसे दिखेंगे और उनके जीवन पर इसका क्या प्रभाव होगा?







(ख) यदि सभी पौधे एक जैसे होते तो दुनिया कैसी लगती?

(ग) यदि काँटे न होते और हर पौधा केवल फूलों से भरा होता तो क्या होता?

(घ) कल्पना कीजिए कि एक तितली काँटे से मित्रता करना चाहती है, उनके बीच कैसा संवाद होगा?

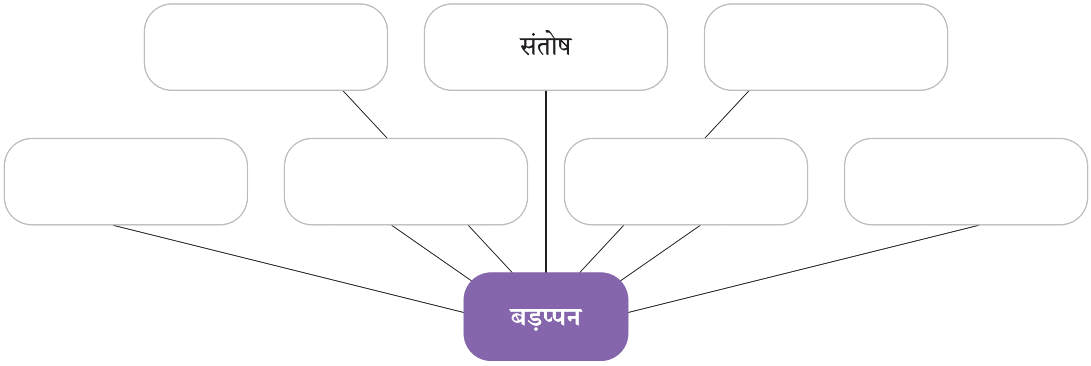
(ङ) कल्पना कीजिए कि आपको किसी काँटे, फूल या दोनों के गुणों के साथ जीवन जीने का अवसर मिलता है। आप किसके गुणों को अपनाना चाहेंगे? कारण सहित बताइए।





शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'बड़प्पन' से जुड़े शब्द अपने समूह में चर्चा करके लिखिए—





बड़प्पन

'बड़प्पन' शब्द 'बड़ा' और 'पन' से मिलकर बना है। इसका अर्थ होता है — बड़ाई, श्रेष्ठ या बड़ा होने का भाव, महत्व, गौरव। इसका उपयोग मुख्य रूप से व्यक्तित्व, गुण और चरित्र की ऊँचाई या महानता बताने के लिए किया जाता है, जैसे — उनकी सादगी और बड़प्पन ने सबका मन जीत लिया।

- नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं जो किसी भाव को व्यक्त करते हैं। इनमें से जो शब्द 'बड़प्पन' के भाव व्यक्त करते हैं, उन पर एक गोला बनाइए, जो बड़प्पन का भाव व्यक्त नहीं करते हैं, उनके नीचे रेखा खींचिए।

सहनशीलता	दया	अहंकार	विश्वास	घमंड	ईर्ष्या
द्वेष	प्रतिशोध	क्रूरता	उदारता	विनम्रता	त्याग
संतोष	समर्पण	आदर	सम्मान	निष्ठा	परोपकार
सद्भावना	स्वार्थ	अपमान	अविश्वास	झूठ	अधीरता
लालच	झगड़ालूपन				





कविता की रचना



"फूल लेकर तितलियों को गोद में,
भौंर को अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगंधों औ निराले रंग से,
है सदा देता कली का जी खिला।"

इस पंक्ति में रेखांकित शब्द पर ध्यान दीजिए। क्या आपने इस शब्द को पहले कहीं पढ़ा है? यह शब्द है— 'और'। कविता में 'र' वर्ण नहीं लिखा गया है। कई बार बोलते हुए हम शब्द की अंतिम ध्वनि उच्चरित नहीं करते हैं। कवि भी कविता की लय के अनुसार ऐसा प्रयोग करते हैं। इस कविता में ऐसी अनेक विशेषताएँ छिपी हैं, जैसे— 'प्यार में डूबी तितलियों' के स्थान पर 'प्यार-डूबी तितलियों' का प्रयोग किया गया है। हर दूसरी पंक्ति का अंतिम शब्द मिलती-जुलती ध्वनि वाला यानी 'तुकांत' है आदि।

(क) अपने समूह के साथ मिलकर इन विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

(ख) नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और वे पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें ये विशेषताएँ झलकती हैं। विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए। आप कविता की पंक्तियों में एक से अधिक विशेषताएँ भी ढूँढ़ सकते हैं।

कविता की विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
1. एक ही वर्ण से शुरू होने वाले दो शब्द एक ही पंक्ति में साथ-साथ आए हैं।	1. किस तरह कुल की बड़ाई काम दे
2. मुहावरे का प्रयोग किया गया है।	2. भौंर को अपना अनूठा रस पिला
3. प्रश्न पूछा गया है।	3. फाड़ देता है किसी का वर बसन
4. प्राकृतिक वस्तुओं, जैसे— पेड़-पौधों में मानवीय कार्यों और भावनाओं का वर्णन किया गया है।	4. है खटकता एक सब की आँख में, दूसरा है सोहता सुर शीश पर
5. एक-दूसरे के विपरीत अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग किया गया है।	5. है सदा देता कली का जी खिला
	6. फूल लेकर तितलियों को गोद में



कविता का सौंदर्य

(क) आगे कविता की कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। इनमें कुछ शब्द हटा दिए गए हैं और साथ में मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द भी दिए गए हैं। इनमें से प्रत्येक शब्द से वह पंक्ति पूरी करके देखिए जो शब्द उस पंक्ति में जँच रहे हैं, उन पर घेरा बनाइए।



1 . हैं जनम लेते जगह में एक ही,

एक ही पौधा उन्हें है पालता।

_____ में उन पर चमकता _____ भी, (रात, रात्रि, रजनी, निशा) (शशि, चंद्रमा, चाँद, राकेश, इंदु)

एक ही सी चाँदनी है डालता।

2. _____ उन पर है बरसता एक सा, (मेह, बादल, मेघ, जलद)

एक सी उन पर _____ हैं बही। (वायु, पवन, समीर, मारुत, बयारें, हवायें)

पर सदा ही यह दिखाता है हमें,

ढंग उनके एक से होते नहीं।

(ख) अपने समूह में चर्चा करके पता लगाइए कि कौन-सा शब्द रिक्त स्थानों में सबसे अधिक साथियों को जँच रहा है और क्यों?

विशेषण



"भौंर का है बेध देता श्याम तन।"

'श्याम तन' का अर्थ है— काला शरीर। यहाँ 'श्याम' शब्द भँवरे के 'शरीर' की विशेषता बता रहा है, अर्थात् 'श्याम' 'विशेषण' है। 'तन' एक संज्ञा शब्द है जिसकी विशेषता बताई जा रही है अर्थात् 'तन' 'विशेष्य' शब्द है।

(क) नीचे दी गई पंक्तियों में विशेषण और विशेष्य शब्दों की पहचान करके लिखिए —

	पंक्ति	विशेषण	विशेष्य
1.	भौंर का है बेध देता श्याम तन	श्याम	तन
2.	फाड़ देता है किसी का वर बसन	_____	_____
3.	भौंर को अपना अनूठा रस पिला	_____	_____
4.	निज सुगंधों औ निराले ढंग से	_____	_____



(ख) नीचे दिए गए विशेष्यों के लिए अपने मन से विशेषण सोचकर लिखिए —

1. फूल _____ _____
2. काँटा _____ _____
3. मेह _____ _____
4. चाँद _____ _____
5. रात _____ _____



पाठ से आगे



आपकी बात

(क) यदि आपको फूल और काँटे में से किसी एक को चुनना हो तो आप किसे चुनेंगे और क्यों?

(ख) कविता में बताया गया है कि फूल अपनी सुगंध और व्यवहार से चारों ओर प्रसन्नता और आनंद फैला देता है। आप अपने मित्रों या परिवार के जीवन में प्रसन्नता और आनंद लाने के लिए क्या-क्या करते हैं और क्या-क्या कर सकते हैं?

(ग) 'फूल' और 'काँटे' एक-दूसरे से बिलकुल भिन्न हैं फिर भी साथ-साथ पाए जाते हैं। अपने आस-पास से ऐसे अन्य उदाहरण दीजिए।

(संकेत— वस्तुएँ, जैसे— नमक और चीनी; स्वभाव, जैसे— शांत और क्रोधी; स्वाद, जैसे— खट्टा-मीठा; रंग, जैसे— काला-सफेद; अनुभव, जैसे— सुख-दुख आदि)



(घ) "छेद कर काँटा किसी की उँगलियाँ, फाड़ देता है किसी का वर बसन।" आप अपने आस-पास की किसी समस्या का वर्णन कीजिए जिसे आप 'काँटे' के समान महसूस करते हैं। उस समस्या का समाधान भी सुझाइए।



सृजन

(क) इस कविता के बारे में एक चित्र बनाइए। आप चित्र में जहाँ चाहें, अपने मनोनीत रंग भर सकते हैं। आप बिना रंगों या केवल उपलब्ध रंगों की सहायता से भी चित्र बना सकते हैं। चित्र बिलकुल मौलिक लगे इसकी चिंता करने की भी आवश्यकता नहीं है। आप अपनी कल्पना को जैसे मन करे, वैसे साकार कर सकते हैं।

(ख) मान लीजिए कि फूल और काँटे के बीच बातचीत हो रही है। उनकी बातचीत या संवाद अपनी कल्पना से लिखिए।

संवाद का विषय निम्नलिखित हो सकता है—

- उनके गुणों और विशेषताओं पर चर्चा।
- यह समझाना कि उनका जीवन में क्या योगदान है।



उदाहरण

- फूल— मैं दूसरों के जीवन में सुगंध और सुख फैलाने आया हूँ।
- काँटा— और मैं संघर्ष की याद दिलाने और सुरक्षा देने के लिए हूँ।





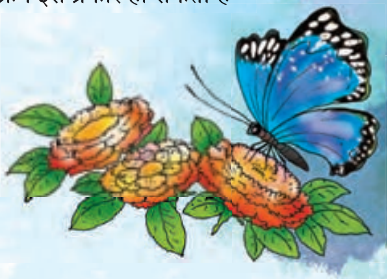
वाद-विवाद

विभिन्न समूह बनाकर कक्षा में एक वाद-विवाद गतिविधि का आयोजन कीजिए। इसके लिए विषय है— 'जीवन में फूल और काँटे, दोनों की आवश्यकता होती है'।

कक्षा में वाद-विवाद गतिविधि का आयोजन करने के लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं—

1. आपकी कक्षा में पहले से सात-आठ समूह बने होंगे। आधे समूह 'फूल' के पक्ष में तर्क देंगे। आधे समूह 'काँटे' के पक्ष में तर्क देंगे।
2. एक समूह निर्णायक मंडल की भूमिका निभाएगा। निर्णायक मंडल का काम होगा—
   - तर्कों को ध्यान से सुनना।
   - प्रस्तुति शैली और तर्कों की गहराई के आधार पर अंकों का निर्धारण करना।
3. प्रत्येक समूह को तैयारी के लिए 15 मिनट का समय मिलेगा ताकि वे अपने तर्क तैयार कर सकें। सभी समूह अपने-अपने तर्क मिलकर सोचेंगे और लिखेंगे।
4. प्रत्येक समूह को अपने पक्ष में बोलने के लिए तीन-चार मिनट का समय मिलेगा। दूसरा समूह पहले समूह के तर्कों पर एक-दो मिनट में उत्तर देगा या उनसे प्रश्न पूछेगा।
5. सभी प्रतिभागियों को एक-दूसरे की बात ध्यान से सुननी होगी। बीच में टोकने की अनुमति किसी को नहीं होगी।
6. सभी समूहों का क्रम तय किया जाएगा। वाद-विवाद के लिए क्रम इस प्रकार हो सकता है—
   - समूह 1 (फूल के पक्ष में)
   - समूह 2 (काँटे के पक्ष में)
   - समूह 3 (फूल के पक्ष में)
   - समूह 4 (काँटे के पक्ष में)

   और इसी क्रम से आगे बढ़ें।
7. जो समूह निर्णायक मंडल का कार्य कर रहा है, वह वाद-विवाद के अंतराल में तर्क, भाषा कौशल और प्रस्तुति शैली के आधार पर अंकों का निर्धारण करेगा।
8. निर्णायक मंडल अंकों के आधार पर विजेता समूह का निर्णय करेगा।
9. समूहों के प्रयासों के लिए तालियाँ बजाएँ और उनकी प्रशंसा करें। संभव हो तो विजेता समूह को कोई पुरस्कार या प्रमाणपत्र दिया जा सकता है।
10. विद्यार्थी वाद-विवाद गतिविधि के अनुभवों पर एक अनुच्छेद भी लिख सकते हैं।







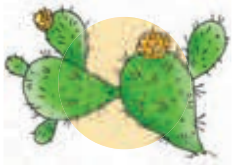
आज की पहेली

नीचे कुछ ऐसे पेड़-पौधों के चित्र दिए गए हैं जिनमें फूल और काँटे साथ-साथ पाए जाते हैं। चित्रों को सही नामों के साथ रेखा खींचकर जोड़िए—

वर्णन	चित्र

1. **बबूल**

फूल	पीले या सफेद छोटे गुच्छेदार।
काँटे	लंबे और नुकीले।
विशेषता	इसका उपयोग ईंधन, चारा और औषधियों में किया जाता है।



2. **गुलाब**

फूल	विभिन्न रंगों में, विशेष रूप से लाल, सफेद, और गुलाबी।
काँटे	तने पर छोटे और तीखे।
विशेषता	सजावटी पौधा और इत्र बनाने के लिए प्रसिद्ध।



3. **नागफनी**

फूल	रंग-बिरंगे, पीले, नारंगी या गुलाबी।
काँटे	पूरी सतह पर छोटे या लंबे।
विशेषता	सूखे क्षेत्रों में पाया जाता है और सजावटी पौधे के रूप में भी उगाया जाता है।



4. **बेर**

फूल	छोटे और हल्के पीले।
काँटे	शाखाओं पर छोटे-छोटे।
विशेषता	इसके फल खाद्य और औषधीय होते हैं।



5. **करौंदा**

फूल	छोटे, सफेद और सुगंधित।
काँटे	शाखाओं पर छोटे-छोटे और तीखे।
विशेषता	फूल सजावटी और मधुर सुगंध वाले होते हैं। इसके फल से अचार, जैम और जेली बनाई जाती हैं। यह शुष्क और पहाड़ी क्षेत्रों में उगता है।



6. **नीबू**

फूल	छोटे, सफेद और हल्की गुलाबी छाया लिए हुए। सुगंधित और गुच्छेदार।
काँटे	शाखाओं पर छोटे और तीखे काँटे।
विशेषता	फल खट्टे और विटामिन सी से भरपूर होते हैं। इनका उपयोग पेय पदार्थ, अचार, औषधियों और खाना बनाने में किया जाता है।







खोजबीन के लिए

- रंग-बिरंगे फूलों से

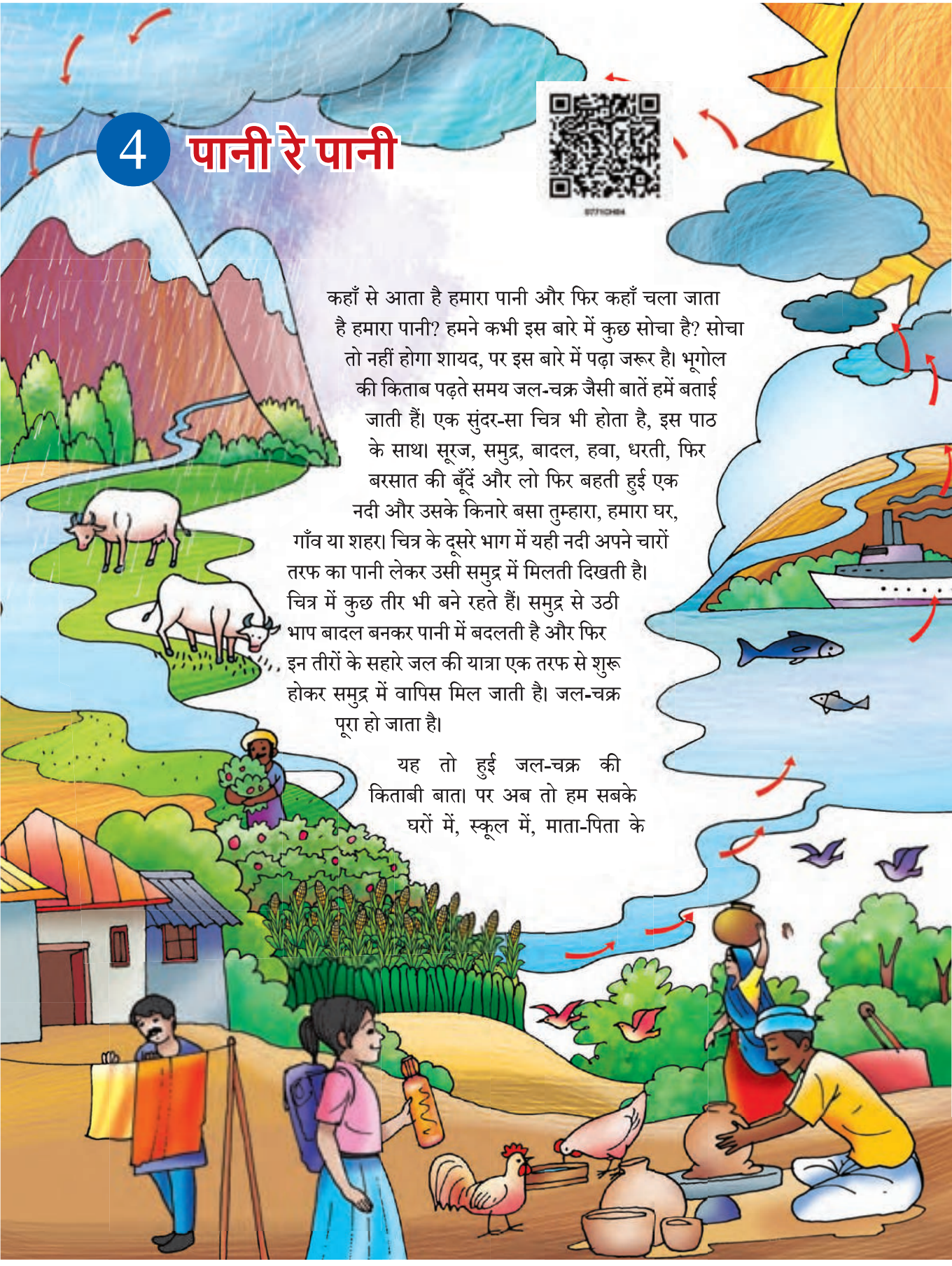
  https://www.youtube.com/watch?v=rIXpoQy4sHc

- फूलों की घाटी में—कविता

  https://www.youtube.com/watch?v=yyrbxCtbgWg



4 पानी रे पानी



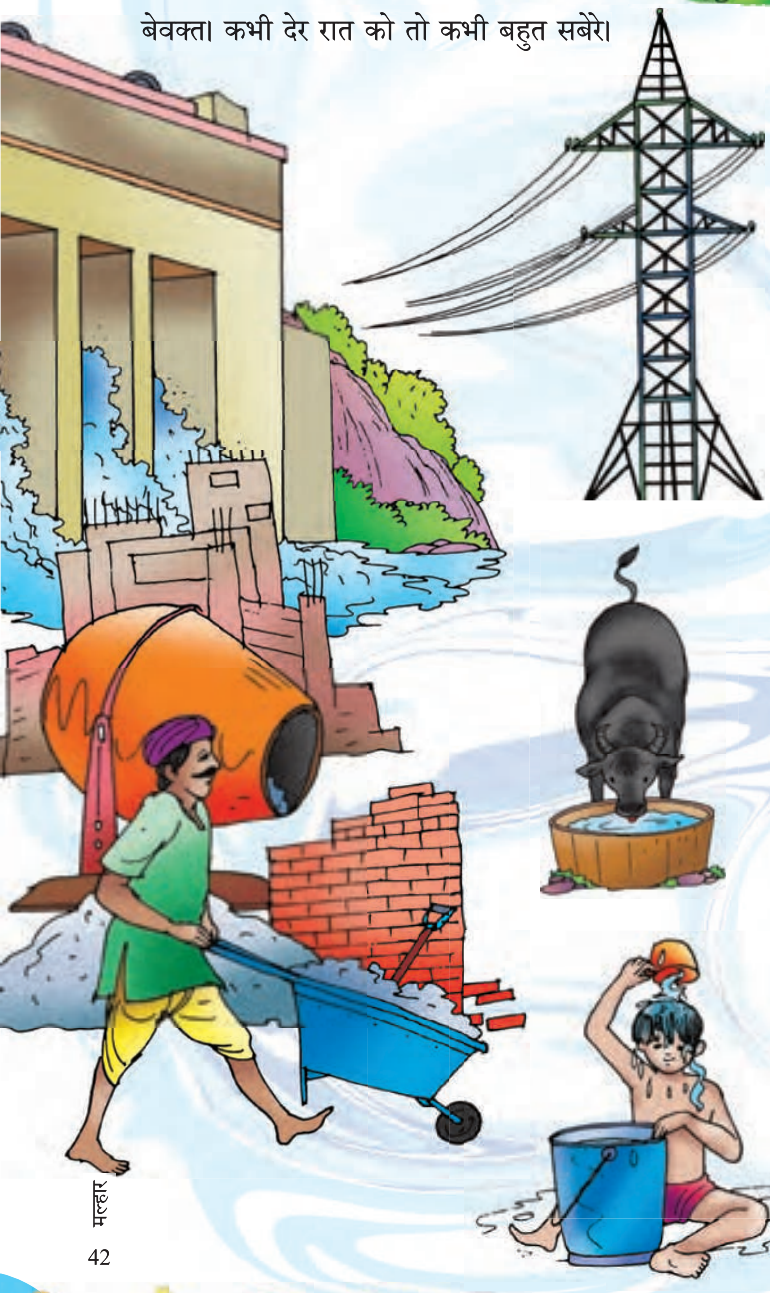
कहाँ से आता है हमारा पानी और फिर कहाँ चला जाता है हमारा पानी? हमने कभी इस बारे में कुछ सोचा है? सोचा तो नहीं होगा शायद, पर इस बारे में पढ़ा जरूर है। भूगोल की किताब पढ़ते समय जल-चक्र जैसी बातें हमें बताई जाती हैं। एक सुंदर-सा चित्र भी होता है, इस पाठ के साथ। सूरज, समुद्र, बादल, हवा, धरती, फिर बरसात की बूँदें और लो फिर बहती हुई एक नदी और उसके किनारे बसा तुम्हारा, हमारा घर, गाँव या शहर। चित्र के दूसरे भाग में यही नदी अपने चारों तरफ का पानी लेकर उसी समुद्र में मिलती दिखती है। चित्र में कुछ तीर भी बने रहते हैं। समुद्र से उठी भाप बादल बनकर पानी में बदलती है और फिर इन तीरों के सहारे जल की यात्रा एक तरफ से शुरू होकर समुद्र में वापिस मिल जाती है। जल-चक्र पूरा हो जाता है।

यह तो हुई जल-चक्र की किताबी बात। पर अब तो हम सबके घरों में, स्कूल में, माता-पिता के

कार्यालय में, कारखानों और खेतों में पानी का कुछ अजीब-सा चक्कर सामने आने लगा है।

नलों में अब पूरे समय पानी नहीं आता। नल खोलो तो उससे पानी के बदले सूँ-सूँ की आवाज आने लगती है। पानी आता भी है तो बेवक्त। कभी देर रात को तो कभी बहुत सबेरे।





मीठी नींद छोड़कर घर भर की बालटियाँ, बर्तन और घड़े भरते फिरो। पानी को लेकर कभी-कभी, कहीं-कहीं आपस में तू-तू, मैं-मैं भी होने लगती है।

रोज-रोज के इन झगड़े-टंटों से बचने के लिए कई घरों में लोग नलों के पाइप में मोटर लगवा लेते हैं। इससे कई घरों का पानी खिंचकर एक ही घर में आ जाता है। यह तो अपने आस-पास का हक छीनने जैसा काम है, लेकिन मजबूरी मानकर इस काम को मोहल्ले में कोई एक घर कर बैठे तो फिर और कई घर यही करने लगते हैं। पानी की कमी और बढ़ जाती है। शहरों में तो अब कई चीजों की तरह पानी भी बिकने लगा है। यह कमी गाँव-शहरों में ही नहीं बल्कि हमारे प्रदेशों की राजधानियों में और दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और बैंगलोर जैसे बड़े शहरों में भी लोगों को भयानक कष्ट में डाल देती है। देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसी हालत बन जाती है। यह तो हुई गरमी के मौसम की बात।

लेकिन बरसात के मौसम में क्या होता है? लो, सब तरफ पानी ही बहने लगता है। हमारे-तुम्हारे घर, स्कूल, सड़कों, रेल की पटरियों पर पानी भर जाता है। देश के कई भाग बाढ़ में डूब जाते हैं। यह बाढ़ न गाँवों को छोड़ती है और न मुंबई जैसे बड़े शहरों को। कुछ दिनों के लिए सब कुछ थम जाता है, सब कुछ बह जाता है।





ये हालात हमें बताते हैं कि पानी का बेहद कम हो जाना और पानी का बेहद ज्यादा हो जाना, यानी अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि हम इन दोनों को ठीक से समझ सकें और सँभाल लें तो इन कई समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

चलो, थोड़ी देर के लिए हम पानी के इस चक्कर को भूल जाएँ और याद करें अपनी गुल्लक को। जब भी हमें कोई पैसा देता है, हम खुश होकर, दौड़कर उसे झट से अपनी गुल्लक में डाल देते हैं। एक रुपया, दो रुपया, पाँच रुपया, कभी सिक्के, तो कभी छोटे-बड़े नोट सब इसमें धीरे-धीरे जमा होते जाते हैं। फिर जब कभी हमें कुछ पैसों की जरूरत पड़ती है तो इस गुल्लक की बचत का उपयोग कर लेते हैं।



हमारी यह धरती भी इसी तरह की खूब बड़ी गुल्लक है। मिट्टी की बनी इस विशाल गुल्लक में प्रकृति वर्षा के मौसम में खूब पानी बरसाती है। तब रुपयों से भी कई गुना कीमती इस वर्षा को हमें इस बड़ी गुल्लक में जमा कर लेना चाहिए। हमारे गाँव में, शहर में जो छोटे-बड़े तालाब, झील आदि हैं, वे धरती की गुल्लक में पानी भरने का काम करते हैं। इनमें जमा पानी जमीन के नीचे छिपे जल के भंडार में धीरे-धीरे रिसकर, छनकर जा मिलता है। इससे हमारा भूजल भंडार समृद्ध होता जाता है। पानी का यह खजाना हमें दिखता नहीं, लेकिन इसी खजाने से हम बरसात का मौसम बीत जाने के बाद पूरे साल भर तक अपने उपयोग के लिए घर में, खेतों में, पाठशाला में पानी निकाल सकते हैं। लेकिन एक दौर ऐसा भी आया जब हम लोग इस छिपे खजाने का महत्व भूल गए और जमीन के लालच में हमने



अपने तालाबों को कचरे से पाटकर, भरकर समतल बना दिया। देखते-ही-देखते इन पर तो कहीं मकान, कहीं बाजार, स्टेडियम और सिनेमा आदि खड़े हो गए।

इस बड़ी गलती की सजा अब हम सबको मिल रही है। गर्मी के दिनों में हमारे नल सूख जाते हैं और बरसात के दिनों में हमारी बस्तियाँ डूबने लगती हैं। इसीलिए यदि हमें अकाल और बाढ़ से बचना है तो अपने आस-पास के जलस्रोतों की, तालाबों की और नदियों आदि की रखवाली अच्छे ढंग से करनी पड़ेगी।

जल-चक्र हम ठीक से समझें, जब बरसात हो तो उसे थाम लें, अपना भूजल भंडार सुरक्षित रखें, अपनी गुल्लक भरते रहें, तभी हमें जरूरत के समय पानी की कोई कमी नहीं आएगी। यदि हमने जल-चक्र का ठीक उपयोग नहीं किया तो हम पानी के चक्कर में फँसते चले जाएँगे।

— *अनुपम मिश्र*



लेखक से परिचय


(1948–2016)

अनुपम मिश्र एक प्रखर लेखक, संपादक और जाने-माने पर्यावरणविद होने के साथ-साथ छायाकार भी थे। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उन्होंने अनेक प्रयोगात्मक कार्य किए हैं। *आज भी खरे हैं तालाब* उनकी सर्वाधिक चर्चित पुस्तक है। ब्रेल लिपि सहित इसका अनुवाद अनेक भाषाओं में हो चुका है। *साफ माथे का समाज* उनकी एक और महत्वपूर्ण पुस्तक है। वे गाँधी शांति प्रतिष्ठान से प्रकाशित होने वाली पत्रिका *गांधी मार्ग* के संस्थापक और संपादक भी थे।

पाठ से

आइए, अब हम इस पाठ को थोड़ा और निकटता से समझते हैं। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।



मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों का सही उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) हमारा भूजल भंडार निम्नलिखित में से किससे समृद्ध होता है?

- नल सूख जाने से।
- पानी बरसने से।
- तालाब और झीलों से।
- बाढ़ आने से।

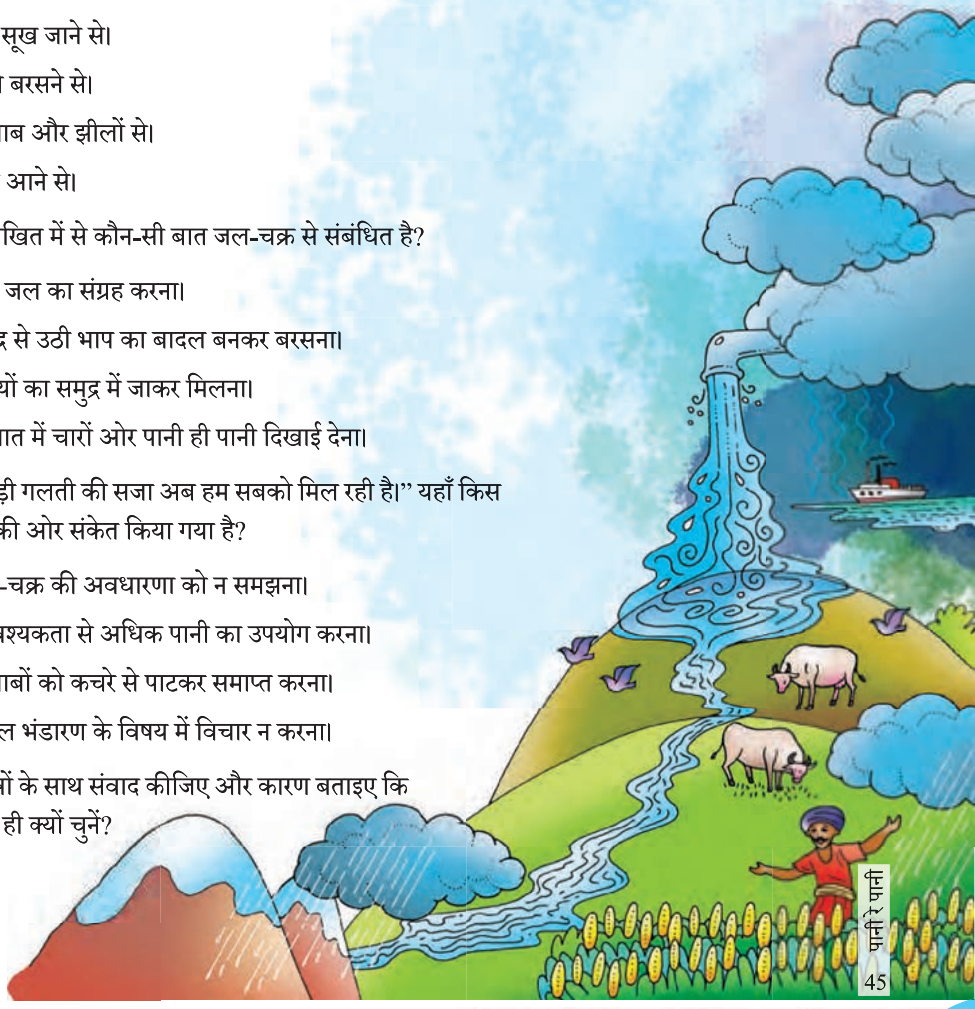
(2) निम्नलिखित में से कौन-सी बात जल-चक्र से संबंधित है?

- वर्षा जल का संग्रह करना।
- समुद्र से उठी भाप का बादल बनकर बरसना।
- नदियों का समुद्र में जाकर मिलना।
- बरसात में चारों ओर पानी ही पानी दिखाई देना।

(3) "इस बड़ी गलती की सजा अब हम सबको मिल रही है।" यहाँ किस गलती की ओर संकेत किया गया है?

- जल-चक्र की अवधारणा को न समझना।
- आवश्यकता से अधिक पानी का उपयोग करना।
- तालाबों को कचरे से पाटकर समाप्त करना।
- भूजल भंडारण के विषय में विचार न करना।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ संवाद कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?







मिलकर करें मिलान

पाठ में से कुछ शब्द समूह या संदर्भ चुनकर स्तंभ 1 में दिए गए हैं और उनके अर्थ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और रेखा खींचकर सही मिलान कीजिए।

स्तंभ 1		स्तंभ 2
1.	वर्षा जल संग्रहण	1. जमीन के नीचे छिपा जल भंडार।
2.	जल संकट	2. वर्षा के जल को प्राकृतिक अथवा कृत्रिम रूप से (मानवीय प्रयासों से) धरती में संग्रह करना।
3.	जल-चक्र	3. जल की अत्यधिक कमी होना।
4.	भूजल	4. समुद्र से उठी भाप का बादल बनकर पानी में बदलना और वर्षा के द्वारा पुनः समुद्र में मिल जाना।



पंक्तियों पर चर्चा

इस पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और अपने सहपाठियों से चर्चा कीजिए।

- "पानी आता भी है तो बेवक्त।"
- "देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसे हालात बन जाते हैं।"
- "कुछ दिनों के लिए सब कुछ थम जाता है।"
- "अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।"



सोच-विचार के लिए

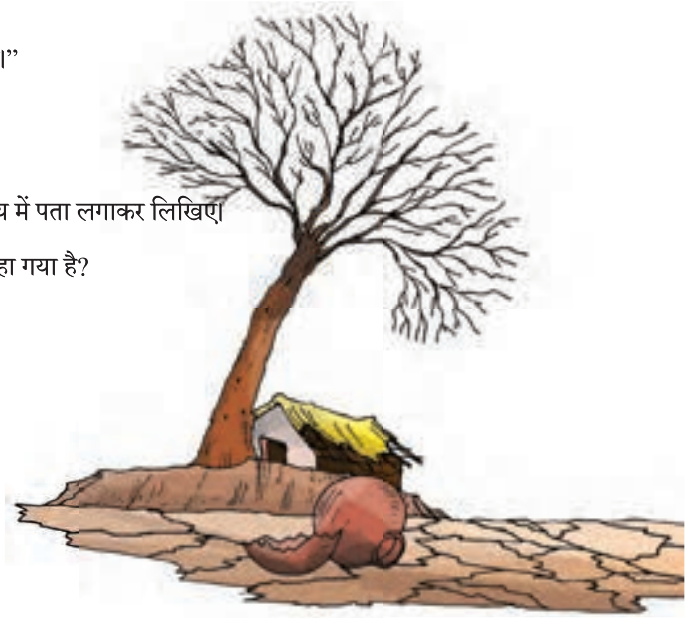
लेख को एक बार पुन: पढ़िए और निम्नलिखित के विषय में पता लगाकर लिखिए।

(क) पाठ में धरती को एक बहुत बड़ी गुल्लक क्यों कहा गया है?

(ख) जल-चक्र की प्रक्रिया कैसे पूरी होती है?

(ग) यदि सारी नदियाँ, झीलें और तालाब सूख जाएँ तो क्या होगा?

(घ) पाठ में पानी को रुपयों से भी कई गुना मूल्यवान क्यों बताया गया है?







शीर्षक

(क) इस पाठ का शीर्षक 'पानी रे पानी' दिया गया है। पाठ का यह नाम क्यों दिया गया होगा? अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करके लिखिए। अपने उत्तर का कारण भी लिखिए।

(ख) आप इस पाठ को क्या नाम देना चाहेंगे? इसका कारण लिखिए।

शब्दों की बात

बात पर बल देना

- "हमारी यह धरती भी इसी तरह की एक गुल्लक है।"
- "हमारी यह धरती इसी तरह की एक गुल्लक है।"

(क) इन दोनों वाक्यों को ध्यान से पढ़िए। दूसरे वाक्य में कौन-सा शब्द हटा दिया गया है? उस शब्द को हटा देने से वाक्य के अर्थ में क्या अंतर आया है, पहचान कर लिखिए।

(ख) पाठ में ऐसे ही कुछ और शब्द भी आए हैं जो अपनी उपस्थिति से वाक्य में विशेष प्रभाव उत्पन्न करते हैं। पाठ को फिर से पढ़िए और इस तरह के शब्दों वाले वाक्यों को चुनकर लिखिए।

समानार्थी शब्द

नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर समान अर्थ देने वाले उपयुक्त शब्द लिखिए। इस कार्य के लिए आप बादल में से शब्द चुन सकते हैं।

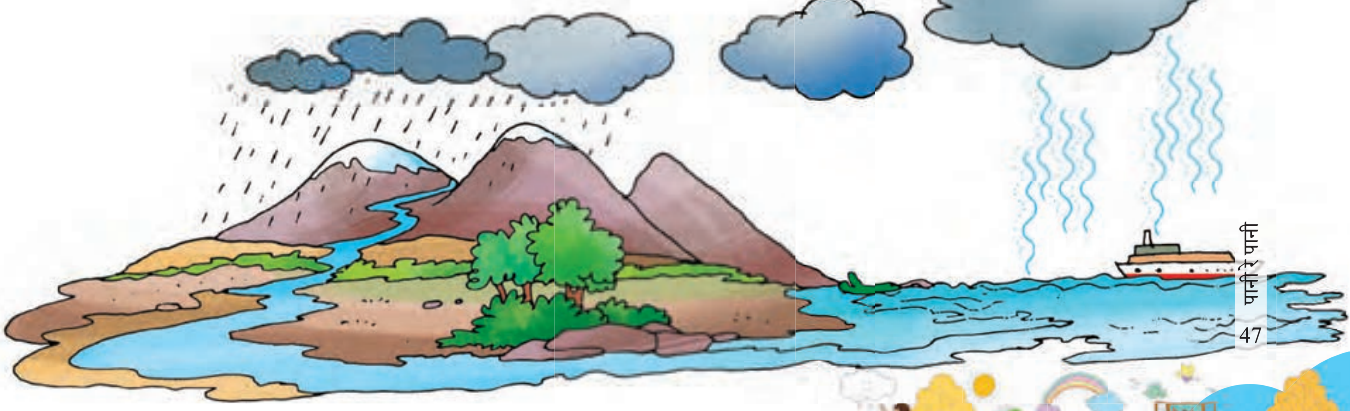
(क) **सूरज** की किरणें पड़ते ही फूल खिल उठे।

(ख) समुद्र का पानी **भाप** बनकर ऊपर जाता है।

(ग) अचानक **बादल** गरजने लगे।

(घ) जल-चक्र में **हवा** की भी बहुत बड़ी भूमिका है।

सूर्य, मेघ, भास्कर,
पवन, वारिद, वायु, दिवाकर,
जलद, वाष्प, समीर,
दिनकर, नीरद





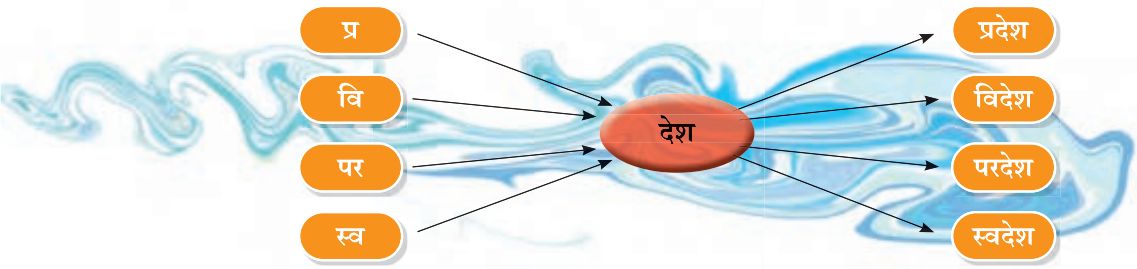
उपसर्ग



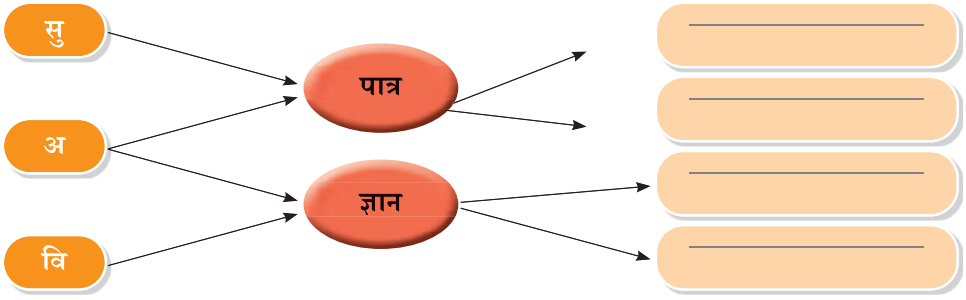
"देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसे हालात बन जाते हैं।"

उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित शब्द में 'अ' ने 'काल' शब्द में **जुड़कर एक** नया अर्थ दिया है। काल का अर्थ है— समय, मृत्यु। जबकि अकाल का अर्थ है— कुसमय, सूखा। **कुछ शब्दांश** किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं या कोई विशेषता उत्पन्न कर देते हैं **और** इस प्रकार नए शब्दों का निर्माण करते हैं। इस तरह के शब्दांश 'उपसर्ग' कहलाते हैं।

आइए, कुछ और उपसर्गों की पहचान करते हैं—



अब आप भी उपसर्ग के प्रयोग से नए शब्द बनाकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए—



पाठ से आगे



आपकी बात

(क) धरती की गुल्लक में जलराशि की कमी न हो इसके लिए आप क्या-क्या प्रयास कर सकते हैं, अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करके लिखिए।

(ख) इस पाठ में एक छोटे से खंड में जल-चक्र की प्रक्रिया को प्रस्तुत किया गया है। उस खंड की पहचान करें और जल-चक्र को चित्र के माध्यम से प्रस्तुत करें।

(ग) अपने द्वारा बनाए गए जल-चक्र के चित्र का विवरण प्रस्तुत कीजिए।





सृजन



(क) कल्पना कीजिए कि किसी दिन आपके घर में पानी नहीं आया। आपको विद्यालय जाना है। आपके घर के समीप ही एक सार्वजनिक नल है। आप बालटी आदि लेकर वहाँ पहुँचते हैं और ठीक उसी समय आपके पड़ोसी भी पानी लेने पहुँच जाते हैं। आप दोनों ही अपनी-अपनी बालटी पहले भरना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में आपस में किसी प्रकार का विवाद (तू-तू मैं-मैं) न हो, यह ध्यान में रखते हुए पाँच संदेश वाक्य (स्लोगन) तैयार कीजिए।

(ख) "सूरज, समुद्र, बादल, हवा, धरती, फिर बरसात की बूँदें और फिर बहती हुई एक नदी और उसके किनारे बसा तुम्हारा, हमारा घर, गाँव या शहर।"

इस वाक्य को पढ़कर आपके सामने कोई एक चित्र उभर आया होगा, उस चित्र को बनाकर उसमें रंग भरिए।





पानी रे पानी

नीचे हम सबकी दिनचर्या से जुड़ी कुछ गतिविधियों के चित्र हैं। उन चित्रों पर बातचीत कीजिए जो धरती पर पानी के संकट को कम करने में सहायक हैं और उन चित्रों पर भी बात करें जो पानी की गुल्लक को जल्दी ही खाली कर रहे हैं।













सबका पानी

'सभी को अपनी आवश्यकता के अनुसार पर्याप्त पानी कैसे मिले' इस विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन करें। परिचर्चा के मुख्य बिंदुओं को आधार बनाते हुए रिपोर्ट तैयार करें।





दैनिक कार्यों में पानी

(क) क्या आपने कभी यह जानने का प्रयास किया है कि आपके घर में एक दिन में औसतन कितना पानी खर्च होता है? अपने घर में पानी के उपयोग से जुड़ी एक तालिका बनाइए। इस तालिका के आधार पर पता लगाइए —

- घर के कार्यों में एक दिन में लगभग कितना पानी खर्च होता है? (बालटी, घड़े या किसी अन्य बर्तन को मापक बना सकते हैं)
- आपके माँ और पिता या घर के अन्य सदस्य पानी बचाने के लिए क्या-क्या उपाय करते हैं?

(ख) क्या आपको अपनी आवश्यकतानुसार पानी उपलब्ध हो जाता है? यदि हाँ, तो कैसे? यदि नहीं, तो क्यों?

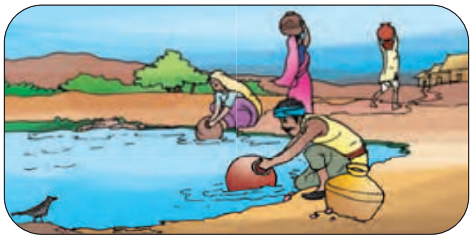
(ग) आपके घर में दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पानी का संचयन कैसे और किन पात्रों में किया जाता है?

जन-सुविधा के रूप में जल

नीचे दिए गए चित्रों को ध्यान से देखिए—











इन चित्रों के आधार पर जल आपूर्ति की स्थिति के बारे में अपने साथियों से चर्चा कीजिए और उसका विवरण लिखिए।





बिन पानी सब सून

(क) पाठ में भूजल स्तर के कम होने के कुछ कारण बताए गए हैं, जैसे— तालाबों में कचरा फेंककर भरना आदि। भूजल स्तर कम होने के और क्या-क्या कारण हो सकते हैं? पता लगाइए और कक्षा में प्रस्तुत कीजिए। (इसके लिए आप अपने सहपाठियों, शिक्षकों और घर के सदस्यों की सहायता भी ले सकते हैं।)

(ख) भूजल स्तर की कमी से हमें आजकल किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?

(ग) आपके विद्यालय, गाँव या शहर के स्थानीय प्रशासन द्वारा भूजल स्तर बढ़ाने के लिए क्या-क्या प्रयास किए जा रहे हैं, पता लगाकर लिखिए।





यह भी जानें

वर्षा-जल संग्रहण

वर्षा के जल को एकत्र करना और उसका भंडारण करके बाद में प्रयोग करना जल की उपलब्धता में वृद्धि करने का एक उपाय है। इस उपाय द्वारा वर्षा का जल एकत्र करने को 'वर्षा जल संग्रहण' कहते हैं। वर्षा जल संग्रहण का मूल उद्देश्य यही है कि "जल जहाँ गिरे वहीं एकत्र कीजिए।" वर्षा जल संग्रहण की एक तकनीक इस प्रकार है—

छत के ऊपर वर्षा-जल संग्रहण

इस प्रणाली में भवनों की छत पर एकत्रित वर्षा जल को पाइप द्वारा भंडारण टंकी में पहुँचाया जाता है। इस जल में छत पर उपस्थित मिट्टी के कण मिल जाते हैं। अत: इसका उपयोग करने से पहले इसे स्वच्छ करना आवश्यक होता है।

अपने घर या विद्यालय के आस-पास, मुहल्ले या गाँव में पता लगाइए कि वर्षा जल संग्रहण की कोई विधि अपनाई जा रही है या नहीं? यदि हाँ, तो कौन-सी विधि है? उसके विषय में लिखिए। यदि नहीं, तो अपने शिक्षक या परिजनों की सहायता से इस विषय में समाचार पत्र के संपादक को एक पत्र लिखिए।



आज की पहेली

जल के प्राकृतिक स्रोत हैं— वर्षा, नदी, झील और तालाब। दिए गए वर्ग में जल और इन प्राकृतिक स्रोतों के समानार्थी शब्द ढूँढ़िए और लिखिए।

क	मे	क	ग	ब	पा	ज	र
ल	ह	व	नी	न	र	ला	ज
अं	बु	स	र	ब	स	श	नी
म	न	रो	रि	ल	लि	य	य
य	भ	व	थ	ता	ल	श	त
ज	वा	र	म	ग	र	पा	टि
बा	रि	श	त	प्र	वा	हि	नी
व	र	त	रं	गि	णी	ट	ग







खोजबीन के लिए

पानी से संबंधित गीत या कविताओं का संकलन कीजिए और इनमें से कुछ को अपनी कक्षा में प्रस्तुत कीजिए। इसके लिए आप अपने परिजनों एवं शिक्षक अथवा पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।



झरोखे से

आपने तालाबों और नदियों से रिसकर धरती रूपी गुल्लक में जमा होने वाले पानी के संबंध में यह रोचक लेख पढ़ा। अब आप तालाबों के बनने के इतिहास के विषय में अनुपम मिश्र के एक लेख 'पाल के किनारे रखा इतिहास' का अंश पढ़िए।

पाल के किनारे रखा इतिहास

"अच्छे-अच्छे काम करते जाना", राजा ने कूड़न किसान से कहा था।

कूड़न, बुढ़ान, सरमन और कौंराई थे चार भाई। चारों सुबह जल्दी उठकर अपने खेत पर काम करने जाते। दोपहर को कूड़न की बेटी आती, पोटली में खाना लेकर।

एक दिन घर से खेत जाते समय बेटी को एक नुकीले पत्थर से ठोकर लग गई। उसे बहुत गुस्सा आया। उसने अपनी दराँती से उस पत्थर को उखाड़ने की कोशिश की। पर लो, उसकी दराँती तो पत्थर पर पड़ते ही लोहे से सोने में बदल गई। और फिर बदलती जाती हैं इस लम्बे किस्से की घटनाएँ बड़ी तेजी से। पत्थर उठाकर लड़की भागी-भागी खेत पर आती है। अपने पिता और चाचाओं को सब कुछ एक साँस में बता देती है। चारों भाइयों की साँस भी अटक जाती है। जल्दी-जल्दी सब घर लौटते हैं। उन्हें मालूम पड़ चुका है कि उनके हाथ में कोई साधारण पत्थर नहीं है, पारस है। वे लोहे की जिस चीज को छूते हैं, वह सोना बनकर उनकी आँखों में चमक भर देती है।

पर आँखों की यह चमक ज्यादा देर तक नहीं टिक पाती। कूड़न को लगता है कि देर-सबेर राजा तक यह बात पहुँच ही जाएगी और तब पारस छिन जाएगा। तो क्या यह ज्यादा अच्छा नहीं होगा कि वे खुद जाकर राजा को सब कुछ बता दे।

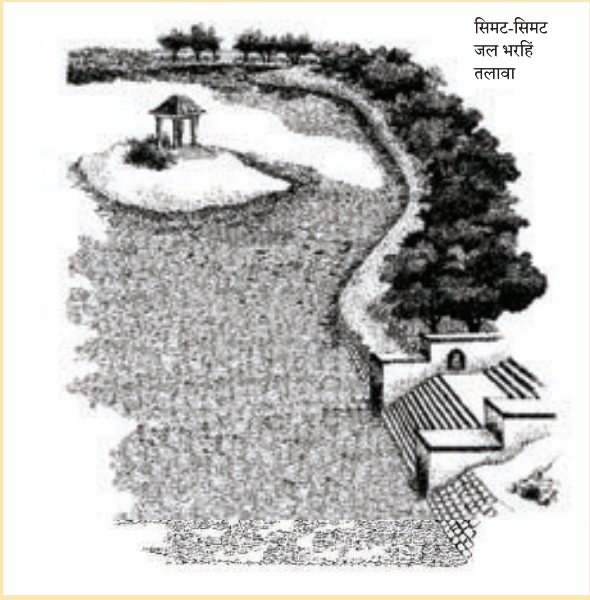
किस्सा आगे बढ़ता है। फिर जो कुछ घटता है, वह लोहे को नहीं बल्कि समाज को पारस से छुआने का किस्सा बन जाता है।

राजा न पारस लेता है, न सोना। सब कुछ कूड़न को वापस देते हुए कहता है, "जाओ इससे अच्छे-अच्छे काम करते जाना, तालाब बनाते जाना।"

यह कहानी सच्ची है, ऐतिहासिक है— नहीं मालूम। पर देश के मध्य भाग में एक बहुत बड़े हिस्से में यह इतिहास को अँगूठा दिखाती हुई लोगों के मन में रमी हुई है। यहीं के पाटन नामक क्षेत्र में चार बहुत बड़े तालाब



आज भी मिलते हैं और इस कहानी को इतिहास की कसौटी पर कसने वालों को लजाते हैं— चारों तालाब इन्हीं चारों भाइयों के नाम पर हैं। बूढ़ा सागर है, मझगवाँ में सरमन सागर है, कुआँग्राम में कौंराई सागर है तथा कुंडम गांव में कुंडम सागर। सन 1907 में गजेटियर के माध्यम से इस देश का इतिहास लिखने के लिए घूम रहे एक अंग्रेज ने भी इस इलाके में कई लोगों से यह किस्सा सुना था और फिर देखा-परखा था इन चार बड़े तालाबों को। तब भी सरमन सागर इतना बड़ा था कि उसके किनारे पर तीन बड़े-बड़े गाँव बसे थे और तीनों गाँव इस तालाब को अपने-अपने नामों से बाँट लेते थे। पर वह विशाल ताल तीनों गाँवों को जोड़ता था और सरमन सागर की तरह स्मरण किया जाता था। इतिहास ने सरमन, बुढ़ान, कौंराई और कूड़न को याद नहीं रखा लेकिन इन लोगों ने तालाब बनाए और इतिहास को उनके किनारे पर रख दिया था।


सिमट-सिमट जल भरहिं तलावा

देश के मध्य भाग में, ठीक हृदय में धड़काने वाला यह किस्सा उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम–चारों तरफ किसी न किसी रूप में फैला हुआ मिल सकता है और इसी के साथ मिलते हैं सैंकड़ों, हजारों तालाब। इनकी कोई ठीक गिनती नहीं है। इन अनगिनत तालाबों को गिनने वाले नहीं, इन्हें तो बनाने वाले लोग आते रहे और तालाब बनते रहे।

किसी तालाब को राजा ने बनाया तो किसी को रानी ने, किसी को किसी साधारण गृहस्थ ने तो किसी को किसी असाधारण साधु-संत ने— जिस किसी ने भी तालाब बनाया, वह महाराज या महात्मा ही कहलाया। एक कृतज्ञ समाज तालाब बनाने वालों को अमर बनाता था और लोग भी तालाब बनाकर समाज के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते थे।



साझी समझ

'पानी रे पानी' और 'पाल के किनारे रखा इतिहास' में आपको कौन-कौन सी बातें समान लगीं? उनके विषय में अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।



पढ़ने के लिए

विश्वेश्वरैया



आकाश में अँधेरा छाया हुआ था। बादल आकाश में मँडराते हुए एक-दूसरे से टकरा जाते तो बिजली चमक उठती और गर्जन होता। फिर मूसलाधार वर्षा होने लगी। कुछ ही देर में गड्ढे और नालियाँ पानी से भर गईं।

छः वर्षीय विश्वेश्वरैया अपने घर के बरामदे में खड़ा इस दृश्य को निहार रहा था। गली में पंक्तियों में खड़े पेड़ बारिश में धुल जाने के कारण साफ व सुंदर दिखाई दे रहे थे। पत्तियों और टहनियों से पानी की बूँदें टप-टप गिर रही थीं। थोड़ी ही दूरी पर हरे-भरे धान के खेत लहलहा रहे थे।

जहाँ विश्वेश्वरैया खड़ा था वहीं निकट की नाली का पानी उमड़-घुमड़ रहा था। उसमें भँवर भी उठ रहे थे। उसने एक जलप्रपात का रूप धारण कर लिया था। वह एक बहुत ही बड़े पत्थर को अपने साथ बहा कर ले जा रहा था जिससे उसकी शक्ति का प्रदर्शन होता था। विश्वेश्वरैया ने हवा और सूर्य की शक्ति को भी देखा था। सामूहिक रूप से वे प्रकृति की असीम शक्ति की ओर संकेत कर रहे थे। 'प्रकृति शक्ति है। मुझे प्रकृति के बारे में सब कुछ जानना चाहिए' वह छोटा-सा लड़का बुदबुदाया।

फिर उसने थोड़ी दूरी पर, निर्भीकता से मूसलाधार वर्षा में खड़ी एक आकृति को ताड़पत्र की छतरी हाथ में लिए देखा। वह उसे तुरंत पहचान गया। उसके कपड़े फटे हुए थे। वह कमजोर और भूखी लग रही थी। वह एक झोंपड़ी में रहती थी। उसके बच्चे कभी स्कूल नहीं जाते। वह गरीब थी। विश्वेश्वरैया ने सोचा 'वह इतनी गरीब क्यों है?'

उन्होंने बड़ी गंभीरता से प्रकृति और गरीबी के कारण के बारे में जानने का प्रयास किया।

वह परिवार के बड़ों से इन बातों का उत्तर जानना चाहते थे। वह अपने अध्यापकों से भी जिरह करते। वह उनसे प्रकृति के बारे में पूछते— ऊर्जा के कौन से प्रचलित स्रोत हैं? कैसे इस ऊर्जा को पकड़ कर इस्तेमाल में लाया जा सकता है?

वह यह भी पूछते कि आखिर इतने लोग गरीब क्यों हैं? नौकरानी फटी साड़ी क्यों पहनती है? वह झोपड़ी में क्यों रहती है? क्या उसे अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजना चाहिए?



धीरे-धीरे इस लड़के को प्रकृति और जीवन के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त होने लगी। उन्हें महसूस हुआ कि ज्ञान असीमित है। उसे बिना रुके, सीखते रहना होगा। तभी उन्हें उन प्रश्नों के उत्तर मिल सकते हैं जो उन्होंने उठाए थे। उन्होंने निश्चय किया कि वह जीवनपर्यंत तक छात्र बने रहेंगे क्योंकि बहुत कुछ सीखना बाकी है। इसी संकल्प में उनकी महानता की कुंजी थी।

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का जन्म मैसूर (जो अब कर्नाटक में है) के मुद्देनाहल्ली नामक स्थान पर 15 सितंबर 1861 को हुआ था। उनके पिता वैद्य थे। वर्षों पहले उनके पूर्वज आंध्र प्रदेश के मोक्षगुंडम से यहाँ आए और मैसूर में बस गए थे।

दो वर्ष की आयु से ही उनका परिचय रामायण, महाभारत और पंचतंत्र की कहानियों से हो गया था। ये कहानियाँ हर रात घर की वृद्ध महिलाएँ उन्हें सुनाती थीं। कहानियाँ शिक्षाप्रद व मनोरंजक थीं। इन कहानियों से विश्वेश्वरैया ने ईमानदारी, दया और अनुशासन जैसे मूल मानवीय मूल्यों को आत्मसात किया। विश्वेश्वरैया चिकबल्लापुर के मिडिल व हाईस्कूल में पढ़े। जब उन्हें 'गाड सेव द किंग' (ईश्वर राजा को सुरक्षित रखे) वाला गीत गाने को कहा गया तो उन्हें पता चला कि भारत एक ब्रिटिश उपनिवेश है, अपने मामलों में भी भारतीयों को कुछ कहने का अधिकार न था। भारत की अधिकांश संपत्ति विदेशियों ने हड़प ली थी।

क्या उनके घर में काम करने वाली नौकरानी विदेशी शासन के कारण गरीब है? यह प्रश्न विश्वेश्वरैया के मस्तिष्क में उमड़ता-घुमड़ता रहा। राष्ट्रीयता की चिंगारी जल उठी थी और उनके जीवन में यह अंत समय तक जलती रही। विश्वेश्वरैया जब केवल चौदह वर्ष के थे तभी उनके पिता की मृत्यु हो गई। क्या वह अपनी पढ़ाई जारी रखें? इस प्रश्न पर तब विचार-विमर्श हुआ जब उन्होंने अपनी माँ से कहा, "अम्मा, क्या मैं बंगलौर जा सकता हूँ? मैं वहाँ मामा रामैया के यहाँ रह सकता हूँ। वहाँ मैं कॉलेज में प्रवेश ले लूँगा।"

पर बेटा... तुम्हारे मामा अमीर नहीं हैं। तुम उन पर बोझ क्यों बनना चाहते हो?" उनकी माँ ने तर्क किया।

"अम्मा... मैं अपनी जरूरतों के लिए स्वयं कमाऊँगा। मैं बच्चों को ट्यूशन पढ़ा दूँगा। अपनी फीस देने और पुस्तकें खरीदने के लिए मैं काफी धन कमा लूँगा। मेरे ख्याल से मेरे पास कुछ पैसे बच भी जाएँगे, जिन्हें मैं मामा को दे दूँगा," विश्वेश्वरैया ने समझाया।

उनके पास हर प्रश्न का उत्तर था— समाधान ढूँढ़ने की क्षमता उनके पूरे जीवन में लगातार विकसित होती रही और इस कारण वह एक व्यावहारिक व्यक्ति बन गए। यह उनके जीवन का सार था और उनका संदेश था पहले जानो, फिर करो। बड़े होकर यही विश्वेश्वरैया एक महान इंजीनियर बने।

— आर. के. मूर्ति (अनुवाद — सुमन जैन)



5 नहीं होना बीमार



एक दिन मुझे साथ लेकर नानीजी हमारे पड़ोसी सुधाकर काका को देखने गईं, जो बीमार थे। वे अस्पताल में भर्ती थे। अस्पताल जाने का यह मेरा पहला अवसर था।

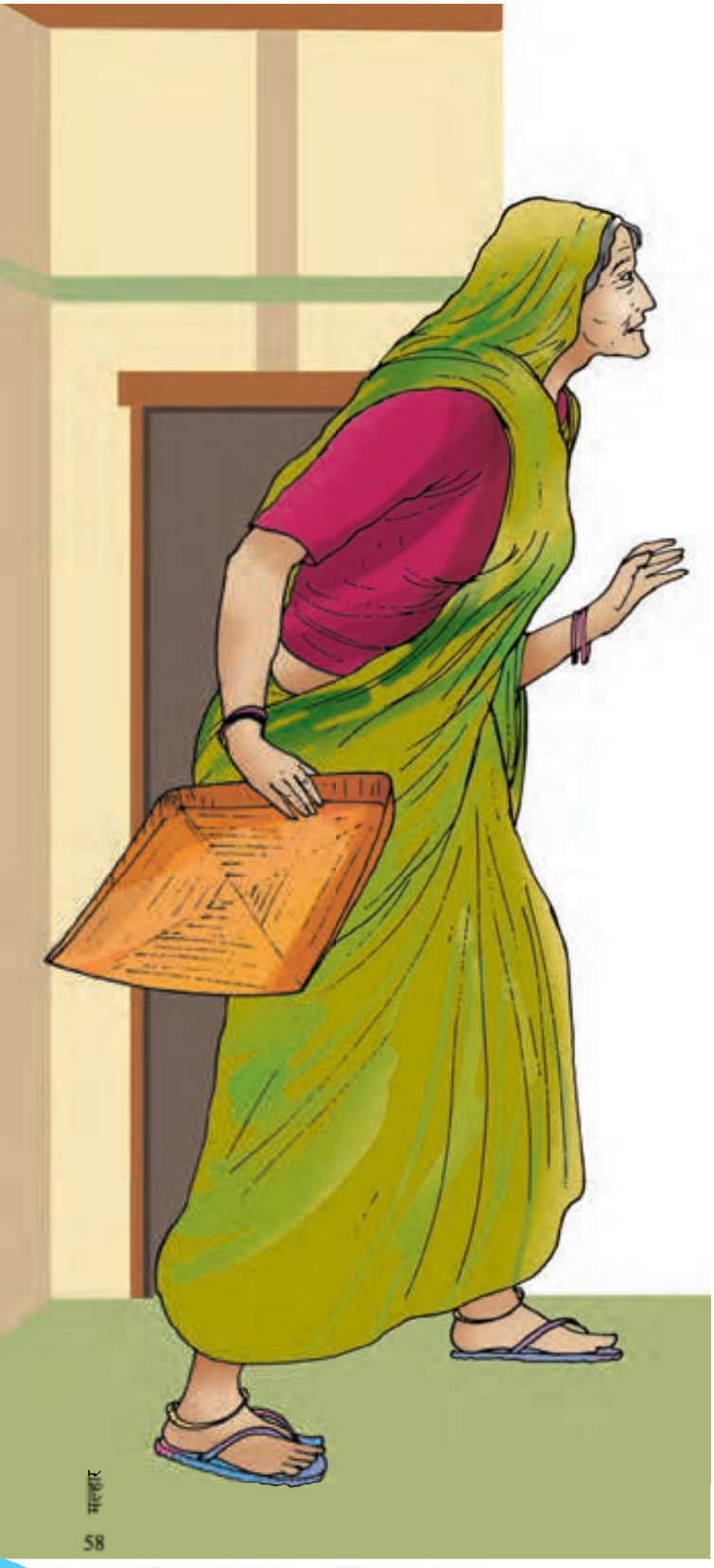
एक बड़े से वार्ड में कई एक जैसे पलंग लाइन से लगे हुए थे। सब पर एक जैसी सफेद चादर और लाल कंबल। सफेद दीवारें, ऊँची छत, खिड़कियों पर हरे परदे और फर्श एकदम चमकता हुआ। एक पलंग पर सुधाकर काका लेटे हुए थे। एकदम पास पहुँचने पर दिखाई दिया।

हमें देखकर सुधाकर काका जैसे खुश हो गए। नानीजी ने उनके सिर पर हाथ फेरा और उनके सिरहाने खड़ी हो गईं और हालचाल पूछने लगीं।

अस्पताल का माहौल मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा था। बड़ी-बड़ी खिड़कियों के पास हरे-हरे पेड़ झूम रहे थे। न ट्रैफिक का शोरगुल, न धूल, न मच्छर-मक्खी...। सिर्फ लोगों के धीरे-धीरे बातचीत करने की धीमी-धीमी गुनगुन। बाकी एकदम शांति।

तभी सफेद कपड़ों में एक नर्स आई। नर्स ने नानीजी को देखकर अभिवादन में सिर हिलाया





और काका को दवा खिलाई। नानीजी काका के लिए साबूदाने की खीर बनाकर लाई थीं। नर्स से पूछा कि खिला दूँ क्या? नर्स के हाँ कहने पर उसके जाने के बाद नानीजी ने चम्मच से धीरे-धीरे काका को साबूदाने की खीर खिलाई। काका ने बहुत स्वाद लेकर खीर खाई।

क्या ठाठ हैं बीमारों के भी। मैंने सोचा... ठाठ से साफ-सुथरे बिस्तर पर लेटे रहो और साबूदाने की खीर खाते रहो! काश! सुधाकर काका की जगह मैं होता! मैं कब बीमार पड़ूँगा!

कुछ रोज बाद एक दिन मेरा स्कूल जाने का मन नहीं किया। मैंने होमवर्क भी नहीं किया था। स्कूल जाता तो जरूर सजा मिलती। मैंने सोचा बीमार पड़ने के लिए आज का दिन बिलकुल ठीक रहेगा। चलो बीमार पड़ जाते हैं।

मैं रजाई से निकला ही नहीं। नानीजी उठाने आईं तो मैंने कहा, "मैं आज बीमार हूँ।"

"क्या हो गया?"

"मेरे सिर में दर्द हो रहा है। पेट भी दुख रहा है और मुझे बुखार भी है।"

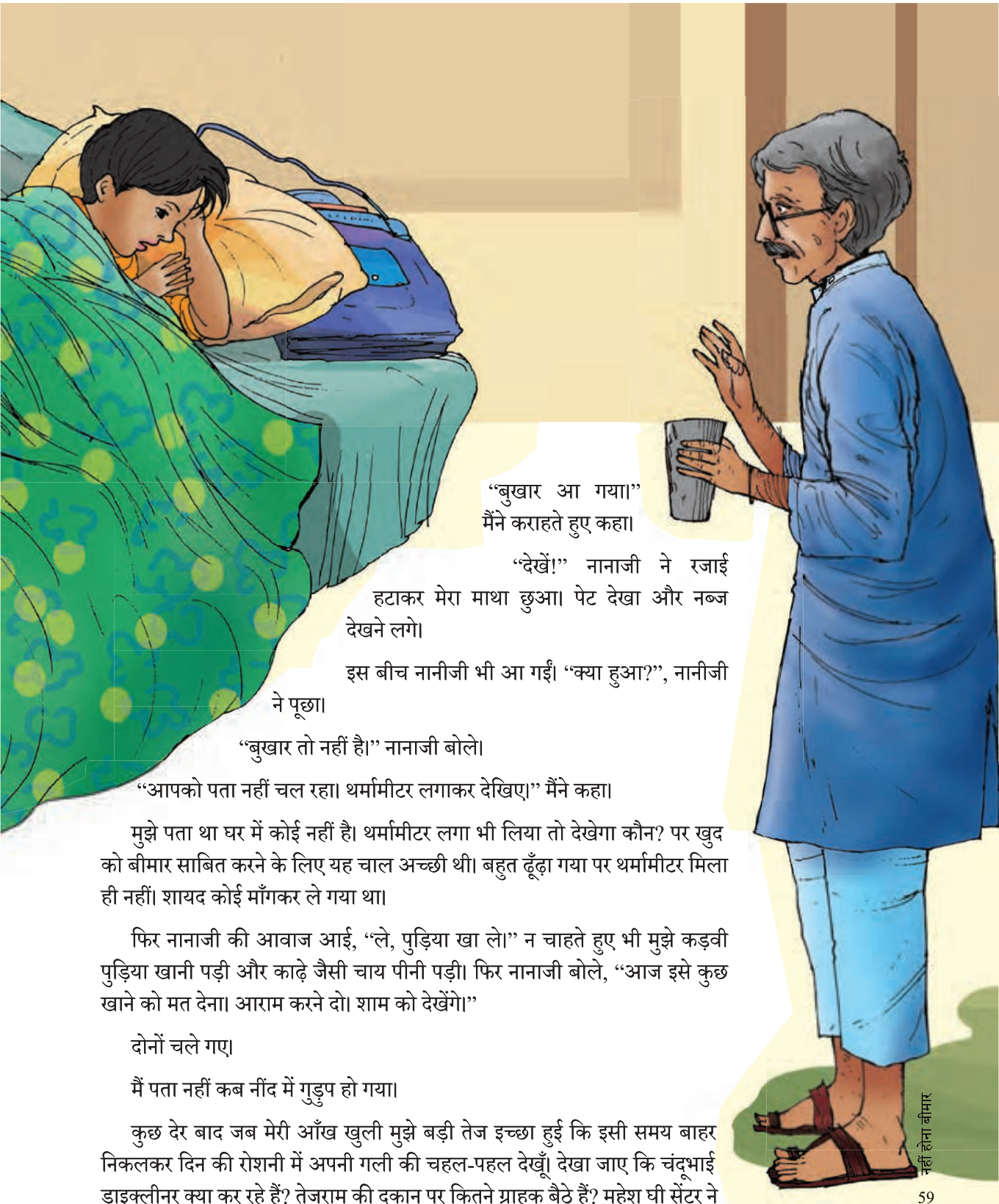
नानीजी चली गईं।

मैं रजाई में पड़ा-पड़ा घर में चल रही गतिविधियों का अनुमान लगाता रहा। अब छोटे मामा नहाकर निकले। अब कुसुम मौसी रोज की तरह नाश्ता छोड़कर कॉलेज बस पकड़ने भागीं। अब मुन्नू अपना जूता ढूँढ़ रहा है। अब छोटे मामा ने साइकिल उठाई। अब सब चले गए। अब घर में मैं अकेला रह गया।

पता नहीं कब झपकी-सी आ गई।

तभी नानाजी आए। "क्या हो गया? क्या हो गया?"





"बुखार आ गया।" मैंने कराहते हुए कहा।

"देखें!" नानाजी ने रजाई हटाकर मेरा माथा छुआ। पेट देखा और नब्ज देखने लगे।

इस बीच नानीजी भी आ गईं। "क्या हुआ?", नानीजी ने पूछा।

"बुखार तो नहीं है।" नानाजी बोले।

"आपको पता नहीं चल रहा। थर्मामीटर लगाकर देखिए।" मैंने कहा।

मुझे पता था घर में कोई नहीं है। थर्मामीटर लगा भी लिया तो देखेगा कौन? पर खुद को बीमार साबित करने के लिए यह चाल अच्छी थी। बहुत ढूँढ़ा गया पर थर्मामीटर मिला ही नहीं। शायद कोई माँगकर ले गया था।

फिर नानाजी की आवाज आई, "ले, पुड़िया खा ले।" न चाहते हुए भी मुझे कड़वी पुड़िया खानी पड़ी और काढ़े जैसी चाय पीनी पड़ी। फिर नानाजी बोले, "आज इसे कुछ खाने को मत देना। आराम करने दो। शाम को देखेंगे।"

दोनों चले गए।

मैं पता नहीं कब नींद में गुडुप हो गया।

कुछ देर बाद जब मेरी आँख खुली मुझे बड़ी तेज इच्छा हुई कि इसी समय बाहर निकलकर दिन की रोशनी में अपनी गली की चहल-पहल देखूँ। देखा जाए कि चंदूभाई ड्राइक्लीनर क्या कर रहे हैं? तेजराम की दुकान पर कितने ग्राहक बैठे हैं? महेश घी सेंटर ने



मलाई का भगोना आँच पर चढ़ाया या नहीं और टेलीफोन के तारों पर कितनी चिड़िया बैठी हैं? लेकिन मजबूरी थी। चाहे जितनी ऊब हो, लेटे ही रहना था।

कुछ देर इधर-उधर की, स्कूल की, दोस्तों की बातें सोचता रहा... फिर लेटे-लेटे पीठ दुखने लगी तो उठकर बैठ गया। लेकिन बाहर कुछ आहट होते ही फिर से लेट गया।

नानाजी आए। बोले — "अब कैसा है सिरदर्द?" मैंने कहा, "ठीक है" फिर भी एक पुड़िया और खिला गए।

अचानक मुझे भूख-सी लगी। फल या साबूदाने की खीर मिलने की उम्मीद की तो सुबह ही हत्या हो चुकी थी। अब नानीजी से जाकर कहूँ कि भूख लग रही है तो वे क्या करेंगी? ज्यादा से ज्यादा यही कि दूध पी ले। या नानाजी से पूछने चली जाएँगी — वो कह रहा है भूख लगी है। और फिर नानाजी क्या कहेंगे? वही जो सुबह कह रहे थे — तबियत ढीली हो तो सबसे अच्छा उपाय है भूखे रहना। इससे सारे विकार निकल जाएँगे।

क्या मुसीबत है! पड़े रहो! आखिर कब तक कोई पड़ा रह सकता है? इससे तो स्कूल चला जाता तो ही ठीक रहता। सजा मिलती तो मिल जाती। कितना मजा आता जब रिसेस में ठेले पर जाकर नमक मिर्च लगे अमरूद खाते कटर-कटर।

फिर झपकी लग गई।

लेकिन भूख के कारण ठीक से नींद भी नहीं आ रही थी। और आँख जरा लगती भी तो खाने ही खाने की चीजें दिखाई देतीं। गरमागरम खस्ता कचौड़ी... मावे की बर्फी... बेसन की चिक्की... गोलगप्पे। और सबसे ऊपर साबूदाने की खीर! पता नहीं क्यों साबूदाने की खीर सिर्फ उपवास और बीमारी में ही बनाई जाती है। जैसे गुझिया सिर्फ होली-दिवाली और पंजीरी सिर्फ पूर्णिमा के दिन ही बनाई जाती है। क्यों? क्या ये चीजें जब इच्छा हो तब नहीं बनाई जा सकतीं। कोई मना करता है?

हे भगवान! यह तो अच्छी खासी बोरियत हो गई। पूरा दिन कोई कैसे लेटा रहे? और शाम को...। क्या शाम को भी नानाजी बाहर जाने देंगे? सारे बच्चे हल्ला मचाते हुए आँगन में खेल रहे होंगे और मैं बिस्तर में पड़ा झख मार रहा होऊँगा। अक्लमन्द! और बनो बीमार। और आज दिया गया होमवर्क! किससे कॉपी माँगोगे? मैं रुआँसा हो गया।

पास के कमरे में होती खटर-पटर से अंदाजा हुआ कि मुन्नू स्कूल से आ गया है। तो क्या एक बज गया? अब बरतनों की आवाज आ रही है। शायद सब लोग खाना खाने बैठ रहे हैं। मुन्नू एक बार भी मुझे देखने नहीं आया। आया भी होगा तो दबे पाँव आया होगा और मुझे सोता जान लौट गया होगा।

...वो खाना खा रहे हैं। चबाने की आवाजें आ रही हैं। देखो! उन्होंने एक बार भी आकर नहीं पूछा कि तू क्या खाएगा? पूछते तो मैं साबूदाने की खीर ही तो माँगता। कोई ताजमहल तो नहीं



माँग लेता। लेकिन नहीं। भूखे रहो!! इससे सारे विकार निकल जाएँगे। विकार निकल जाएँ बस। चाहे इस चक्कर में तुम खुद शिकार हो जाओ।

... आज क्या खाना बना होगा? खुशबू तो दाल-चावल की आ रही है। अरहर की दाल में हींग-जीरे का बघार और ऊपर से बारीक कटा हरा धनिया और आधा चम्मच देसी घी। फिर उसमें उन्होंने नीबू निचोड़ा होगा। थोड़ा-सा इस बीमार को भी दे दे कोई।

...लेकिन खुशबू तो किसी और चीज की है। क्या हरी मिर्च तली गई है? उसे दाल-चावल में मसलकर खा रहे हैं। जब रहा नहीं गया तो मैं रजाई फेंककर खड़ा हो गया। दबे पाँव दरवाजे तक गया और चुपके से झाँककर देखा।

हाँ, दाल-चावल, तली हुई हरी मिर्च।

लेकिन मुन्नू आम चूस रहा था। आम! इस मौसम में! जरूर बंबई वाले चाचाजी ने भेजे होंगे। कैसे चूस रहा है। पूरी गुठली मुँह में ठूंसे। जैसे आम कभी देखे न हों। भुक्कड़ कहीं का। पूरा हाथ भी सान रहा है।

मैं जलन, गुस्से और कुढ़न में पाँव पटकता वापस बिस्तर में आ गया। उस पूरे दिन मुझे भूखे पेट ही रहना पड़ा। सारे विकार निकल गए।

इसके बाद स्कूल से छुट्टी मारने के लिए मैंने बीमारी का बहाना कभी नहीं बनाया।

— *स्वयं प्रकाश*



लेखक से परिचय



(1947–2019)

स्वयं प्रकाश हिंदी के जाने-माने लेखक थे। उनकी कहानियाँ बच्चों और बड़ों के दिलों को छू जाती हैं। स्वयं प्रकाश की कहानियाँ पढ़ते हुए लगता है मानो वे हमारे ही जीवन की कहानियाँ हैं, हमारे ही अनुभव उन्होंने लिख दिए हैं। उन्होंने बच्चों के लिए कई मनोरंजक कहानियाँ लिखीं हैं, जिनमें उनके साहसिक कारनामे, मित्रता और जीवन के छोटे-छोटे लेकिन महत्वपूर्ण पहलुओं को बड़ी रोचकता से प्रस्तुत किया गया है।

स्वयं प्रकाश की कहानियों की विशेषता यह है कि उन्हें पढ़ते समय ऐसा लगता है, जैसे कोई पुराना मित्र बातें कर रहा हो। उनकी कहानियाँ न केवल मनोरंजन करती हैं बल्कि सोचने-समझने के लिए नई दिशाएँ भी देती हैं। *मात्रा और भार*, *अगली किताब*, *ज्योति रथ के सारथी*, *फीनिक्स* आदि इनकी कई रचनाएँ हैं।



पाठ से



मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सही उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।



(1) बच्चे के विद्यालय न जाने का मुख्य कारण क्या था?

- उसका विद्यालय जाने का मन नहीं था।
- उसका साबूदाने की खीर खाने का मन था।
- उसने गृहकार्य नहीं किया था।
- उसे बुखार हो गया था।

(2) कहानी के अंत में बच्चे ने कहा, "इसके बाद स्कूल से छुट्टी मारने के लिए मैंने बीमारी का बहाना कभी नहीं बनाया।" बच्चे ने यह निर्णय लिया क्योंकि—

- घर में रहने के बजाय विद्यालय जाना अधिक रोचक है।
- बीमारी का बहाना बनाने से साबूदाने की खीर नहीं मिलती।
- झूठ बोलने से झूठ के खुलने का डर हमेशा बना रहता है।
- इस बहाने के कारण उसे दिनभर अकेले और भूखे रहना पड़ा।

(3) "लेटे-लेटे पीठ दुखने लगी" इस बात से बच्चे के बारे में क्या पता चलता है?

- उसे बिस्तर पर लेटे रहने के कारण ऊब हो गई थी।
- उसे अपनी बीमारी की कोई चिंता नहीं रह गई थी।
- वह बिस्तर पर आराम करने का आनंद ले रहा था।
- बीमारी के कारण उसकी पीठ में दर्द हो रहा था।

(4) "क्या ठाठ हैं बीमारों के भी!" बच्चे के मन में यह बात आई क्योंकि—

- बीमार व्यक्ति को बहुत आराम करने को मिलता है।
- बीमार व्यक्ति को अच्छे खाने का आनंद मिलता है।
- बीमार व्यक्ति को विद्यालय नहीं जाना पड़ता है।
- बीमार व्यक्ति अस्पताल में शांति से लेटा रहता है।



(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?





मिलकर करें मिलान

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थों से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने परिजनों और शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

	शब्द		अर्थ
1.	साबूदाना	1.	किसी विशिष्ट कार्य के लिए घेरकर बनाया हुआ स्थान।
2.	वार्ड	2.	एक प्रकार का जाड़े का ओढ़ना जिसका कपड़ा दोहरा होता है और जिसमें रुई भरी होती है।
3.	नर्स	3.	शरीर का तापमान (जैसे बुखार) नापने का एक छोटा यंत्र।
4.	रजाई	4.	कई तरह की जड़ी-बूटियों और औषधियों को उबालकर उनके रस से बना पेय होता है। इसे सर्दी-जुकाम, खाँसी-बुखार और पाचन से जुड़ी समस्याओं में लाभदायक माना जाता है।
5.	थर्मामीटर	5.	रेशमी, ऊनी, मलमल जैसे नाजुक कपड़ों को पानी, साबुन और डिटर्जेंट के बिना मशीनों से साफ करने वाला व्यक्ति।
6.	काढ़ा	6.	उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में स्थित 17वीं सदी में निर्मित एक विश्व-प्रसिद्ध स्मारक जो सफेद संगमरमर से बना है।
7.	ड्राइक्लीनर	7.	एक दाल जिसे तुअर भी कहते हैं।
8.	ताजमहल	8.	साग़ू नामक वृक्ष के तने का गूदा, सागूदाना, यह पहले आटे के रूप में होता है और फिर कूटकर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है।
9.	अरहर	9.	वह व्यक्ति जो रोगियों, घायलों या वृद्धों आदि की देखभाल करे।



पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए—

(क) "मैंने सोचा बीमार पड़ने के लिए आज का दिन बिलकुल ठीक रहेगा। चलो बीमार पड़ जाते हैं।"

(ख) "देखो! उन्होंने एक बार भी आकर नहीं पूछा कि तू क्या खाएगा? पूछते तो मैं साबूदाने की खीर ही तो माँगता। कोई ताजमहल तो नहीं माँग लेता। लेकिन नहीं! भूखे रहो!! इससे सारे विकार निकल जाएँगे। विकार निकल जाएँ बस। चाहे इस चक्कर में तुम खुद शिकार हो जाओ।"





सोच-विचार के लिए



पाठ को एक बार फिर ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) अस्पताल में बच्चे को कौन-कौन सी चीजें अच्छी लगीं और क्यों?

(ख) कहानी के अंत में बच्चे को महसूस हुआ कि उसे स्कूल जाना चाहिए था। क्या आपको लगता है कि उसका निर्णय सही था? क्यों?

(ग) जब बच्चा बीमार पड़ने का बहाना बनाकर बिस्तर पर लेटा रहा तो उसके मन में कौन-कौन से भाव आ रहे थे?

(संकेत— मन में उत्पन्न होने वाले विकार या विचार को भाव कहते हैं, उदाहरण के लिए— क्रोध, दुख, भय, करुणा, प्रेम आदि।)



(घ) कहानी में बच्चे ने सोचा था कि "ठाठ से साफ-सुथरे बिस्तर पर लेटे रहो और साबूदाने की खीर खाते रहो।" आपको क्या लगता है, असल में बीमार हो जाने और इस बच्चे की सोच में कौन-कौन सी समानताएँ और अंतर होंगे?

(संकेत — आप अपने अनुभवों के आधार पर इस प्रश्न पर विचार कर सकते हैं कि कहानी वाले बच्चे की कल्पना वास्तविकता से कितनी अलग है।)

(ङ) नानीजी और नानाजी ने बच्चे को बीमारी की दवा दी और उसे आराम करने को कहा। बच्चे को खाना नहीं दिया गया। क्या आपको लगता है कि उन्होंने सही किया? आपको ऐसा क्यों लगता है?



अनुमान और कल्पना से

(क) कहानी के अंत में बच्चा नानाजी और नानीजी को सब कुछ सच-सच बताने का निर्णय कर लेता तो कहानी में आगे क्या होता?

(संकेत — उसका दिन कैसे बदल जाता? उसकी सोच और अनुभव कैसे होते?)





(ख) कहानी में बच्चे की नानीजी के स्थान पर आप हैं। आप सारे नाटक को समझ गए हैं लेकिन चाहते हैं कि बच्चा सारी बात आपको स्वयं बता दे। अब आप क्या करेंगे?

(संकेत — इस सवाल में आपको नानीजी की जगह लेकर सोचना है और एक मनोरंजक योजना बनानी है जिससे बच्चा आपको स्वयं सारी बातें बता दे।)

(ग) कहानी में बच्चे के स्थान पर आप हैं और घर में अकेले हैं। अब आप ऊबने से बचने के लिए क्या-क्या करेंगे?

(घ) कहानी के अंत में बच्चे को लगा कि उसे स्कूल जाना चाहिए था। कल्पना कीजिए, अगर वह स्कूल जाता तो उसका दिन कैसा होता? अगले दिन जब वह स्कूल गया होगा तो उसने क्या-क्या किया होगा?

(ङ) कहानी में नानाजी और नानीजी ने बच्चे की बीमारी ठीक करने के लिए उसे दवाई दी और खाने के लिए कुछ नहीं दिया। अगर आप नानीजी या नानाजी की जगह होते तो क्या-क्या करते?



कहानी की रचना

"अस्पताल का माहौल मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा था। बड़ी-बड़ी खिड़कियों के पास हरे-हरे पेड़ झूम रहे थे। न ट्रैफिक का शोरगुल, न धूल, न मच्छर-मक्खी...। सिर्फ लोगों के धीरे-धीरे बातचीत करने की धीमी-धीमी गुनगुन। बाकी एकदम शांति।"

इन पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन पंक्तियों में ऐसा लग रहा है मानो हमारी आँखों के सामने अस्पताल का चित्र-सा बन गया हो। लेखन में इसे 'चित्रात्मक भाषा' कहते हैं। अनेक लेखक अपनी रचना को रोचक और सरस बनाने के लिए उपयुक्त स्थानों पर अनेक वस्तुओं, कार्यों, स्थानों आदि का विस्तार से वर्णन करते हैं।

लेखक ने इस कहानी को सरस और रोचक बनाने के लिए और भी अनेक तरीकों का उपयोग किया है। उदाहरण के लिए, उन्होंने कहानी में 'बच्चे द्वारा कल्पना करने' का भी प्रयोग किया है (जब बच्चा अकेले लेटे-लेटे घर और बाहर के लोगों के बारे में सोच रहा है)। इस कहानी में ऐसी कई विशेषताएँ छिपी हैं।



(क) इस पाठ को एक बार फिर से पढ़िए और अपने समूह में मिलकर इस पाठ की अन्य विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

(ख) कहानी में से निम्नलिखित के लिए उदाहरण खोजकर लिखिए—

विशेष बिंदु	कहानी में से उदाहरण
बच्चे द्वारा पिछली बातों को याद किया जाना	
हास्य यानी हँसी-मजाक का उपयोग किया जाना	
बच्चे द्वारा सोचने के तरीके में बदलाव आना	
कहानी में किसी का किसी बात से अनजान होना	
बच्चे द्वारा स्वयं से बातें किया जाना	



समस्या और समाधान

कहानी को एक बार पुन: पढ़कर पता लगाइए—

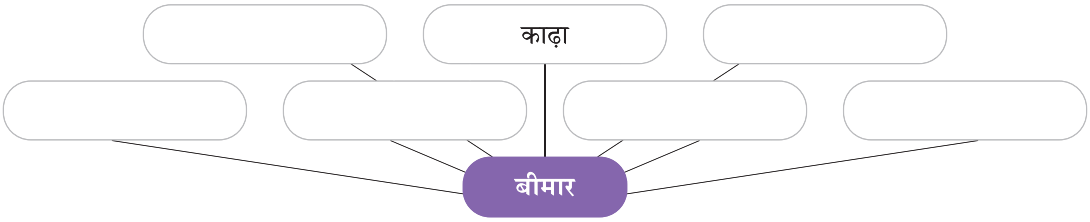
(क) बच्चे के सामने क्या समस्या थी? उसने उस समस्या का क्या समाधान निकाला?

(ख) नानीजी-नानाजी के सामने क्या समस्या थी? उन्होंने उस समस्या का क्या समाधान निकाला?



शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए स्थानों में 'बीमार' से जुड़े शब्द पाठ में से चुनकर लिखिए—







खोजबीन

कहानी में से वे वाक्य ढूँढ़कर लिखिए जिनसे पता चलता है कि—

(क) कहानी में सर्दी के मौसम की घटनाएँ बताई गई हैं।

(ख) बच्चे को बहाना बनाने के परिणाम का आभास हो गया।

(ग) बच्चे को खाना-पीना बहुत प्रिय है।

(घ) बच्चे को स्कूल जाना अच्छा लगता है।



शीर्षक

(क) आपने जो कहानी पढ़ी है, इसका नाम 'नहीं होना बीमार' है। अपने समूह में चर्चा करके लिखिए कि इस कहानी का यह नाम उपयुक्त है या नहीं। अपने उत्तर के कारण भी बताइए।

(ख) यदि आपको इस कहानी को कोई अन्य नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा, यह भी बताइए।



अभिनय

कहानी में से चुनकर कुछ संवाद नीचे दिए गए हैं। आपको इन्हें अभिनय के साथ बोलकर दिखाना है। प्रत्येक समूह से बारी-बारी से छात्र/छात्राएँ कक्षा में सामने आएँगे और एक संवाद अभिनय के साथ बोलकर दिखाएँगे—

1. "बुखार आ गया।" मैंने कराहते हुए कहा।
2. "आपको पता नहीं चल रहा। थर्मामीटर लगाकर देखिए।" मैंने कहा।
3. "मेरे सिर में दर्द हो रहा है। पेट भी दुख रहा है और मुझे बुखार भी है।"
4. नानाजी आए। बोले, "अब कैसा है सिरदर्द?"
5. फिर नानाजी बोले, "आज इसे कुछ खाने को मत देना। आराम करने दो। शाम को देखेंगे।"



चेहरों पर मुस्कान, मुँह में पानी

(क) इस कहानी में अनेक रोचक घटनाएँ हैं जिन्हें पढ़कर चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। इस कहानी में किन बातों को पढ़कर आपके चेहरे पर भी मुस्कान आ गई थी? उन्हें रेखांकित कीजिए।

(ख) इस कहानी में किन वाक्यों को पढ़कर आपके मुँह में पानी आ गया था? उन्हें रेखांकित कीजिए।

(इन्हें रेखांकित करने के लिए आप किसी अन्य रंग का उपयोग कर सकते हैं।)







लेखन के अनोखे तरीके

मैं बिना आवाज किए दरवाजे तक गया और ऐसे झाँककर देखने लगा जिससे किसी को पता न चले कि मैं बिस्तर से उठ गया हूँ।

इस बात को कहानी में इस प्रकार विशेष रूप से लिखा गया है—

"दबे पाँव दरवाजे तक गया और चुपके से झाँककर देखा।"

इस कहानी में अनेक स्थानों पर वाक्यों को विशेष ढंग से लिखा गया है। साधारण बातों को कुछ अलग तरह से लिखने से लेखन की सुंदरता बढ़ सकती है।

नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। कहानी में ढूँढ़िए कि इन बातों को कैसे लिखा गया है—

1. ऐसा लगा मानो हमें देखकर सुधाकर काका खुश हो गए।
2. खिड़कियाँ बहुत बड़ी थीं और उनके बाहर हरे पेड़ हवा से हिल रहे थे।
3. वहाँ केवल लोगों के फुसफुसाने की आवाजें आ रही थीं।
4. फुसफुसाने की आवाजों के सिवा वहाँ कोई आवाज नहीं थी।
5. बीमार लोगों के बहुत मजे होते हैं।
6. मैं झूठमूठ बीमार पड़ जाता हूँ।





विराम चिह्न

"देखें!" नानाजी ने रजाई हटाकर मेरा माथा छुआ। पेट देखा और नब्ज देखने लगे।

इस बीच नानीजी भी आ गईं। "क्या हुआ?", नानीजी ने पूछा।





पिछले पृष्ठ पर दिए गए वाक्यों को ध्यान से देखिए। इन वाक्यों में आपको कुछ शब्दों से पहले या बाद में कुछ चिह्न दिखाई दे रहे हैं। इन्हें विराम चिह्न कहते हैं।

अपने समूह के साथ मिलकर नीचे दिए गए विराम चिह्न को कहानी में ढूँढ़िए। ध्यानपूर्वक देखकर समझिए कि इनका प्रयोग वाक्यों में कहाँ-कहाँ किया जाता है। आपने जो पता किया, उसे नीचे लिखिए—

विराम चिह्न		कहाँ प्रयोग किया जाता है
पूर्ण विराम	।	
अल्प विराम	,	
प्रश्नवाचक चिह्न	?	
विस्मयादिबोधक चिह्न	!	
उद्धरण चिह्न	“ ”	

आवश्यकता हो तो इस प्रश्न का उत्तर पता करने के लिए आप अपने परिजनों, शिक्षकों, पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता ले सकते हैं।



कैसी होगी गली

“मुझे बड़ी तेज इच्छा हुई कि इसी समय बाहर निकलकर दिन की रोशनी में अपनी गली की चहल-पहल देखूँ”

आपने कहानी में बच्चे के घर के साथ वाली गली के बारे में बहुत-सी बातें पढ़ी हैं। उन बातों और अपनी कल्पना के आधार पर उस गली का एक चित्र बनाइए।



पाठ से आगे



आपकी बात

(क) बच्चे ने अस्पताल के वातावरण का विस्तार से सुंदर वर्णन किया है। इसी प्रकार आप अपनी कक्षा का वर्णन कीजिए।

(ख) कहानी में बच्चे को घर में अकेले दिन भर लेटे रहना पड़ा था। क्या आप कभी कहीं अकेले रहे हैं? उस समय आपको कैसा लग रहा था? आपने क्या-क्या किया था?

(ग) कहानी में आम खाने वाले मुन्नू को देखकर बच्चे को ईर्ष्या हुई थी। क्या आपको कभी किसी से या किसी को आपसे ईर्ष्या हुई है? आपने तब क्या किया था ताकि यह भावना दूर हो जाए?



(घ) कहानी में नानाजी-नानीजी बच्चे का पूरा ध्यान रखने का प्रयास करते हैं। आपके घर और विद्यालय में आपका ध्यान कौन-कौन रखते हैं? कैसे?

(ङ) आप अपने परिजनों और मित्रों का ध्यान कैसे रखते हैं? क्या-क्या करते हैं या क्या-क्या नहीं करते हैं ताकि उन्हें कम-से-कम परेशानी हो?



बहाने



(क) कहानी में बच्चे ने बीमारी का बहाना बनाया ताकि उसे स्कूल न जाना पड़े। क्या आपने कभी किसी कारण से बहाना बनाया है? यदि हाँ, तो उसके बारे में बताइए। उस समय आपके मन में कौन-कौन से भाव आ-जा रहे थे? आप कैसा अनुभव कर रहे थे?

(ख) आमतौर पर बनाए जाने वाले बहानों की एक सूची बनाइए।

(ग) बहाने क्यों बनाने पड़ते हैं? बहाने न बनाने पड़ें, इसके लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?



अनुमान

"मैं रजाई में पड़ा-पड़ा घर में चल रही गतिविधियों का अनुमान लगाता रहा।"

कहानी में बच्चे ने अनेक प्रकार के अनुमान लगाए हैं। क्या आपने कभी किसी अनदेखे व्यक्ति/वस्तु/पशु-पक्षी/स्थान आदि के विषय में अनुमान लगाए हैं? किसके बारे में? क्या? कब? विस्तार से बताइए।

(संकेत — जैसे पेड़ से आने वाली आवाज सुनकर किसी प्राणी का अनुमान लगाना; कहीं दूर रहने वाले किसी संबंधी/रिश्तेदार के विषय में सुनकर उसके संबंध में अनुमान लगाना।)



घर का सामान

"बहुत ढूँढ़ा गया पर थर्मामीटर मिला ही नहीं। शायद कोई माँगकर ले गया था।"

कहानी में बच्चे के घर पर थर्मामीटर (तापमापी) खोजने पर वह मिल नहीं पाता। आमतौर पर हमारे घरों में कोई न कोई ऐसी वस्तु होती है जिसे खोजने पर भी वह नहीं मिलती, जिसे कोई माँगकर ले जाता है या हम जिसे किसी से माँगकर ले आते हैं। अपने घर को ध्यान में रखते हुए ऐसी वस्तुओं की सूची बनाइए —

जो खोजने पर भी नहीं मिलती हैं	जो कोई माँगकर ले जाते हैं	जो आप किसी से माँगकर लाते हैं





खान-पान और आप

(क) कहानी में सुधाकर काका को बीमार होने पर साबूदाने की खीर दी गई थी। आपके घर में किसी के बीमार होने पर उसे क्या-क्या खिलाया जाता है?

(ख) कहानी में बच्चे को बहुत-सी चीजें खाने का मन है। आपका क्या-क्या खाने का बहुत मन करता है?

(ग) कहानी में बच्चा सोचता है कि साबूदाने की खीर सिर्फ बीमारी या उपवास में क्यों मिलती है। आपके घर में ऐसा क्या-क्या है, जो केवल विशेष अवसरों या त्योहारों पर ही बनता है?

(घ) कहानी में बच्चा सोचता है कि अगर वह स्कूल जाता तो उसे ठेले पर नमक-मिर्च वाले अमरूद खाने को मिलते। आप अपने विद्यालय में क्या-क्या खाते-पीते हैं? विद्यालय में आपका रुचिकर भोजन क्या है?

(ङ) इस कहानी में भोजन से जुड़ी बच्चे की कई रोचक बातें बताई गई हैं। आपके बचपन की भोजन से जुड़ी कोई विशेष याद क्या है, जिसे आप अब भी याद करते हैं?

(च) कहानी में बच्चा भोजन की सुंगध से रजाई फेंककर रसोई में झाँकने लगा। क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि घर में किसी विशेष खाने की सुंगध से आप भी रसोई में जाकर तुरंत देखना चाहते हैं कि क्या पक रहा है? आपको किस-किस खाने की सुंगध सबसे अधिक पसंद है?



आज की पहेली

कहानी में आपने खाने-पीने की अनेक वस्तुओं के बारे में पढ़ा है। अब हम आपके सामने खाने-पीने की वस्तुओं या व्यंजनों से जुड़ी कुछ पहेलियाँ लाए हैं। इन्हें बूझिए और उत्तर लिखिए—

पहेली	उत्तर
1. रोटी जैसा होता है ये, पर आलू से भरा-भरा घी-तेल साथी हैं इसके, दही-चटनी से हरा-भरा	
2. दाल-चावल का मेल है यह तो, भारत भर में तुम इसे पाओ, दक्षिण में ये खूब है बनता, चटनी-सांभर संग-संग खाओ, गोल-तिकोना इसका आकार, गरम-गरम तुम इसे बनाओ, कौन-सा व्यंजन होता है यह, बोलो बोलो नाम बताओ।	
3. नाश्ते का यह बड़ा है खास, महाराष्ट्र में इसका वास, मिर्च-मसाले से भरपूर, संग बटाटा भी मशहूर, चटपटी चटनी लगी किसे? बूझो नाम तो खाएँ इसे!	
4. बेसन से बने चौकोर या गोल, गुजरात में बड़ा है बोल। खाने में नर्म, पानी भरे, धनिया मिर्ची संग सजे।	



5. गोल-गोल पानी से भरके, चटनी सोंठ संग इसे खाओ उत्तर-दक्षिण पूरब-पश्चिम, गली-मुहल्लों में भी पाओ। खट्टी-मीठी, तीखी हाय, खाना तो इसे हर कोई चाहे!	
6. हरे साग संग मुझको पाओ, मक्खन के संग मुझको खाओ। आटा मेरा हल्का पीला, स्वाद मेरा है बड़ा रंगीला।	
7. आग में पकती हूँ, सोंधा-सा स्वाद, साथ में खाओ चूरमा, बन जाए फिर बात, गरम दाल से मुझको प्यार, राजस्थान का मैं उपहार।	
8. गोल-गोल और श्वेत रंग का रस से भरा हुआ हूँ खूब। मीठी दुनिया का महाराजा चाशनी मीठी डूब-डूब।	



शब्दकोश



यहाँ आपके लिए एक छोटा-सा शब्दकोश दिया गया है। इस शब्दकोश में वे शब्द हैं, जो विभिन्न पाठों में आए हैं और आपके लिए नए हो सकते हैं। किसी-किसी शब्द के कई अर्थ भी हो सकते हैं। पाठ के संदर्भ से जोड़कर आप यह अनुमान स्वयं लगाएँ कि कौन-सा अर्थ पाठ के लिए अधिक उपयुक्त है।

कहीं-कहीं शब्दों के अनेक समानार्थी भी दिए गए हैं। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे। यह शब्दकोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में सहायता करेगा अपितु शब्दों की सही वर्तनी भी सिखाएगा।

शब्द का अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया गया है। इन संकेतों से हमें शब्दों की भाषा और व्याकरण संबंधी जानकारी मिलती है। यहाँ जो संकेताक्षर अथवा संक्षिप्त रूप प्रयुक्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं—

अं. – अंग्रेज़ी	अ. – अव्यय	अ. – अरबी	अ.क्रि. – अकर्मक क्रिया
पु. – पुंलिंग	फा. – फारसी	वि. – विशेषण	सं. – संस्कृत
स.क्रि. – सकर्मक क्रिया	सर्व. – सर्वनाम	स्त्री. – स्त्रीलिंग	

अ

- अकाल [पु.सं.] – सूखा, अयोग्य या अनियत काल, कुसमय, अनवसर, परमात्मा
- अदृश्य [वि.सं.] – जो दिखाई न दे, जो देखा न जा सके, अगोचर, लुप्त, गायब
- अधर [वि.सं.] – होंठ, नीचे का ओठ, अंतरिक्ष, पाताल, दक्षिण दिशा
- अनोखी [वि.] – अनूठा, अद्‌भुत, अपूर्व, नया, सुंदर
- अनौपचारिक [वि.सं.] – नियम आदि का पालन न किया गया हो
- अभिवादन [पु.सं.] – प्रणाम करना, छोटे की ओर से बड़े को नमस्कार, स्तुति
- असफल [वि.सं.] – विफल, नाकामयाब

आ

- आखेटक [पु.सं.] – शिकारी, शिकार
- आग्रही [वि.सं.] – आग्रह करने वाला
- आजीविका [स्त्री.सं.] – रोजगार, रोजी, धंधा
- आमोद [पु.सं.] – हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, बिखरने और फैलने वाली सुगंध, सुरभि
- आवन [पु.] – आगमन



- आवरण [पु.सं.] – ढकना, छिपाना, घेरना, ढक्कन, परदा, बचाव, ढाल, चहारदीवारी
- आवेश [पु.सं.] – प्रवेश, दबा लेना, हावी हो जाना, गुस्सा, जोश, घमंड, लगन
- आश्चर्य [पु.सं.] – अचरज, अचंभा, विस्मय, अद्‌भुत रस का स्थायी भाव
- आश्रय [पु.सं.] – आधार, विषय, शरण, ठिकाना, घर, सहायता
- आहत [वि.सं.] – घायल, आघात किया गया हो, जिस पर प्रहार, मारा हुआ, हटाया

उ

- उपवन [पु.सं.] – उद्यान, बगीचा
- उभय [वि.सं.] – दोनों, दो में से प्रत्येक
- उमग्यो [स्त्री.] – उमंग, उल्लास, मौज, जोश, उभार, उमड़ा, आकांक्षा
- उमड़ [स्त्री.] – बाढ़, धावा, घिराव
- उर [वि.सं.] – हृदय, मन

औ

- औपचारिक [वि.सं.] – गौण, उपचार संबंधी, दिखाऊ

क

- कटितट [पु.सं.] – कमर
- कतार [स्त्री.(अ.)] – पंक्ति, पाँत, क्रम, सिलसिला, समूह
- कपोत [पु.सं.] – कबूतर, पंडुक, चिड़िया
- कसर [स्त्री.(अ.)] – कमी, न्यूनता, घाटा, वैर, विकार
- काक [पु.सं.] – कौआ, एक द्वीप, एक माप, कान
- कुंज [पु.सं.] – लता आदि से घिरा या ढका हुआ स्थान, हाथी का दाँत, नीचे का जबड़ा, गुफा
- कुढ़न [स्त्री.] – खीझ, कुढ़ने का भाव, जलन, विवशता आदि की अनुभूति से होने वाला मनस्ताप
- कुल [पु.सं.]– वंश, घराना, गोत्र, समुदाय, श्रेणी, घर, आवास, जनपद, सब, सारा
- कोकिल [पु.सं.] – कोयल, अंगारा, एक तरह का साँप

क्ष

- क्षुद्र [वि.सं.] – नन्हा, छोटा, तुच्छ, खोटा, ओछा

ख

- खंजन [पु.सं.] –एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया, जो मैदानी प्रदेशों में केवल जाड़े में दिखाई देती है, खँडरिच, लँगड़ाते हुए चलना



- खग [पु.सं.] – पक्षी, सूर्य, ग्रह, वायु, बादल, चंद्रमा, बाण, देवता
- खता [पु.] – क्षत, घाव

ग

- गावन [स्त्री.] – गाने का ढंग
- गुजारा [पु.फा.] – निर्वाह, रास्ता, घाट, पुल या नाव से नदी पार करना

घ

- घंटिका [स्त्री.सं.] – छोटी घंटी, घुँघरू
- घनघोर [वि.सं.] – बहुत घना, जबरदस्त, गहरा, भयंकर
- घसियारा [पु.] – घास खोदने वाला, घास काटने वाला, घास बेचने वाला
- घुमड़ [अ.क्रि.] – बादलों का इधर-उधर से आकर जमा होना

च

- चकित [वि.सं.] – विस्मित, हैरान, शंकित, घबराया हुआ, भीत
- चहुँ [वि.] – चारों ओर, चार
- चातक [पु.सं.] – पपीहा, सारंग (कवि-संप्रदाय के अनुसार यह पक्षी केवल वर्षा, बल्कि स्वाती नक्षत्र में होने वाली वर्षा का जल पीता है, फलत: सदैव बादलों की ओर टकटकी लगाए रहता है।)
- चापलूस [वि.फा.] – चाटुकार, खुशामदी
- चित्त [पु.सं.] – अंत:करण, मन, अंतरिंद्रिय
- चेटी [स्त्री.सं.] – दासी, सेविका, सेवा-टहल करने वाली स्त्री

छ

- छटा [स्त्री.सं.] – शोभा, छवि, झलक, दीप्ति, परंपरा, बिजली
- छुटपन [पु.अ.] – छोटापन, बचपन

ज

- जलाशय [पु.सं.] – झील, तालाब, जलाधार, समुद्र
- जिय [पु.] – जी, मन, जान, चित्त, जीव



झ

- झर [पु.सं.] – झरना, सोता, जल प्रवाह की ध्वनि, ज्वाला, आँच, झुंड
- झलमल [पु.वि.] – झलमलाने का भाव, अस्थिर झलमलाता हुआ प्रकाश
- झुँझलाना [अ.क्रि.] – खीझना, चिढ़ना, बिगड़ना

ट

- ट्रैफिक [अं.] – यातायात

ठ

- ठाठ [पु.] – शान, सजधज, सितार का तार

ढ

- ढाल [स्त्री. सं.] – तलवार, भाले आदि के आघात को रोकने का लोहे या गैंडे के चमड़े का बना कछुवे की पीठ जैसा एक साधन, आगे की ओर क्रमशः नीची होती गई जमीन, उतार, ढंग, प्रकार

त

- तात [पु.सं.] – पिता, आदरणीय व्यक्ति
- ताप [पु.सं.] – गरमी, ज्वर, दु:ख, मानसिक व्यथा, आधि, ऊष्णता, गर्माहट के लिहाज से किसी वस्तु की दशा– वह दशा जो एक वस्तु से दूसरी वस्तु में ऊष्मा के प्रवाह की दिशा निर्धारित करती है।
- तालीम [स्त्री.(अ.)] – शिक्षा
- ताहि [सर्व.] – उसे, उसको

द

- दम [पु.फा.] – साँस, श्वास, पल, लहजा, क्षण, ताकत, जिंदगी, जोर
- दामिन [स्त्री.] – दामिनी, बिजली
- दुर्जन [पु.सं.] – दुष्ट मनुष्य, खल
- द्रोह [पु.सं.] – दूसरे का अनिष्ट चाहना, हिंसा, अपराध, वैर, विद्रोह

न

- नभ [पु.सं.] – आकाश, आसमान, मेघ, जल, पृथ्वी आदि पाँच तत्वों में से एक
- निर्भय [वि.सं.] – निडर, निरापद, जो किसी से भय न खाय



- नूपुर [पु.सं.] – घुँघरू, पैर का एक गहना
- नैना [पु.] – नेत्र, आँख

प

- पनघट [पु.] – पानी भरने का घाट
- परतीती – प्रतीति, ज्ञान, बोध, हर्ष, विश्वास
- पवन [पु.सं.] – हवा, छलनी, पानी
- पैनी [वि.स्त्री.] – जो भीतर की वस्तु को देख सके, जिसकी धार बहुत तेज हो
- प्रशिक्षण [पु.] – किसी व्यवसाय, कला, दौड़ आदि की व्यावहारिक रूप में लगातार कुछ समय तक दी जाने वाली शिक्षा, ट्रेनिंग

फ

- फरमाइश [स्त्री.फा.] – आज्ञा रूप में कुछ माँगना, आज्ञा, कोई चीज भेजने की आज्ञा, आर्डर
- फौरन [अ.(अ.)] – तुरंत, अभी, झटपट

ब

- बघारना [स.क्रि.] – छौंकना, तड़का देना, हींग, जीरा, प्याज आदि घी में कड़कड़ाकर दाल, तरकारी आदि में डालना
- बसन [पु.सं.] – वस्त्र, आवरण, ढकने की वस्तु, निवास
- बानी [स्त्री.] – वाणी, सरस्वती, सार्थक शब्द, वचन, जीभ, स्वर, प्रशंसा
- बिद्ध [वि.] – बिंधा हुआ, छेदा हुआ
- बिसारि [स.क्रि.] – बिसराना, भुला देना
- बेड़ी [स्त्री.] – बंधन, कैदियों, हाथी-घोड़ों आदि के पावों में पहनाई जाने वाली लोहे की जंजीर
- बेध [पु.] – छेद, मूँगे आदि में किया हुआ छेद, मोती
- बेवक्त [पु.(अ.)]– कुसमय, किसी समय, हमेशा

भ

- भक्तवछल– [वि.] – भक्त को प्यार करने वाला, भक्त के प्रति स्नेहयुक्त
- भक्षक [वि.सं.] – खाने वाला, भक्षण करने वाला
- भनक [स्त्री.] – धीमी, अस्पष्ट ध्वनि, उड़ती हुई खबर
- भावन [पु.सं.] – निमित्त, कारण, उत्पादन, रुचि-वर्धन, चिंतन, कल्पना, स्मरण
- भाव–भंगिमा [स्त्री.सं.] – मन के विकार को व्यक्त करने वाला अंग चालन या क्रिया



- भौंर [पु.] – भ्रमर, भौंरा, मधुप, जलावर्त
- भ्रमण [पु.सं.] – घूमना, फिरना, यात्रा, अस्थिरता, चक्कर

म

- मंत्र [पु.सं.] – सलाह, राय, गुप्त वार्ता, कान में कही जाने वाली बात, कार्य सिद्धि का गुर, [स्त्री.] – समक्ष, बुद्धि
- मनहर [वि.सं.] – मन को हरने-चुराने वाला, सुंदर
- मानधन [पु.सं.वि.] – मान का धनी, प्रतिष्ठा ही जिसका धन हो
- मुक्ति [स्त्री.सं.] – आजादी, छुटकारा, मोक्ष
- मूरति [स्त्री.सं.] – मूर्ति, शरीर, स्वरूप या शक्ल, प्रतिमा
- मेह [पु.] – वर्षा, बरसात, झड़ी (पड़ना, बरसना)

र

- रस [पु.सं.] – स्वाद, आनंद, प्रेम, द्रव, जल, मन में उत्पन होने वाला वह भाव, जो काव्य पाठ, अभिनय-दर्शन आदि से होता है
- रसाल [वि.सं.] – रसीला, मीठा, मधुर, सुंदर, शुद्ध
- राजति [अ.क्रि.] – राजना, रहना, शोभित होना, विराजना
- रिसेस [अं.] – अल्पावकाश, मध्यावकाश
- रीति [स्त्री.सं.] – नियम, झरना, टपकना, ढंग, प्रकार, तरीका, चलन
- रेवड़ [पु.] – भेड़ों का समूह, पशुओं का झुंड, गल्ला

ल

- लहरा [पु.] – लहर, मजा, आनंद, बाजों की संगत, जिसमें ताल–स्वरों की केवल लय होती हैं, बादलों का कुछ देर जोर से बरसना, एक घास
- लावन [स्त्री.] – लावनि, लावण्य, सुंदरता

व

- वर्ण [पु.सं.] – रंग, भेद, अक्षर, शब्द, स्वर
- वादक [पु.सं.] – बजाने वाला, बोलने वाला, शास्त्रार्थ करने वाला
- विकार [पु.सं.] – परिवर्तन, भावना, वासना, क्षोभ, रूप, धर्म आदि स्वाभाविक अवस्था का परिवर्तित होना
- विचरण [पु.सं.] – घूमना-फिरना, चलना, भ्रमण करना
- व्यापक [वि.सं.] – सर्वत्र फैला हुआ, दूर तक, जो किसी चीज के सारे विस्तार में हो



श

- शाखा [स्त्री.सं.] – पेड़ की डाल, दरवाजे की चौखट, बाहु, संप्रदाय
- शुक [पु.सं.] – सुग्गा, तोता, वस्त्र, पोशाक
- शैली [स्त्री.सं.] – रीति, किसी काम के करने का ढंग, तरीका, पद्धति
- श्याम [वि.सं.] – साँवला, काला, कृष्ण

स

- सदय [वि.सं.] – दयालु, रहम दिल
- समुझि [स्त्री.] – समझ, बुद्धि, प्रज्ञा, विचार
- साजिंदे [पु.फा.] – साज बजाने वाला [सारंगिया, तबलची]
- सिद्धि [स्त्री.सं.वि.] – सफलता, अभ्युदय, अनुमान, दक्षता, निपुणता, मोक्ष, लाभ
- सुखदाई [पु.सं.] – सुख देने वाला
- सुधा [स्त्री.सं.] – अमृत, रक्त, रस, दूध, जल, शहद, गंगा, बिजली, पृथ्वी
- सुधि [स्त्री.] – याद, होश, चेत, खबर
- सुर [पु.सं.] – स्वर, आवाज, देवता, सूर्य
- सुरभि [वि.सं.] – सुगंधित, खुशबूदार, प्रिय, मनोरम, प्रसिद्ध, बुद्धिमान, विद्वान
- सूरति [स्त्री.] – शक्ल, रूप, याद, स्मरण
- सोहता [वि.]– मोहक, सुंदर
- सोहावन [अ.क्रि.] – अच्छा लगना, भला मालूम, सुन्दर, शोभित होना
- स्वच्छंद [पु.सं.] – अपनी इच्छा, पसंद

ह

- हँसिया [पु.] – लोहे का धनुषाकार औजार जिससे फसल, तरकारी आदि काटते हैं
- हठी [वि.सं.] – हठ करने वाला, जिद्दी



पहेलियों के उत्तर

पाठ संख्या			
1.	माँ, कह एक कहानी	आज की पहेली	माँ, पक्षी, सुरभि
2.	तीन बुद्धिमान	आज की पहेली	गिरगिट, नीला डिब्बा
4.	पानी रे पानी	आज की पहेली	मेह, जलाशय, नीर, अंबु, सर, सरोवर, सलिल, ताल, तटिनी, बारिश, प्रवाहिनी, तरंगिणी
5.	नहीं होना बीमार	आज की पहेली	आलू का पराठा, मसाला डोसा, वड़ा पाव, ढोकला, पानी पूरी, मक्के की रोटी, बाटी, रसगुल्ला

